ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला--हिन्दी ग्रन्थाङ्क--२१

शेर-ओ-सुख़न

[मौजूदा दौरके गज़लगो शायरे-आज़म]

भाग तीसरा

पुरातन शायरीका कायाकल्प और लोकोपयोगी
भावोंका समावेश, पवित्र प्रेमकी आराधना,
नारीका सम्मान और १९०१ से
१९५३ तककी घटनाओंका
गज़लपर प्रभाव

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

बरहमन (पुजारी)
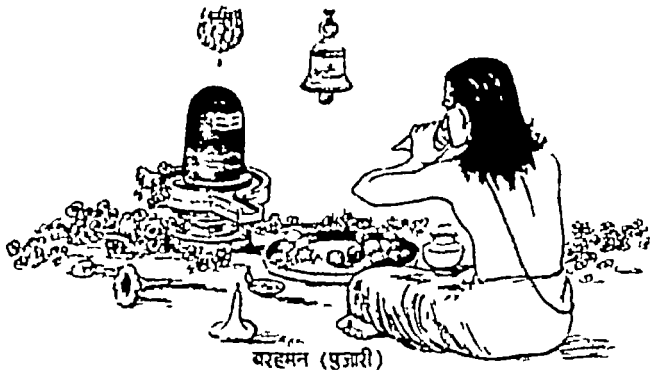
बरहमन नाल-ए-नाकूस मस्जिदतक भी पहुँचा दे ।
बुरा क्या है मुअज़्ज़न भी अगर बेदार हो जाये ।।

—हफीज़ जालन्धरी

साहू-जैन-कुल-दिवाकर

आयुष्मान् प्राणप्रिय अशोककुमार

और

सौभाग्यवती बहूरानी इन्दु-श्री को

अनेक शुभ भावनाओ एवं

शुभाशीर्वादोंके साथ

सस्नेह भेट

•

गोयलीय

विषय-सूची

ग़ज़ल-गो शायरे-आज़म

वर्त्तमान युगीन

देहलवी रंगके सर्वश्रेष्ठ शायर

१—शाद अज़ीमाबादी [ख्वाजा मीर 'दर्द' की शिष्य परम्परामे]

२—अमरनाथ 'साहिर'

३—दत्तात्रिय कैफी

४—आज़ाद अन्सारी ['गालिब' की शिष्य परम्परामे]

५—हसरत मोहानी ['मोमिन' की शिष्य परम्परामें]

६—फानी बदायूनी

७—वहशत कलकतवी

८—यगाना चंगेज़ी ['शाद' अज़ीमाबादीके शिष्य]

९—अमजद हैदराबादी

१०—आसी गाज़ीपुरी ['नासिख' की शिष्य परम्परामे]

११—असग़र गोण्डवी

१२—जिगर मुरादाबादी ['असगर' गोण्डवीके शिष्य]

१३—अली अख़्तर 'अख़्तर'

१४—रज़्म रुदोलवी

ख़ान वहादुर नवाब सैयद अलीमुहम्मद 'शाद' १८४६ ई०में उत्पन्न हुए और १९२७ ई०में समाधि पाई। नियाज फतेहपुरीके शब्दोमें—"शाद ब-लिहाज़ तगज्जुल बडे मर्तबेके शायर थे। उनके यहाँ मीर-ओ-दर्दका गुदाज़, मोमिनकी नुक्तासजी, गालिबकी बुलन्द परवाज़ी और अमीर-ओ-दागकी सलासत सब एक ही वक्तमें ऐसी मिली-जुली नज़र आती है कि अब ज़माना मुश्किलसे ही कोई दूसरी नज़ीर पेश कर सकेगा।"[1]

'शाद' अज़ीमावाद (पटना सिटी)के रहनेवाले थे। वे ख़्वाजा मीर 'दर्द'की शिष्यपरम्परामे हुए है। अत आपके कलाममें भी वही असर नज़र आता है। कही-कही तत्कालीन लखनवी रगकी भी झलक मारती है। आप मीर 'अनीस'से भी काफी प्रभावित नज़र आते हैं।

शाद देहलवी-लखनऊ ज़बानके कायल नही थे। यही कारण है कि उनके कलाममे यत्र-तत्र मुहावरो और शब्दोका प्रयोग उक्त स्थानोकी परम्परासे भिन्न हुआ है।

'शाद' ख़्वाजा 'दर्द' स्कूलके स्नातक थे। इसीलिए हमने आपको

---

[1]इन्तकादियात, भाग २, पृ० १५६।

मजलिसे-देहलीमे उच्चासन दिया है। आपका कलाम भी ईश्वरीय-प्रेम, आध्यात्मिकता और दार्शनिकतासे ओत-प्रोत है। आपका रगे-शायरी ख्वाजा 'आतिश'[1]से बहुत कुछ समानता रखता है।

'आतिश' और 'शाद' दोनो ही अपने-अपने युगमे बहुत बुलन्द मर्तबेके शायर हुए है। दोनोके विचार, भाव और अन्दाजे-बयान मिलते-जुलते है। दोनोकी अक्सर गजले हमतरही ऐसी है कि अगर उनमेंसे उपनाम निकाल दिये जाये तो कौन गजल किसकी है, निश्चयपूर्वक कहना आसान नही। जाहिरामे दोनो लखनवी, किन्तु भावो और विचारोकी दृष्टिसे अतरगमे देहलवी है। दोनो ही सूफियाना विचारके है।

इतनी समानता होते हुए भी दोनोका रग भिन्न-भिन्न है। 'आतिश'के यहाँ व्यग और तीखापन इस गजबका है कि कुछ न पूछिये। उनके कलाममे गर्मी, और अन्दाजेबयानमें तडप इस बलाकी है कि कोई भी शायर उनका हमसर नजर नही आता। 'आतिश'के यहाँ दुख-दर्द, पीडा-व्यथामें भी मुसकान भरी होती है। उनके गममे भी एक लहक और चहक होती है—

कफसमें भी है वही चहचहा गुलिस्ताका

शादके यहाँ रजो-गम, दर्दो-अलम, व्यथापूर्ण है। 'आतिश' इस विषयमें 'गालिब'के अधिक समीप हैं और 'शाद' 'मीर'के नजदीक है। 'आतिश' रजो-गममें बिलखते नही, यहाँ तक कि वे हृदयकी पीडाको व्यक्त करना भी अपनी शानके खिलाफ समझते हैं—

जौरो-जफायेयारसे[2] रंजो-महन[3] न हो।
दिलपर हुजूमेग़म हो, जबींपर शिकन न हो॥

---

[1]'आतिश' का परिचय एव कलाम 'शेरो सुखन' प्रथम भागमें दिया जा चुका है। [2]प्रेयसीके अत्याचार करनेपर, [3]दुखी और व्यथित न हो।

'शाद' व्यथा पीडाके आँसुओको पीनेके बजाय उन्हे, प्र
आवश्यक समझते है—

ख़मोशीसे मुसीबत और भी सगीन होती है।
तड़प ऐ दिल तडपनेसे ज़रा तसकीन होती है ॥

यूँ ही रातोको तडपेंगे, यूँ ही जाँ अपनी खोयेंगे।
तेरी मर्ज़ी नहीं ऐ दर्देदिल! अच्छा! न सोयेंगे ॥

मगर वे अन्य शायरोकी तरह सरे आम हाय-हाय करनेके पक्षपाती नही—

तडपना है तो जाओ जाके तड़पो 'शाद' ख़िल्वतमें।
बहुत दिनपर हम इतनी बात गुस्ताख़ाना कहते है ॥

इन दोनोके कलाममें उल्लेखनीय विशेष अन्तर यह है कि 'आतिश'के यहाँ पतित भाव, हकीर विचार और बाज़ारी इश्क अधिकाश रूपमें पाया जाता है। लेकिन 'शाद'के कलाममे इतनी सजीदगी, बडप्पन, और सुथरापन पाया जाता है कि वे उर्दू-शायरोमे सर्वश्रेष्ठ नजर आते है।

उर्दूके सर्वश्रेष्ठ शायर 'मीर' भी अपना दामन इब्तज़ाल (कमीने-ज़लील विचारो)से न बचाये रख सके। बकौल किसीके "उनके दीवानमें लौंडे भरे पडे है" 'गालिब' भी धौल-धप्पेपर उतारू हो जाते है—

धौल-धप्पा उस सरापा नाज़का शेवा नहीं।
हम ही कर बैठे थे 'ग़ालिब' पेश दस्ती एक दिन ॥

और 'मोमिन'का तो माशूक ही हरजाई नही, स्वय भी हरजाई थे। हमेशा मृगनयनियो (गज़ालचश्मो)को फाँसते रहे—

आये ग़ज़ालचश्म सदा मेरे दाममें।
सैयाद ही रहा मैं, गिरफ़्तार कम हुआ॥

तात्पर्य यह कि प्राचीन और अर्वाचीन प्राय सभी शायरोके कलाममे यह दोष पाये जाते है। लेकिन 'शाद'का कलाम इन दोषोंसे मुक्त है। उनके यहाँ 'बोसा' (चुम्बन) जैसा बदनाम और हक़ीर शब्द भी इतनी बुलन्दीसे नज़्म हुआ है कि अन्यत्र मिसाल नही मिलती।

बोसये-संगे-आस्ताँ[1] मिल न सका हज़ार हैफ़।
आगे कदम न बढ सका हिम्मते-सरफ़राज़का[2]॥

उक्त शेरकी पवित्रता और मर्तबेको वही अनुभव कर सकता है, जिसने कभी संगे-आस्ताँके बोसा लेनेका प्रयत्न किया हो, परन्तु किसी कारण सफलता न मिली हो। राष्ट्रपिता बापूके शहीद किये जानेपर उनकी चिताकी राख लेनेके लिए लाखो नर-नारी लालायित थे। एक-दूसरेको धकेलकर बापूकी राखको मस्तकसे लगानेको कई लाख नर-नारी बढ रहे थे, परन्तु कितनोको सफलता मिली? जो भी राख न पा सके, अपने भाग्यको कोस रहे थे। जब किसीकी ऐसी स्थिति हो, तभी 'शाद'के उक्त शेरकी महत्ता प्रकट हो सकती है। आस्ताने-यार या शहीदो-की समाधियोको बोसा देना 'शाद'की अछूती और उच्च भावना है—

शहीदाने-वफ़ाकी ख़ाक, क्या अक्सीरसे कम है?
न हाथ आये क़दम, बोसा तो ले जाकर मज़ारोका॥

यह बात 'ग़ालिब' और 'आतिश'को कहाँ नसीब? 'ग़ालिब' तो स्वय ही अपने इस हक़ीर ख़यालसे भयभीत नज़र आते है—

---

[1]माशूक़की चौखटके पत्थरका चुम्बन; [2]अभिमानीके साहसका।

ले तो लूँ सोतेमें उसके पाँवका बोसा मगर—
ऐसी बातोंसे वह काफिर बदगुमाँ हो जायगा ।।

यारके पाँवका बोसा लेना या जहाँ उसने पाँव रखे हो, उस आस्ताँका बोसा लेना ज़ाहिरामे यकसाँ नज़र आते है। मगर 'शाद'के शेरमें श्रद्धा, भक्ति और पवित्र-प्रेमकी झलक है, तो गालिबके यहाँ वासनाकी गन्ध। और 'आतिश' तो अपने इस शेरके प्रतिबिम्बमे सरीहन ऐय्याश मालूम होते है —

बोसेबाज़ीसे मेरी होती है ईज़ा उनको।
मुंह छुपाते है जो होते है मुहासे पैदा ।।

और एक 'शाद' है कि उनकी अभिलाषा अधिक-से-अधिक इतनी बढती है कि उनकी खाक यारके परिधानका बोसा ले सके तो अपनेको कृतकृत्य समझे—

बोसा लेनेका मेरी ख़ाकको भी अरमाँ—ताब उठनेकी कहाँ ?
जामेजेबीका भला ! ऐ सनमेतग क़बा—कुछ तो दामनको झुका ।।

यही पवित्र और उच्च इश्ककी झाँकियाँ 'शाद'के कलाममें दृष्टिगोचर होती है। स्वय भी फर्माते है—

मेरा दीवाँ तो शोरब है जहाने-पाकबाज़ीका।
पढ़े कलमा ज़बाने-फारिस इस बाँगे-हिजाज़ीका ।।

गज़ल इतनी नाज़ुक और कोमल कला है कि तनिक-सी चूकसे वह आकाशसे पृथ्वीपर गिर पडती है। शब्दोके हेर-फेर और भावोके उतार-चढावसे इसमे पवित्र-से-पवित्र और पतित-से-पतित विचारोका प्रतिबिम्ब झलकता है। 'आतिश' जैसा बुलन्द मर्तबेका शायर जब ऐसे घटियल शेर कह सकता है—

शबे-विसालमें खोले क़बाये-यारके बन्द।
कमरसे खींचके पटकेको हमने दे मारा॥

हाथ मलता हूँ जो मैं देखके सीनेका उभार।
कहते हैं "तोड़िये जिनको यह वोह नारंज नहीं॥"

जब 'आतिश' जैसे दरवेशका यह आलम हो, तब 'दाग'का तो जिक्र ही क्या—

यह लुत्फ है कि दुपट्टा उड़ा रही है हवा।
छुपा रहे हैं जो सीना कमर नहीं छुपती[1]॥

ऐसे ही दूषित और विषाक्त भावोंके कारण ग़ज़ल बदनाम हो गई। इसकी अश्लीलतासे भले आदमी दामन बचाकर निकलने लगे। इसमें दुराचार और कामुकताके ऐसे घिनौने कीड़े बिलबिलाने लगे कि लोग इसकी परछाईंसे भी दूर भागने लगे। इस छुतहा रोगसे बचानेके लिए 'हाली' और 'आज़ाद'ने भरसक प्रयत्न किये। लोगोंका अनुमान था कि गज़ल अब जीवित नही रहेगी, परन्तु उसकी खुशकिस्मती देखिये कि कुछ ऐसे लोग पैदा हो गये, जिन्होंने गज़लको पुनर्जीवन ही प्रदान नही किया, अपितु उसे अमर कर दिया। उन्ही सपूतोंमें एक 'शाद' अज़ीमाबादी हैं।

'शाद'का इश्क बाज़ारी इश्क न होकर पवित्र और उच्च है। जो शमअ सरेबाज़ार जलती है, ऐसी बेहयापर जल मरनेके 'शाद' कायल नही—

जो शमअ हुआ करती है रोशन सरे-बाज़ार।
उस शमअपै गिरता नहीं परवाना हमारा॥

'शाद' इश्कको जीका रोग नही समझते, बल्कि उनका विश्वास है कि इश्कसे इन्सानमें इन्सानियत आती है।

---

[1]उक्त अंशके लिखनेमें अप्रेल १९५१के 'निगार'में प्रकाशित सैयद शाह अताउलरहमानके लेखसे हमे पर्याप्त सहायता मिली है।—गोयलीय

नहीं रहते रिया[1] ओ-कबह्[2] फिर भूलेसे भी दिलमें ।
मुहब्बत यारकी इन्सां बना देती है इन्सांको ॥

'शाद' भौंरे या तितलीके इश्कको इश्क नही समझते । वे तो जिसके हो गये, जीवनभर उसे निभाना ही सच्ची आशिकी समझते हैं । मानवी प्रेमके साथ-साथ कोई ईश्वरीय प्रेमका भी दम भरे तो वह उसे कुफ्र समझते हैं—

मशरबेइश्कमें[3] दिला[4] ! कुफ़्र है यारसे रिया[5] ।
दिलको है गर बुतोसे इश्क, ज़िक्रे-ख़ुदाकी वजह क्या ?

'शाद' इश्कसे तग आकर मरना नही चाहते, बल्कि वह तो उम्रे-दराज़ चाहते हैं —

मुझ-सा फक़ीर आपसे राज़ो-नियाज़[6] हो ।
या रब ! हयाते-इश्क़े-मुहब्बत दराज़[7] हो ॥

और वे अपने महबूबको इधर-उधर खोजना नादानी समझते हैं । उनका विश्वास है कि उनका प्रियतम सर्वत्र व्याप्त है—

ग़ुबार आईनये-दिलका साफ हो तो फिर ।
उन्हींकी शक्ल नुमायां रहे जिधर देखो ॥

और जब ध्यानमें प्रियतम आ गया, तब वह ध्यान कैसे तोडा जाय ?

है जिसमें ध्यान काबये-अबरू-ए-यारका[8] ।
ऐसी नमाज़ जल्द इलाही अदा न हो ॥

---

[1]ज़ाहिरदारी, दिखावटीपन, [2]बुराई, [3]प्रेमधर्ममें, [4]ऐ दिल, [5]दिखावटी प्रेम, [6]अन्तरग वार्तालापमें सम्मिलित, [7]लम्बा हो, [8]यारकी भवे रूपी काबेकी महराब ।

लेके खुद पीरेमुग़ाँ हाथमें मीना आया।
मयकशो ! शर्म कि इसपर भी न पीना आया ॥

मुग़ाजचे[1] हैं मुतहय्यर[2] मुतबस्सुम साक़ी।
पीनेवाले तुझे पीनेका न अन्दाज़ आया ॥

इसी उम्मीदमें बाँधे हुए हैं टकटकी मैकश !
कफ़ेनाज़ुकपै साक़ी रखके एक दिन जाम आयेगा ॥

सागर हमारा, मीना हमारा।
जन्नत हमारी, तौबा हमारा ॥
दाताके दरसे लेकर फिरेंगे।
भरदेगा इक दिन कासा हमारा ॥
मयपर किसीको, ख़ुमपर किसीको।
साकीपै अपने, दावा हमारा ॥

बचाके हाथ अलग-से-अलग सुबू लेते।
यह क्या मजाल कि साकीका हाथ छू लेते ॥

साक़ीकी चश्मेमस्तपै, मुश्किल नहीं निगाह।
मुश्किल सँभालना है दिले-बेक़रारका ॥

कहाँसे लाऊँ सब्रे-हज़रतेअयूब[3] ऐ साक़ी !
ख़ुम आयेगा, सुराही आयगी, तब जाम आयेगा ॥

न दे इलज़ाम बदमस्तीका इक उफ़ताद थी साकी !
मेरा गिरना, भरे सागरका चकनाचूर हो जाना ॥

ग़ज़ब निगाहने साक़ीकी बन्दोबस्त किया।
शराब बादको दी पहले सबको मस्त किया ॥

[1] पिलानेवाले, [2] हैरान, [3] एक प्रसिद्ध सन्तोषी पैगम्बर।

देके तहीसुबू[1] मुझे सबका हौसला दिया।
जिसको तलब थी साकिया! उससे कहीं सिवा दिया॥

देखा किये वोह मस्त निगाहोसे बार-बार।
जब तक शराब आये, कई दौर हो गये॥

बुरा इस बज़्ममें था या भला मैं।
ख़ुदा हाफ़िज़ है, ले साक़ी! चला मैं॥

वग़ैर आत्मलीन हुए जीवनभर ईश्वर-ईश्वर पुकारनेसे क्या होता है? जहाँ उसमें अपनेको खोया नही कि एक सकेतपर फरिश्ते तो क्या ब्रह्माण्ड उलट सकता है। और जब मनुष्य आत्मलीन हो जाता है, तब उसके नेत्रोके आगेसे तू, मै, पर, का परदा हट जाता है।

इस्लामो-कुफ़्र, कुछ नहीं आता ख़यालमें।
मुद्दतसे मुब्तिला हूँ, मैं आप अपने हालमें॥

'उर्दू'को लेकर उर्दू-शायरोने कितनी गन्द उछाली है? कोई उसके मरनेकी दुआ माँगता है, कोई उसे अन्धा देखना चाहता है, कोई उसे हज़ारो गालियाँ देकर दिलकी भडास निकालता है। गरज़ उसे हर तरह बदनाम और बरबाद करनेके उपाय निरन्तर सोचे जाते हैं। 'शाद' उर्दूके बारेमें माशूकसे केवल इतना कहते हैं—

दोनोमें तू ही फ़र्क़कर लायक़े-महर[2] कौन है?
ग़ैर तेरा गिला करें, नाम न लें अदबसे हम॥

'कस्तूरबा'का निधन बन्दीगृहमें हुआ, उनकी समाधि भी वही बनाई गई! जीतेजी तो बन्दी रही ही, मृत्युके बाद भी शासकोने बन्दी बनाकर रखना चाहा। शादका यह शेर उक्त घटनापर कितना मौज़ूं होता है—

---

[1]खाली सुरापात्र, [2]कृपा योग्य।

कयामतका सितम है यह भी दुनियामें कि मरनेपर।
असीरोंकी[१] बनाई क़ब्र भी सैयादने घरमें॥

ये मजहवी दीवाने धार्मिक उन्मादमें कैसे-कैसे अनर्थ कर बैठते हैं? बरसोंकी राहोरस्म और चोली-दामनके साथको एक क्षणमें नष्ट कर देते है, इसका सबब 'शाद' साहब यह बतलाते हैं—

जबानें सख़्तबयानीपै वाइजोंकी खुलीं।
मुरव्वतोंको लपेट आये जानमाजोंमें[२]॥

हम देशसे निष्कासित कितना ही कष्ट क्यों न उठा लें, परन्तु हमारे देशपर आँच न आये—

हम बेनवा[३] बलासे कफसमें असीर[४] हैं।
या रब! मगर चमनमें ख़िज़ाँका[५] गुज़र न हो॥

जो स्वयं आप नहीं उठता, उसे कोई भी सहारा नहीं देता। नेपोलियनने एक बार अपने सैनिकोंको सम्बोधित करते हुए कहा था—"तुम ईश्वरपर भरोसा करो या न करो यह तुम्हारी इच्छापर निर्भर है, परन्तु मैं इतना जताये देता हूँ कि तुम्हारी बारूद गीली है तो उसे सुखाने ईश्वर नहीं आयेगा; वह तुम्हींको सुखानी होगी।" इसी भावके द्योतक 'शाद'के चार शेर सुनिये—

यह बज़्मे-मै[६] है याँ कोताह दस्तीमें[७] है महरूमी[८]।
जो बढ़कर ख़ुद उठा ले हाथमें मीना[९] उसीका है॥

---

[१]बन्दियोंकी, [२]जिस चटाईपर नमाज़ पढ़ी जाती है; [३]अनबोल, बेज़बान, [४]बन्दी; [५]पतझड़का, [६]मधुशाला; [७]हाथ न उठानेमें; [८]वञ्चित रहना, [९]मद्य-पात्र।

समझता है इस दौरमें कौन किसको ?
करें 'रिन्द' ख़ुद अहतराम[1] अपना-अपना ।।

क्या गलत जोम है! बाद अपने किसे ग़म अपना ?
हाथ क़ाबूमें है, करलें अभी मातम अपना ।।

'शाद' आख़िर है शब और पाँवमें ताक़त है अभी ।
इस सरासे है यही वक़्त निकल जानेका ।।

चन्द नैतिक शेर—

हसरत आमेज़[2] सदा आती है यूँ क़ब्रोसे--
"आज आता जो मेरे काम, न वोह काम किया" ।।

अगर किसीकी बुराई भी दिलमें आई 'शाद' !
हमें तो अपनी ही नीयतसे ख़ुद हिजाब आया ।।

किसीके हम न काम आये, न कोई अपने काम आया ।
तअज्जुब है कि तो भी ज़ुमरये-इन्सांमें नाम आया ।।

यह मुमकिन है कि लिक्खी हो, फलमने फतह आख़िरमें ।
जो है अहबाबे-हिम्मत ग़म नहीं करते शिकस्तोमें ।।

बशरके दिलमें न पडता जो आरज़ूका दाग़ ।
ख़ुदा गवाह कि अनमोल यह नगीं होता ।।

भलाई इसलिए चाही कि हो भले मशहूर ।
ग़रज़ कि अपने ही मतलबके आश्ना थे हम ।।

बार जिन कलियोंपै थीं परछाइयाँ ।
ऐ ख़िज़ाँ ! पहले वही मुरझाइयाँ ।।

---

[1]आदर-सत्कार, [2]निराशाभरी आवाज़ ।

अभी नौख़ेज है रंगत ज़मानेकी नहीं देखी।
चिकसती है जो कलियाँ, वाज़ ग़ुंचे मुसकराते है ॥

'शाद' अपने विरोधियो और आलोचकोंसे चिढते नही। न तुर्की-ब-तुर्की जवाब देते है। बल्कि यह कहकर चुप हो जाते है—

आख़िर तो समझ लेगा कोई नुक्ता रस इक दिन।
हासिदसे कहो 'शाद'को बदनाम किये जा ॥

१९३८मे प्रकाशित 'शाद'का दीवान 'मैखानये-इलहाम' हमारे समक्ष है। अनुमानत ४,००० अशआर होगे। उनमेंसे चुनकर कुछ अशआर पेशेनज़र है—

बारे-सुबू[1] वही उठाये जिसपै हो फज़्ले-मैफरोश[2]।
ज़ाहिदेख़ुश्क ! यह भी क्या बोझ है जानमाज़का[3] ?
जलवये-हुस्नकी तरफ देख तो कुछ पता चले।
जाने दे, वलवला न पूछ आशिक़ेपाकबाज़का ॥

कहाँ है उसका कूचा, कौन है वह ? क्या ख़बर कासिद !
पर इतना जानते है, नाम है आशिकनवाज़ उसका ॥
न छोड़े जुस्तजूये-यार ख़िज़्रे-शौकसे कह दो।
किसी दिन ख़ुद लगा लेगी, पता उम्रेदराज़ उसका ॥

अबस[4] शिकवा है मय-सी चीज़का वाइज़ है क्यो दुश्मन।
बसीरत[5] जब नहीं, बेशक बजा है अहतराज़ उसका ॥
अब इसका ज़िक्र क्या क़ासिदपै जो गुज़री गुज़रने दो।
न कहना इस ख़बरको 'शाद'से दिल है गुदाज़[6] उसका ॥

---

[1]मद्यके घडेका बोझ, [2]शराब-विक्रेताकी कृपा; [3]नमाज़ पढने-की चटाईका, [4]व्यर्थ, [5]दृष्टि, बुद्धि, [6]द्रवित।

किसीको आबोहवा मुआफिक़ हुई न अफसोस इस चमनकी।
हमेश थे नालाकश अनादिल, गुलोंने ता उम्र ख़ून थूका॥
पुकारकर वहशियोंसे कह दो "ख़िज़ाँका भी दौर है ग़नीमत।
क़बाके दामनको टाँक तो लें, अगर न मौक़ा मिले रफ़ूका॥"

गुलोंपर क्या है, काँटों तकका मैं दिलसे दुआ-गो हूँ।
ख़ुदावन्दा न टूटे दिल किसी दुश्मन-से-दुश्मनका॥

मौजेफ़ना[1] मिटा न दे नामोनिशाँ वजूदका[2]।
देख हुबाबकी[3] तरह शौक़ न कर नमूदका[4]॥
ऐ शबेवस्ल! जा तो जा, ऐ शबेहिज्र! आ तो आ।
दिलने ख़याल उठा दिया, अपने ज़ियाँ-ओ-सूदका[5]॥

बोरिया था, कुछ शबीना-मै[6] थी, या टूटे सुबू।
और क्या इसके सिवा, मस्तोंके वीरानेमें था॥

बड़ा अहसाँ शबेग़मने किया ऐ जागनेवाले!
यही तेरी खुली आँखें मिटा छोड़ेंगी शक तेरा॥
बहुत तूने जब अपने पाँव फैलाये तो क्या चारा?
अदब करती रही ऐ अश्क! मुद्दत तक पलक तेरा॥

गलीमें यारकी हो क़ब्र, या ख़राबेमें।
हमें तो हश्रके दिन तक कहींपै सो रहना॥

अगर मरते हुए लबपर न तेरा नाम आयेगा।
तो मैं मरनेसे दरगुज़रा, मेरे किस काम आयेगा॥
शबेहिजराँकी सख़्ती हो तो हो लेकिन यह क्या कम है?
कि लबपर रातभर रह-रहके तेरा नाम आयेगा॥

---

[1]मृत्यु-लहर, [2]अस्तित्वका, [3]पानीके बुलबुलेकी, [4]नामका [5]हानि-लाभका, [6]रातकी बची शराब।

यही कहकर अजलको क़र्ज़ख़्वाहोंकी तरह टाला ।
कि "लेकर आज क़ासिद यारका पैग़ाम आयेगा ।।"
गलीमें यारकी ऐ 'शाद' ! सब मुश्ताक़[1] बैठे हैं ।
ख़ुदा जाने वहाँसे हुक्म किसके नाम आयेगा ?

जब अहले-होश कहते हैं अफ़साना आपका ।
सुनता है और हँसता है दीवाना आपका ।।

सरापासोज़[2] है ऐ दिल ! सरापा नूर हो जाना ।
अगर जलना तो जलकर, जलवागाहे-तूर हो जाना ।।

हमारे ज़ख़्मे-दिलने दिल्लगी अच्छी निकाली है ।
छुपायेसे तो छुप जाना मगर नासूर हो जाना ।।
ख़यालेवस्लको अब आरज़ू भूला भुलाती है ।
क़रीब आना दिलेमायूसके फिर दूर हो जाना ।।
शबेवस्ल अपनी आँखोंने अजब अन्धेर देखा है ।
नक़ाब उनका उलटना रातका काफ़ूर हो जाना ।।

वोह ज़िबह करके यह कहते हैं मेरे लाशेसे—
"तड़प रहा है कि मुँह देखता है तू मेरा ?"
कराहनेमें मुझे उज्र क्या मगर ऐ दर्द !
गला दबाती है रह-रहके आबरू मेरा ।।
कहाँ किसीमें यह क़ुदरत सिवाय तेग़ेनिगाह ।
कि हो नियाममें और काट ले गुलू मेरा ।।

इसे कहते हैं ख़ूबी हम तो इस ख़ूबीके क़ायल हैं ।
हुआ जब ज़िक्र यकताईका, नाम आया वहीं तेरा ।।

---

[1]अभिलाषी, [2]पूर्णरूपेण जलना ।

बहुत सरगोशियाँ[1] करने लगे रस्तेमें अब रहबर[2] !
बहुत चर्चा है बाजारोंमें ऐ ख़िलवतनशीं[3] ! तेरा ।।

दिलकी यकसूईने बेपरदा दिखाया था तुझे ।
बीचमें मुफ्त कदम आ गया बीनाईका[4] ।।

मुंहपै आशिकके मुहब्बतकी शिकायत, नासेह !
बात करनेका भी नादाँ न क़रीना आया ।।
आ गया था जो खराबातमें[5] पी लेनी थी ।
तुझको सुहबतका भी जाहिद न क़रीना आया ।।

तेरी गलीमें रक़ीब आयें और मैं देखूं ।
कसम है तेरे कदमकी तेरा ख़याल किया ।।
तलबके पहले ही जब हुक्म दे चुका था तू ।
तेरे फ़क़ीरने क्या सोचकर सवाल किया ।।

चाक करनेका है इलजाम मेरे सर नाहक़ ।
हाथ उनका है, मैं उनका हूँ, गरीबाँ उनका ।।

अब अश्कमें तेरे आता नहीं लहू ऐ चश्म !
तुझीपै क्या है ? जमानेका ख़ूं सफ़ेद हुआ ।।

समझ-समझके बढ़ा दस्ते-आरज़ू ऐ मस्त !
न मयकदा न सबूही न ख़ुम न जाम तेरा ।।

न मरनेवालोंकी आँखें न दिल है काबूमें ।
यह कौन वक्त था आया है कब पयाम तेरा ?

---

[1]कानाफूंसी, [2]पथ-प्रदर्शक, [3]एकान्तमे रहनेवाले; [4]दृष्टिका, [5]मधुशालामें ।

यह अख़्तियार तुझे है कि दे न दे साक़ी !
गिला समझते हैं हम बादाकश हराम तेरा ॥

जहाँ चाहे लगे, जिस दिलको चाहे चूर कर डाले ।
ज़बाँसे फेंक मारा, बात थी नासेह कि ढेला था ॥

ज़बाँपे आह जो आई तो हँसके टाल दिया ।
किसीके इश्क़का अफ़साना मैंने राज़ किया ॥

हर निवाला अब तो उसका तल्ख़ है ।
उम्र नेमत थी मगर जी भर गया ॥
जिस गलीमें था वहाँ थी क्या कमी ?
ऐ गदा[1] ! क्यों माँगने दर-दर गया ?

ताबूतपै[2] मेरे आये जो वोह, मिट्टीमें मिलाया यूँ कहकर—
"फैला दिये दस्तो-पा[3] तूने इतने ही में बस जी छूट गया ॥"

उन्हे जो मज़ूर देखना है तो आके ऐसेमें देख जायें !
लिया सहारा मरीज़ेग़मने, चराग़ कुछ बुझके झिलमिलाया ॥

निकहतेगुल[4] बहुत इतराई हुई फिरती है ।
वोह कहीं खोल भी दें तुर्रयेगेसू[5] अपना ॥
निकहते-खुल्देबरीं[6] फैल गई कोसोतक ।
वोह नहाकर जो सुखाने लगे गेसू[7] अपना ॥
लिल्लाह हमद ! कदूरत[8] नहीं रहने पाती ।
मुँह धुला देता है हर सुबहको आँसू अपना ॥

---

[1]भिक्षुक, [2]अर्थीपै [3]हाथ-पाँव, [4]फूलकी गन्ध, [5]चौटी, [6]जन्नत-जैसी सुगन्ध, [7]बाल, [8]द्वेष-भावना ।

ग़ममें परवानये-मरहूमके[1] थमते नहीं अश्क ।
शमअ ! ऐ शमअ ! ज़रा देख तो मुँह तू अपना ॥

सुबू अपना-अपना है जाम अपना-अपना ।
किये जाओ मयख़्वार काम अपना-अपना ॥
न फिर हम न अफसानागो ऐ शबेग़म[2] !
सहरतक[3] है किस्सा तमाम अपना-अपना ॥
जिनांमें[4] है ज़ाहिद, तेरे दरपै हम हैं ।
महल अपना-अपना, मुकाम अपना-अपना ॥
हुबाबो[5] ! हम अपनी कहे या तुम्हारी ।
बस एक दम-के-दम है कयाम अपना-अपना ॥
कहाँ निकहतेगुल,[6] कहाँ बूये-गेसू[7] !
दमाग़ अपना-अपना मशाम[8] अपना-अपना ॥
ख़राबातमें मयकशो ! आके चुन लो ।
नबी अपना-अपना इमाम अपना-अपना ॥

हम वह मैकश हैं कि साग़रकी तरह ऐ साक़ी !
सर हमेशा तेरी ख़िदमतमें रहा ख़म अपना ॥
ऐ असीराने क़फस ! कुछ तो शगुन अच्छा है ।
हाथ जाता है ग़रीबाँको जो पैहम[9] अपना ॥

मेरा सब हाल कह लेना तो क़ासिद ! यह भी कह देना—
"ख़बर कर दी तुम्हे, है अख़्तयार आने-न-आनेका ॥"

हश्रमें जो है, वोह लेता है कदम झुक-झुककर ।
आज देखे कोई रुत्बा तेरे दीवानेका ॥

---

[1]मृतक पतंगेके, [2]दुखकी रात्रि, [3]प्रात कालतक, [4]जन्नतमें; [5]पानीके बुलबुलो, [6]फूलकी सुगन्ध, [7]बालोकी ख़ुश्बू, [8]सूंघनेकी सामर्थ्य, मस्तक, [9]बार-बार ।

चला जाऊँगा मैं जो महफ़िलसे तेरी।
कोई और मेरी जगह आ रहेगा॥
यह दुनिया है ऐ 'ज़ाद'! नाहक़ न उलझो।
हर इक कुछ तो अपनी-सी आख़िर कहेगा॥

जब किसीने हाल पूछा रो दिया!
चश्मेतर! तूने तो मुझको खो दिया॥
दाग़ हो या सोज़ हो, या दर्देग़म।
ले लिये ख़ुश होके जिसने जो दिया॥

दैरोहरममें[1] गर नहीं, ख़ैर न हो नहीं सही।
मेरे ही पास जब नहीं, आप कहीं हुए तो क्या?
हम थे मिटे हुए युं ही, रोज़े-अज़लसे[2] ऐ अजल[3]!
रूयेज़मींपै हैं तो क्या, ज़ेरे-ज़मीं हुए तो क्या?
जोशे-शबाबमें दिला! कुफ़्रमें भी था इक मज़ा।
मिट गई जीकी जब उमग, तालिबे-दीं हुए तो क्या?

हमसे सहरागर्दको[4] छोड ऐ ग़ुबार[5]!
तू कहाँ तक पीछे-पीछे आयगा?
खो गये हैं दोनो जानिबके सिरे।
कौन दिलकी गुत्थियाँ सुलझायगा?
मैं कहाँ, वाइज़ कहाँ, तौबा करो!
जो न समझा ख़ुद वोह क्या समझायगा?
बाग़में क्या जाऊँ, सरपर है ख़िज़ाँ।
गुलका उतरा मुँह न देखा जायगा॥

---

[1]मन्दिर-मस्जिदमे, [2]सृष्टिके आदिसे, [3]मृत्यु, [4]जगलोमें विचरनेवालेको, [5]रेतीले प्रदेशोमें उठता हुआ धूलका अम्बार।

सबक़ तो मकतबे-उल्फ़तमें सबका था यकसाँ।
किसीको शुक्र, किसीको फकत गिला आया ॥
शराब दे कि न दे तुझपै मैं फिदा साक़ी!
मुझे तो बातमें तेरी बडा मज़ा आया ॥
सुबूके आते ही अल्लाहरे ख़ुशी ऐ मस्त!
इमाम आये, रसूल आ गये, ख़ुदा आया ॥

ज़ाहिदसे जब सुनो तो ज़बाँपर है ज़िक्रे-हूर।
नीयत हुई ख़राब तो ईमान कब रहा?

हज़रते 'शाद'से करनी है फ़रिश्तो! क्या अर्ज़?
चुप रहो, ग़ुल न करो, आपने आराम किया ॥

तेरे कमालकी हद कब कोई बशर समझा।
उसी कदर उसे हैरत है, जिस कदर समझा ॥
कभी न बन्दे-क़बा खोलकर किया आराम।
ग़रीबख़ानेको तुमने न अपना घर समझा ॥
पयामेवस्लका मज़मूँ बहुत है पेचीदा।
कई तरह इसी मतलबको नामाबर समझा ॥
न खुल सका तेरी बातोंका एकसे मतलब।
मगर समझनेको अपनी-सी हर बशर समझा ॥

शबेग़म सूँघ गया साँप मौअज़्ज़नको[1] भी।
आज जल्दीसे न काफ़िरको ख़ुदा याद आया ॥
हक़परस्तीके यह माने है तो ज़ाहिद मैं बाज़।
जब बुतोंपर न चला ज़ोर ख़ुदा याद आया ॥

---

[1]अज़ान देनेवालेको।

सदमा तेरे फ़िराक़का मैं क्या करूँ बयाँ ?
बस इन्तहा तो यह है कि मरनेका डर न था ॥

हुजूमे-ग़मने सिखानेकी लाख की कोशिश।
हमें तो आह भी करना न उम्रभर आया ॥
लहदमें शाना हिलाकर यह मौत कहती है--
"ले अब तो चौंक मुसाफ़िर कि अपने घर आया"
हज़ार शुक्र ! हुआ आफ़तावे-हश्र तुलू[1]।
बड़ी तो बात रही यह कि तू नज़र आया ॥

चली जो रूह तो यूँ जिस्मसे कहा मुड़कर--
"कि हस्बख़्वाह न मेहमाँका अहतराम[2] हुआ।"
मिली न 'शाद'को अफ़सोस कोई नेमतेख़ास।
बस इन्तहा है कि मरना तलक भी आम हुआ ॥

जवाब है कहीं इस हदकी बदगुमानीका।
कि मिटनेवाले मिटे और मिटा न शक तेरा ॥

ख़मोश हैं तेरे नालोंपै यह ग़नीमत जान।
अगर जवाबमें कह दे कि "मैं नहीं सुनता ॥"

जो कली सूख गई वोह तो खिलेगी न कभी।
बाग़में फस्लेबहार आये तो क्या, जाये तो क्या ?

फिर आज शामसे नासेह ! है ग़ैर हाल अपना।
तुझे है अपना ख़याल, है मुझे ख़याल अपना ॥
शराबख़ानेसे टलना मुहाल है वाइज़ !
बिका हुआ है इसी घरमें बाल-बाल अपना ॥

---

[1] प्रलयका सूर्य निकला, [2] आदर-सत्कार।

ख़बर मिली थी कि आयेंगे आज शामको वोह ।
हमीं समझते हैं, जिस तरह दिन तमाम किया ।।

जगह दामनमें हम क्योकर न देते ।
कि तिफ्लेअश्क[1] अपना ही लहू था ।।

मेरी तरफसे हरममें[2] न कुछ सबा[3] ! कहना ।
सलाम ज़ुहदको[4] और इश्क़को दुआ कहना ।।

फिराक़ेयारमें रोनेकी हद क्या ?
समन्दर है किनारा आस्तींका ।।
मेरी मायूसियोको कुछ न पूछो ।
न दुनियाका भरोसा है न दींका ।।

किसीको हुस्न दिया और किसीको माल दिया ।
गरीब जानके उसने मुझीको टाल दिया ।।

जर्रे-जर्रेको तेरे कूचेमें था मुझसे गुबार ।
मै जो करता भी तो किस-किससे सफाई करता ।।

ख़ुशी बहारकी धड़का ख़िज़ांके आनेका ।
गुलो ! फकत यह उलट-फेर है जमानेका ।।

चुस्त कमरका क्या सबब तंग कबाकी वजह क्या ?
हम तो किये हैं दिल निसार, हमसे अदाकी वजह क्या ?
ख़ाकमें जो मिला हो ख़ुद, उसपै सितमसे फायदा ?
हुस्नकी यह सरिश्त है, वरना जफाकी वजह क्या ?

---

[1]आँसूरूपी पुत्र, [2]काबेमें, [3]वायु, [4]दिखावटी उपासनाको दूरसे ही प्रणाम करना ।

वस्ल आखिर लफ्जे-बेमानी बने।
तूल इतना ऐ फिराक़ेयार! खींच॥

खतेशौक अपना लिफाफेमें रखो।
आरज़ूओंको कफन पहनाओ 'शाद'!

मेरी खताकी नहीं हद, मगर सजा महदूद।
वफ़्रे-शौक़[1] यहां, और तेरी जफा महदूद॥

फिर गये रास्तेसे वोह गर्दोगुबार देखकर।
रह गई मेरी बेकसी सूये-मजार[2] देखकर॥
वस्लो-फिराककी खबर कौन पढे किसे दमाग़?
बढ गई और बेखुदी नामयेयार देखकर॥

उठ गये उस मुक़ामसे अश्क भर आये जिस जगह।
आज तलक बचाये हैं, इश्ककी आबरूको हम॥

उदू देखें खुशी, अहबाब तेरे रजोग़म देखें।
कहांसे यह कलेजा लायें, किन आंखोंसे हम देखें?
न आई दो घड़ी पहले अजल अफसोस क्या करिये।
रकीब और हाय रखकर तेरे बीमारोका दम देखें॥

बज्ममें साक़िया शराब बढती है सफको[3] तोडकर।
सब तो हैं एक हालमें, उसपै यह इम्तयाज़[4] क्यो?

तेरी गलीके कअ्दो-क़यामकी क्या बात!
इसीको दिलकी जबांमें नमाज कहते हैं॥

---

[1]अभिलाषाकी अधिकता, [2]समाधिकी तरफ, [3]पंक्तिको; [4]भेद-भाव।

बेजाये करीबे-नख़्लेगुल, चारा ही नहीं कुछ बुलबुलको।
सैयादका देखो जुल्म जरा, जालिमने छुपाया दाम कहाँ ?

वोह ख़ुशनिगाह नहीं, जिसमें ख़ुदनुमाई नहीं।
यह चश्मदीदा है, बातें सुनी-सुनाई नहीं।
ख़यालसे है कहीं दूर आस्तानए-दोस्त !
वहांका शौक है दिलको, जहाँ रसाई नहीं॥
मरीजे-हिज्रको लाजिम है तेरे जुल्मकी याद।
दवा यही है मगर हमने आजमाई नहीं॥
वोह आशिक़ोसे है नाराज क्यो, ख़ुदा जाने ?
वफ़ूरे-शौकका होना कोई बुराई नहीं॥
जबांपै जिक्र मगर दिलमें वसवसा ऐ 'शाद' !
ख़ता मुआफ यह धोका है पारसाई नहीं॥

हमें पैगाम्बरने कुछ तो ऐसी ही ख़बर दी है।
कहें क्या तुझसे ऐ नासेह ! कि किस मतलबसे जीते हैं ?

उन्हे देखो कि अबतक गफलतोसे काम लेते हैं।
हमें देखो कि बेदेखे उन्हींका नाम लेते हैं॥

जहांतक हो बसरकर जिन्दगी आला ख़यालोमें।
बना देता है कामिल बैठना साहब-कमालोमें॥

जो आँखें हो तो चश्मेगौरसे औराके-गुल[1] देखो।
किसीके हुस्नकी शरहें[2], लिखी है इन रिसालोमें॥

वोह सलामत रहें इतना भी बहुत है क़ासिद !
पूछ लेते है, ग़रीबोपै करम[3] करते हैं॥

---

[1]फूलकी पत्ती रूपी पृष्ठ, [2]टीकायें, [3]दया।

जो दें सवालपै उनकी सनद नहीं ऐ 'शाद' !
वही करीम हैं जो बेसवाल देते हैं ॥

पैराक वही हिज्रेमुहब्बतके हैं ऐ 'शाद' !
डूबें तो किसी हाल उभरते ही नहीं हैं ॥

इश्क और अक्लमें ऐ दोस्त ! हमेशासे है वैर ।
लोग जो कुछ मुझे कहते हैं बजा कहते हैं ॥

हूँ इस कूचेके हर ज़र्रेसे वाक़िफ़ ।
इधरसे उम्र भर आया-गया हूँ ॥
लहदमें[1] क्यों न जाऊँ मुंह छुपाये ।
भरी महफिलसे उठवाया गया हूँ ॥
कुजा मैं और कुजा ऐ 'शाद' दुनिया ।
कहांसे किस जगह लाया गया हूँ ॥

सराये-दहरमें[2] ऐ रूह ! अपना जी नहीं लगता ।
ख़ुदा जाने, यहां कितने दिनों रहनेको आये हैं ॥

मेरी तलाशसे मिल जाय तू, तो तू ही नहीं ।
इस अम्रेख़ासमें कुछ जायेगुफ्तगू ही नहीं ॥
नियाज़मन्दको लाज़िम है चश्मतर रखना ।
अदा नमाज़ न होगी अगर वज़ू ही नहीं ॥
वोह दामन अपना उठाये हुए हैं क्यों दमे-क़त्ल ?
ख़ुदाके फज्लसे यां जिस्ममें लहू ही नहीं ॥

सदा यह आती है क़ब्रोंसे—"घुट रहा है दम ।
कि बेकसीके सिवा कोई आस-पास नहीं ॥"

---

[1]क़ब्रमें, [2]संसाररूपी सरायमें ।

फसाना कैससे सौदाये-इश्कका पूछो।
मुझे तो सरके खुजानेका भी हवास नहीं॥

हुस्नो-इश्क़ एक है, जाहिरमें फक़त नाम है दो।
यह अगर सच है तो, क्या उनके बराबर हम हैं ?
अक़्लसे राह जो पूछी तो पुकारा यह जुनूँ —
"वह तो खुद भटकी हुई फिरती है, रहबर[1] हम हैं॥"

हिज्रके बाद अगर है वस्ल, तब तो कोई अलम नहीं।
रहम है जिसकी इन्तहा, फिर वह सितम-सितम नहीं॥

वाइजको अख़्तयार है, चाहे वह हो मलूल।
हम तो कलामे-हक़का बुरा मानते नहीं॥
ऐ 'शाद' जिनके साथ ज़माना बसर किया।
अल्लाह ! अब वही मुझे पहचानते नहीं॥

बेकार हमको ज़िबह किये देती है बहार।
बरसा चमनमें अब्र कि तेगें बरस गईं॥

परवानेकी बिसात ही क्या थी फना हुआ।
देखा तो शमअ भी न रही अपने हालमें॥

रुसवाइयाँ गज़बकी हुईं तेरी राहमें।
हद है कि खुद ज़लील हूँ अपनी निगाहमें॥
मैं भी कहूँगा देंगे जो आज़ा[2] गवाहियाँ।
या रब ! यह सब शरीक थे मेरे गुनाहमें॥
थी जुज़वे-नातवाँ[3] किसी ज़र्रेमें मिल गई।
हस्तीका क्या वजूद तेरी जलवागाहमें॥

---

[1]पथ-प्रदर्शक, [2]इन्द्रियाँ, [3]निर्बलताके परमाणु।

फ़ैसला होता है नेकी-ओ-बदीका हरदम।
दिलको इस सीनेमें छोटी-सी अदालत समझो॥

मयस्सर जिनका था दीदार बेखटके ज़मानेको।
वही ख़ुश चश्म अब मिलते नहीं सुर्मा लगानेको॥
दमे-आख़िर हमारे दिलमें यूँ उम्मीद आती है।
कोई जाये कहीं शर्मिन्दगी जैसे मिटानेको॥

लेता है मेरा ज़ख़्मेजिगर बोसे-पै-बोसे।
पैकाँपै कहीं नाम तुम्हारा खुदा न हो॥

वोह पूछते ही रह गये वजहे-मलालेग़म।
हम सोचते रहे जो कहीं कुछ गिला न हो॥
नाज़ुक मिज़ाज दिलको ही अहसाँ नहीं पसन्द।
शर्मिन्दये-क़ुबूल हमारी दुआ न हो॥
क़ासिद! वोह बात कह कि यक़ीं कुछ तो दिलको आय।
क्या कह रहा है तू कहीं वादा किया न हो॥

यह सब दुरुस्त कि तुम बुत भी हो ख़ुदा भी हो।
मगर नियाज़के क़ाबिल यह दिल रहा भी हो॥

दिल उसकी बारगाहमें सजदे करे तो क्या?
अपने नियाज़मन्दसे जो बेनियाज़ हो॥

कोई ऐ 'शाद'! पूछे या न पूछे इससे क्या मतलब?
ख़ुद अपनी क़द्र करनी चाहिए साहब-कमालोंको॥

"मरीज़े-इश्कको मरते कभी नहीं देखा।"
दबी ज़बाँसे यह क्या कह गये, इधर देखो!

मुर्दोंको क़नाअ़तोपै है रश्क ।
पहने रहे इक कफन हमेशा ।।

अपनी आँखोका यह ईमा है ख़यालेयारसे ।
तूने बेमौसमकी बरसातें न देखी हो तो देख ।।
एक हसरत दो तरफ रहती है, मसरूफे-कलाम ।
तख़लियेकी[1] गर मुलाकातें न देखी हो तो देख ।।

'शाद' ! आता है बगोला अपने इस्तक़बालको[2] ।
दश्तेग़ुरबतकी[3] मदारातें[4] न देखी हो, तो देख ।।

बरसरेदार[5] खिंचे या न खिंचे वोह लेकिन ।
जो कहे कलमयेहक[6] तू उसे मसूर समझ ।।

जुम्बिशे-अबरूये-ख़मदारका पूछो न सबब ।
रक्खे-रक्खे यह कमाँ यूँ भी कडक जाती है ।।

बहुत कुछ पाँव फैलाकर भी देखा 'शाद' दुनियामें ।
मगर आख़िर जगह हमने न दो गज़के सिवा पाई ।।

लगा न दे तेरी रफ़्तारे-नाज़में धब्बा ।
कहीं-कहीं जो निशाने-मज़ार बाकी है ।।

न रोकती जो मुझे ऐ ज़मीं ! कशिश तेरी ।
तो मेरी ख़ाक ख़ुदा जाने क्या-से-क्या होती ।।
तेरी तलाशमें हमने मिला दी ख़ाकमें उम्र ।
तू ही बता कि यह कम्बख़्त रहके क्या होती ?

---

[1]एकान्तकी; [2]स्वागतको, [3]प्रवासके जगलकी, [4]आवभगत; [5]फांसीके तख़्तेपर; [6]सत्य बात ।

गुलोंने ख़ारोंके छेड़नेपर सिवा ख़मोशीके दम न मारा।
शरीफ़ उलझें अगर किसीसे तो फिर शराफ़त कहाँ रहेगी ?

बुतकदा है कि ख़राबात[1] है या मस्जिद है।
हम तो सिर्फ़ आपके तालिब हैं ख़ुदा शाहिद है॥
न मुसल्लेकी जरूरत है न मिम्बर[2] दरकार।
जिस जगह याद करें तुझको, वही मस्जिद है॥

वोह चाहें बदलें-न-बदलें मेरे मुक़द्दरको।
किसी क़दर मुझे तसकीं तो है दुआ करके॥

सुनें कि हम न सुनें तूने ख़ुद दिया है जवाब।
हुजूमेयासमें[3] जब-जब तुझे पुकारा है॥

यह शर्त आपसमें की थी, मैं निकलती हूँ कि तू पहले।
मगर की रूहने सबक़त न निकली आरज़ू पहले॥

मेरी जिन्दगानीका सौदा गराँ है।
घटे तो ज़ियाँ[4] है, बढ़े तो ज़ियाँ है॥

निकालें बहरेग़मसे डूबतोंको यह कहाँ हिम्मत।
ख़ुद अपने हाथसे अपना डुबोना हमको आता है॥
निचोड़ें बैठकर, फिर ख़ुश्क कर लें, यह नहीं आता।
जहाँ बैठे वहाँ दामन भिगोना हमको आता है॥

फ़लकका ज़िक्र तो क्या है, ज़मींके भी न रहे।
हम अपनी चालमें आख़िर कहींके भी न रहे॥

---

[1]मधुशाला, [2]मस्जिदका वह स्थान जहाँ भाषण दिया जाता है;
[3]निराशाओंमें, [4]नुक्सान, घाटा।

वोह साहबे-असर हूँ कि ऐ 'शाद'! बादे-मर्ग।
बोसे लिये हैं मेरी लहदके रकीबने॥

असर अब इससे ज़ियादा वफाका क्या होगा।
क़सम हमारी मुहब्बतकी लोग खाने लगे॥

वोह नातवां[1] हूँ कि नाला मेरा तेरे दर तक।
लिये गया मुझे बेअख्तयार खींचे हुए॥

मैं और अर्ज करूँ क्या जनाबे-नासेहसे।
बस एक आप ग़रीबोंके खैरख़्वाह मिले!

वोह ज़माना वस्लका क्या हुआ, कभी आश्नाये-जफा न थे।
कि बदनसे रूह अलग भी थी, मगर आप हमसे जुदा न थे॥
दिलेमुज़तरब! तुझे क्या कहूँ? अबस उनके पाँवपै सर रखा॥
जो ख़फा भी हो गये थे तो क्या, कि वोह आदमी थे ख़ुदा न थे॥
हुए जाके तालिबेदीद जो, यह कुसूर है तो उन्हींका है।
कोई और होंगे वोह बदयकीं, तेरे आस्तांके गदा[2] न थे॥

किसीकी बात भला उसके दिलपै क्या लगती?
ख़ुदाके बन्दोने यूँ तो कही ख़ुदा लगती॥

हवाये-दहर[3] बिगाड़े हज़ार फूलोंको।
न हो वोह रंग, शराफतकी कुछ तो बू होगी॥

बवक़्ते-नज़अ वोह नाहक चले गये उठकर।
हम उसके बाद तो आँखोंको ख़ुद फिरा लेते॥

मैं निसार अपने ख़यालपर कि बग़ैर मयके है मस्तियां।
न तो ख़ुम है पेशेनज़र कोई, न सुबू है पास न जाम है॥

---

[1]निर्बल, [2]भिक्षुक, [3]संसारकी हवा।

बड़ी मुश्किलोंसे हुआ है हल यह किताबेउम्रका मसअला।
उन्हे वस्लेग़ैर हलाल है, हमें शबकी नींद हराम है॥

इसी सोचमें है दिलेहज़ीं, कि क़यामत आनेको आयेगी।
हुए उनसे तालिबेदीद हम, वोह कहेंगे—"मजमये आम है॥"

कह दो मरीज़ेग़मसे कि आयेंगे क़ब्रपर।
रख लो ख़ुदाके वास्ते, इतनी-सी जान भी॥

बिछाकर जो गया बिस्तरपै कांटे।
वही ज़ालिम मेरा आरामे-जां था॥

जिसका दिल मुरझा चुका हो ऐ सबा! उसके लिए।
फस्लेगुल आई तो क्या, अब्रे-बहार आया तो क्या?

भला हुआ कि उड़ा दी सबाने ख़ाक मेरी।
तेरा तो सरपै न अहसान ऐ ज़मीन! लिया॥

आराम कर लो क़ब्रमें चन्दे मुसाफिरो!
मंज़िल तक और अब कोई मेहमां सरा नहीं॥
दो-चार वक्त जाते हैं रोज उस गलीमें हम।
अबतक कोई नमाज़ हमारी क़ज़ा नहीं॥

मज़ा मिल जायगा जीनेका तुझको।
किसी ज़ालिमपै नासेह तू भी मर देख॥

ऐसा न हो मलाइक[1] करने लगें शिकायत।
तीरे-नज़र तुम्हारा कुछ दूर जा पड़ा है॥

रहे-वफ़ामें[2] क़दम डिग न जायें देख ऐ दिल!
सतानेवाले अभी बहुत कुछ सतायेंगे॥

---

[1]फरिश्ते, [2]नेकीके मार्गमें।

यह अदा, यह उनका मिलना, यही कह रहा है मुझसे !
कि जफा भी अब जो होगी तो ब-शक्लेनाज़ होगी ।।

नज़र आये-न-आये कोई आँसू पूछनेवाला ।
मेरे रोनेकी दाद ऐ बेकसी ! दीवारो-दर देंगे ।।

उसके लिए तो हाथ उठाना भी है गुनाह ।
जिसकी दुआ हो आप, वोह फिर क्या दुआ करे ?

मोती तुम्हारे कानके थर्रा रहे हैं क्यो ?
फरियाद किस ग़रीबकी गोश-आश्ना हुई ।।

गुलिस्ताने-जहाँमें बस वही आज़ाद इन्साँ है ।
सबाकी तरह जिस गुलसे मिले उसको हँसा आये ।।

तुलनात्मक अशआर

अब हम 'आतिश' और 'शाद'की हमतरही गज़लोके चन्द तुलनात्मक शेर पेश कर रहे हैं, ताकि पाठक जान सकें कि एक ही काफियेमें दोनो उस्तादोने कैसे-कैसे मज़ामीन नज़्म किये हैं। और दोनोका मर्तबा गज़ल-गोईमें कितना ऊँचा है। जहाँ शादने 'आतिश'के किसी काफियेपर शेर नही कहा है, वहाँ मजबूरन उससे मिलता-जुलता शादके दूसरे काफिये-का शेर दे दिया है।

आतिश— न पूछ हाल मेरा चौबे-ख़ुश्के-सहरा[1] हूँ ।
लगाके आग मुझे, कारवाँ[2] रवाना हुआ ।।

शाद— ख़ुदा बुरा करे इस नींदका यह कैसी नींद ?
खुली कब आँख कि, जब कारवाँ रवाना हुआ ।।

---

[1]जगलकी सूखी लकडी, [2]यात्रीदल ।

आतिश— भरा है सीनये-दिल कूचए-मुहब्बतसे।
खुदाका घर था जहाँ, वाँ शराबख़ाना हुआ॥

शाद— गजब किया तेरे जानेने बज्ममें[1] साक़ी!
बुलन्द चारतरफ़ शोर आमयाना[2] हुआ॥

आतिश— हो जाये हुस्नेमानी बेसूरत आश्कार।
रुये-हक़ीक़त उलटे जो परदा मजाज़का॥

शाद— उनकी निगाहेनाज जो पलटी तो देखना।
मुँह देखती रहेगी हक़ीकत, मजाजका॥

आतिश— साक़ी! जलाल[3]-ओ-दर्द जो तौफीक़[4] हो सो दे।
मस्तोंको तेरे होश कहाँ इम्तयाजका[5]॥

शाद— देखा तो होगा हमने अज़लमें तेरा जमाल।
लेकिन वोह कोई वक्त न था इम्तयाज़का॥

आतिश— क्योंकर वोह नाज़नीन करे बेनियाज़ियाँ।
अन्दाज़से भी हौसला आली है नाज़का॥

शाद— किस तरह दिलपै फित्नये-महशरका हो असर।
हंगामा याद है तेरी रफ़्तारे-नाज़का॥

आतिश— याद करके अपनी बरबादीको रो देते हैं हम।
जब उड़ाती है हवाए-तुन्द[6] ख़ाके-कूये-दोस्त[7]॥

शाद— लाशये-उरियाने-आशिकका[8] कोई देखे विक़ार[9]।
ढाँकती है उठके किस उल्फतसे ख़ाके-कूये-दोस्त॥

---

[1]महफिलमें, [2]आमफहम, [3]रूपका दर्शन, चमत्कार, [4]हौसला, सामर्थ्य, [5]थोड़े-बहुतके भेदका। [6]तेज़ हवा, [7]प्रेयसीके कूचेकी धूल; [8]प्रेमीकी नग्न-लाशका, [9]महत्व।

आतिश-- दागेदिलपर ख़ैर गुज़री तो गनीमत जानिये।
दुश्मने-जाँ हैं जो आँखें देखती हैं सूये-दोस्त[1] ॥

शाद-- तू बडा आक़िल है नासेह ! तू ही समझा दे मुझे।
कौन शै रह-रहके दिलको खींचती है सूये-दोस्त ॥

आतिश-- दो मरेंगे ज़ख़्मेकारीसे तो हसरतसे हज़ार।
चार तलवारोमें शल हो जायेगा बाज़ूये-दोस्त ॥

शाद-- ख़त गलेपर पड चुका था ख़ून देती थीं रगें।
वायेहसरत किस जगह आकर थका बाज़ूये-दोस्त ॥

आतिश-- फ़र्शेगुल बिस्तर था अपना ख़ाकपर सोते हैं अब।
ख़िश्त[2] ज़ेरेसर नहीं, या तकिया था ज़ानूये-दोस्त ॥

शाद-- किस ख़ुशीसे तहनयत दे-देके यूँ कहता है दिल।
वस्लकी शब है मुबारक दोस्तको पहलूये-दोस्त ॥

आतिश--हिज्रकी शब हो गई रोज़े-क़यामतसे दराज़[3]।
दोशसे[4] नीचे नही उतरे अभी गेसूये-दोस्त ॥

शाद-- दहरमें क्या-क्या हुए हैं इनक़लाबातेअज़ीम।
आस्माँ बदला, ज़मीं बदली, न बदली ख़ूये-दोस्त[5] ॥

आतिश-- इस बलाये-जाँसे 'आतिश' देखिये क्योंकर बने ?
दिल सिवा शीशेसे नाज़ुक, दिलसे नाज़ुक ख़ूये-दोस्त ॥

शाद-- 'शाद' यूँही अहलेशक शकमें पडे रह जायेंगे।
हम इन्हीं आँखोसे इक दिन देख लेंगे रूये-दोस्त ॥

---

[1]प्रेयसीकी तरफ, [2]ईंट, [3]लम्बी, [4]कन्धेसे; [5]मित्रका स्वभाव ।

आतिश— फ़ुरक़ते-यारमें मुर्दा-सा पडा रहता हूँ।
रूह क़ालिबमें नहीं, जिस्म है तनहा बाक़ी ॥

शाद— मैकदेमें न वोह साग़र है, न ख़ुम है, न वोह जाम।
चल बसे यार, रहे हम तने-तनहा बाक़ी ॥

आतिश— इस क़दर सीनयेग़म, इश्क़से मामूर हुआ।
न रही दिलमें मेरे हसरतेदुनिया बाक़ी ॥

शाद— काश जीते युं-ही मर-मरके कई बार ऐ दिल!
सैकडो साल रहेगी अभी दुनिया बाक़ी ॥

आतिश— गरमियां है जो यही आहेशरर-अफ़्शांकी[1]।
नहीं रहनेका मेरे यारका परदा बाकी ॥

शाद— चार दीवारे-अनासिरको[2] गिराया भी तो क्या ?
वही धोका है, वही है अभी परदा बाक़ी ॥

आतिश— आशिक़-नवाज़ हुस्नकी तारीफ क्या करूँ?
यूसुफसे भी अज़ीज़ उसे अपना ग़ुलाम है ॥

शाद— मस्तोंपै मुनहसिर है न अहलेशऊरपर।
साक़ी! तेरा तमाम ज़माना ग़ुलाम है ॥

आतिश— जबतक करे हलाल न मुझ बेगुनाहको।
क़ातिलको दहने हाथका खाना हराम है ॥

शाद— इतना भी मैकशोको नहीं मैकशीमें होश।
हदसे अगर सिवा हो तो पीना हराम है ॥

---

[1] आहरूपी चिनगारीकी बारिश, [2] पंचतत्त्वको।

आतिश—— माशूक़ ही नहीं जो न वादा ख़िलाफ हो।
चाहे जो तुझसे पुख़्तगोये-अहद[1] ख़ाम[2] है॥

शाद—— तेग़े-निगाहेयार ! तेरी काट अलअमाँ।
फ़ौलाद भी तो आगे तेरे मोम ख़ाम है॥

आतिश—— दौलतके सामने नहीं कुछ क़द्रे-हुस्न भी।
महमूदका अयाज़-सा ख़ुशरू ग़ुलाम है॥

शाद—— कहते हैं किसको हुस्नकी ख़िदमत-गुज़ारियाँ।
जिस मुब्तलाको देखिये दिलका ग़ुलाम है॥

आतिश—— सुबहे बहार है मुझे साक़ी पिला शराब।
सब जानते हैं ईदका रोज़ा हराम है॥

शाद—— इक जामकी बिसात तो साक़ी बहुत न थी।
पानी भी अब मुझे तेरे घरका हराम है॥

आतिश—— 'आतिश' ! बुरा न मानिये हक़-हक़ जो पूछिये।
शायर हैं हम, दरोग़ हमारा कलाम है॥

शाद—— महमाँ सराये तनसे चली रूह कहके हाय——
"इस घरमें अब न आयेंगे गर 'शाद' नाम है॥"

हम तरही गज़लोके अतिरिक्त इन दोनो बाकमाल उस्तादोके ऐसे अशआर भी बहुत अधिक है, जो विचारो और भावोकी दृष्टिसे समानता रखते है। उनमें-से चन्द अशआर पेश किये जा रहे है, ताकि पाठक जान सके कि एक ही तरहके भावो और विचारोको सिद्धहस्त शायर अपनी-अपनी भाषा और कल्पनाका परिधान पहिनाकर किस तरह सँवारते है।

---

[1]वायदेकी दृढता, [2]व्यर्थ।

आतिश—— दस्ते-याराने-वतनसे[1] नहीं मिट्टी दरकार।
दब मरूँगा मैं कहीं, रीगे-बयाबांके[2] तले॥

शाद—— लबे-तिश्ना[3] रहना, अहसाँसे बहतर।
देखा किया मुँह, दरिया हमारा॥
खुश है गर तिश्नालबीने युँ-ही मारा हमको।
चीने-अबरू नहीं, दरियाकी गवारा हमको॥

आतिश—— हमेशा झाडते हैं गर्देपैरहन[4] ग़ाफिल।
नहीं समझते कि है जेरेपैरहन[5] मिट्टी॥

शाद—— शुस्तगीयेजबाँ[6] अबस,[7] दिलमें भरे हैं ख़ारोख़स[8]।
छोड अभी बरूनेदर,[9] फिक्रे दरूने-खाना कर[10]॥

आतिश——आसमाँ! मरके तो राहत हो कहीं थोडी-सी।
पाँव फैलानेको हाथ आये जमीं थोडी-सी॥

शाद—— आरामसे हूँ क़ब्रके अन्दर जो बन्द हूँ।
मैं भी तो आदमी हूँ फराग़त पसन्द हूँ॥

आतिश—— मारफतमें तेरी जातेपाकके।
उडते हैं होशोहवास इदराकके[11]॥

शाद—— तेरे कमालकी हद कब कोई बशर समझा।
उसी क़दर उसे हैरत है जिस क़दर समझा॥

---

[1]देशवासी मित्रोके हाथसे, [2]रेगिस्तानकी धूलमें, [3]प्यासा; [4]पोशाककी धूल, [5]लिबासके नीचे, [6]वाणीकी मधुरता, [7]व्यर्थ, [8]काँटे, तिनके, [9]बाहरी झाड-पोछ, [10]अन्तरगकी, [11]बुद्धिके।

आतिश— दोनो जहाँके कामका रक्खा न इश्कने।
दुनिया-ओ-आख़रतसे किया बेख़बर मुझे॥

शाद— फलकका ज़िक्र ही क्या है, ज़मींके भी न रहे।
हम अपनी चालसे आख़िर कहींके भी न रहे।

आतिश— बीना[1] हो जो आँखें तो रुख़े यारको देखें।
नज़्ज़ारेके काबिल जो तमाशा है तो ये है॥

शाद— यह आरज़ू है तेरी जलवागाहमें जाकर।
हज़ार आँखें हो और सबसे यार हम देखें॥

आतिश— हश्रपर वादयेदीदार न कर आशिकसे।
किसको मालूम है, फरदायेकयामत[2] कब है॥

शाद— तकिय-ए-वादापै[3] सब चुपके पडे है तहेख़ाक[4]।
कल कयामत जो न आई तो कयामत समझो॥

आतिश— ठहरा हुज़ूरेयार न माहे-चहार वोह।
दिन हो गया नक़ाब जो शबको उठा दिया॥

शाद— शबेवस्ल अपनी ही आँखोसे यह अन्धेर देखा है।
नकाब उनका उलटना रातका काफूर हो जाना॥

---

[1]देखनेवाली; [2]प्रलयका दिन, [3]वायदेके भरोसेपर;
[4]मिट्टीके नीचे, समाधिमे।

आतिश— क़ालिबे-ख़ाकीको[1] तो सुनते हैं 'आतिश' जेरेख़ाक।
कुछ नहीं मालूम हमको रूह[2] किस आलममें है॥

शाद—जिसे पाक रखनेकी थी हविस वोह तो तेरे दरपै पहुँच गई।
यह जो मुश्तेख़ाक जमींपै है, उसे फेंक आओ कहीं सही॥

आतिश— वक़्ते-आख़िर इश्क़े-पिन्हाँ, यारपर ज़ाहिर हुआ।
नज़अमें ईसाने पहचाना मेरे आज़ारको॥

शाद— तुझीको नज़अमें पूछा तेरे ख़मोशोंने।
अख़ीर वक़्त जब आया छुपे न राज़[3] उनके॥

आतिश— हाय क़ातिलका मेरे, ख़जर तक आकर रह गया।
कुहनियो तक आस्तीनोको चढाकर रह गया॥

शाद— हमारी जान सदके नौजवाँ कातिलके ग़ुस्सेपर।
कोई अन्दाज़ देखे आस्तीनोंके चढानेका॥

आतिश— छेड बैठे जो हम अफसानये-गेसूये-दराज़।
सुबह होगी न रहेगी शबे-यल्दा[4] बाक़ी॥

शाद—जो कहूँ तो ख़त्म न हो सके, जो सुने कोई तो ख़लिश रहे।
यह फसाना ज़ुल्फे-दराज़का मेरी ज़िन्दगीसे दराज़[5] है॥

---

[1]मिट्टीरूपी शरीरकी, [2]आत्मा, [3]भेद, [4]सबसे बडी अँधेरी रात; [5]लम्बा, विस्तृत।

आतिश— अदमसे हस्तीमें जाकर यही कहूँगा मैं।
हज़ारो हसरतेजिन्दाको गाड-ओ-दाब आया ॥

शाद—अभी बहुत दिलमें है उम्मीदें तडपके हसरतसे मर न जायें।
मिलो अगर 'शाद'से अज़ीजो! तो जिक्र करना न आरज़ूका ॥

आतिश— चमनिस्ताँकी गई नशवोनुमा फिरती है।
रुत बदलती है, कोई दिनमें हवा फिरती है ॥

शाद— ख़िज़ाँमें खुश्क शाख़ोसे लिपटकर मुफ्त जी खोना।
बहार आयेगी घबराओ न ऐ उजड़े चमनवालो!

आतिश— आलमसे कुछ ग़रज नहीं ऐ जाने जाँ! हमें।
दिलको नही है कोई तुम्हारे सिवा कुबूल ॥

शाद— हज़ार मजमये-ख़ूबाने-माहरू[1] होगा।
निगाह जिसपै ठहर जायगी वह तू होगा ॥

आतिश— कहाँतक आँखोमें सुर्ख़ी शराबख़्वारीसे।
सफेदमू[2] हुए बाज़ आ सियाहकारीसे ॥

शाद— अब इज्तनाब[3] मुनासिब है 'शाद' रिन्दीसे।
सफेद आपके दाढीके बाल होने लगे ॥

---

[1]सुन्दरियोका समूह; [2]सफेद बाल; [3]परहेज़, बचाव।

आतिश—राज़ेदिल[1] अफ़्शां[2] न हो ऐ दिल ! कहे देता हूँ मैं ।
फोड डाली आँख अगर आंसू नज़र आया मुझे ॥

शाद— हुजूमे-अश्कसे दीदारमें ख़लल न पडे ।
जो अबके रोऊँ तो आँखोको मैंने फोड दिया ॥

आतिश— नाफ़हमी[3] अपनी परदा है दीदारके लिए ।
वरना कोई नकाब नहीं यारके लिए ॥

शाद— गिला जलवेका तेरे क्या कि आलम आशकारा है ।
हमें रोना तो जो कुछ है वोह अपनी कमनिगाहीका ॥

आतिश— ख़ूब रोये हालपर अपने, वतनका सुनके हाल ।
कोई ग़ुरबतमें जो आ निकला हमारे शहरसे ॥

शाद— चमनको याद करके देरतक आंसू बहाता हूँ ।
कोई तिनका जो मिल जाता है उजड़े आशियानेका ॥

आतिश— करम किया जो सनमने सितम जियादा किया ।
शबे-फिराक़में मैंने ख़ुदाको याद किया ॥

शाद— कोई ख़फा हो-तो-हो, अमरेहक़ मगर यूँ है ।
बुतोकी चालने सबको ख़ुदापरस्त किया ॥

---

[1]दिलका भेद, [2]प्रकट, [3]बेसमझी, अज्ञानता ।

आतिश-- हिमेशा फ़क्रसे याँ आशिक़ाना शेर ढलते हैं ।
जबांको अपनी बस इक हुस्नका अफ़साना आता है ।।

शाद-- न आईनेका किस्सा और न हालेशाना कहते हैं ।
हक़ीकतमें जमाले-यारका अफसाना कहते हैं ।।

आतिश-- हिकायते-गुले-रगीने-यार क्या कहते ?
चमनको आग लगाता जो बाग़बां सुनता !

शाद-- जमालेयारका किस्सा चमनमें चलके कहो ।
गुलोके कान खडे होगे उस हिकायतसे ।।

---

२४ मई १९५३]
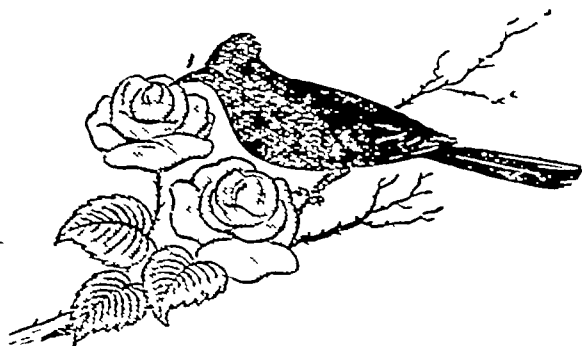
गुल-बुलबुल

पं० अमरनाथ मदन साहब 'साहिर' काश्मीरी ब्राह्मणथे। आपका जन्म २९ मार्च १८६३ ई०में और निधन १९४५ ई० के लगभग हुआ। आप देहलीके रईस रायबहादुर प० जानकीदास मदनके सुपुत्र थे। आपके पूर्वज प० दीनानाथजी पजाबके महाराजा रणजीतसिंहके दीवान और ताऊ अग्रेज़ी फौजमें सूबेदार थे।

'साहिर' साहब तहसीलदारीके पदसे सम्मानपूर्वक पेंशन लेकर दिल्लीमें साहित्य-सेवामें जीवन-यापन करते रहे। अपने मकानपर नियमसे मासिक मुशायरे कराते रहते थे और बडी धूम-धामसे वार्षिक मुशायरे वृहतरूपमें कराते थे। मैंने स्वयं सन् १९२४से दसो वार्षिक और न जाने कितने मासिक मुशायरे आपके सचालकत्त्वमें सफलतापूर्वक सम्पन्न होते देखे हैं। उर्दू-ससारमें आपको अत्यन्त सम्मान और आदर प्राप्त था। आप हँसमुख, मिलनसार और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, चेहरेपर सफेद दाढी खूब ज़ेब देती थी।

पहले आप फारसीमें शेर कहते थे, बादमें मित्रोके आग्रहसे २२ वर्षकी आयुसे उर्दूमें शेर कहना आरम्भ कर दिया। आपका १९३७ ई०में एक दीवान "कुफ्रेइश्क" प्रकाशित हो चुका है। आपका कलाम उच्चकोटिका

दार्शनिक और आध्यात्मिक है। भापा भी फारसीमय है। गद्यके भी आप मशहूर लेखक थे। यहाँ हम आपके कुछ सरल अशआर निगार जनवरी १९४१ से देनेका प्रयत्न कर रहे हैं—

चश्मे-दिल नज़अमें है महवे तमाशाये-जमाल[१]।
हश्र[२] क्या और है उससे कोई बहतर अपना॥

होनेको तो है अब भी वही हुस्न, वही इश्क़।
जो हर्फ़े-ग़लत होके मिटा नक्शे-वफा था॥

पिन्हाँ नज़रसे परदयेदिलमें रहा वोह शोख़।
क्या इम्तयाज[३] हो मुझे हिज्रो-विसालका॥

ऐ परीरू! तेरे दीवानेका ईमाँ क्या है।
इक निगाहे-ग़लत अन्दाज़पै कुर्बां होना॥

जुनूने-इश्कमें कब तन-बदनका होश रहता है।
बढा जब जोशे-सौदा हमने सरको दर्दे-सर जाना॥

एक जज्बा था अज़लसे गोशये-दिलमें निहाँ।
इश्क़को इस हुस्नके बाज़ारने रुसवा किया॥

तमन्नायें बर आईं अपनी तर्केमुद्दआ होकर।
हुआ दिल बेतमन्ना अब, रहा मतलबसे क्या मतलब?

देखकर आईना कहते हैं कि—"लासानी हूँ मैं"
आईना देता है उनको लनतरानीका जवाब॥

पा लिया आपको अब कोई तमन्ना न रही।
बेतलब मुझको जो मिलना था मिला आपसे आप॥

---

[१]मृत्युके समय हृदय-नेत्र प्रेयसीके सौन्दर्य देखनेमे लीन हैं; [२]प्रलय, [३]अन्तर मालूम दे।

गुम कर दिया है आलमे-हस्तीमें होशको ।
हर इकसे पूछता हूँ कि 'साहिर' कहाँ है आज ।।

दामानेयार मरके भी छूटा न हाथसे ।
उट्ठे हैं ख़ाक होके सरे रहगुज़रसे हम ।

सदाये-वस्ल बामे-अर्शसे आती है कानोंमें—
"मुहव्वतके मज़े इस दारपर चढकर निकलते हैं ।।"

कतरा दरिया है अगर अपनी हक़ीकत जाने ।
खोये जाते हैं जो हम आपको पा जाते हैं ।।

कहाँ दैरोहरममें जलवये-साक़ी-ओ-मय बाकी ?
चलें मयख़ानेमें और बैअते-पीरेमुगां[1] कर लें ।।

परेपरवाज़े उनका[2] लायेंगे गर लामकां भी हो ।
तुम्हे हम ढूंढ लायेंगे कहीं भी हो, जहाँ भी हो ।।

हुस्न क्या हुस्न है जलवा जिसे दरकार न हो ।
यूसफी क्या है जो हंगामये-बाज़ार न हो ।।

बेतमन्नाईने बरहम रंगे-महफ़िल कर दिया ।
दिलकी बज़्म-आराइयाँ थीं आरज़ूये-दिलके साथ ।।

अज़लसे दिल है महवेनाज़ वक़्फ़े-ख़ुद-फ़रामोशी ।
जो बेख़ुद हो वोह क्या जाने, वफ़ा क्या है, जफ़ा क्या है ?

परदा पड़ा हुआ था ग़फ़लतका चश्मे-दिलपर ।
आंखें खुलीं तो देखा आलममें तू-ही-तू है ।।

---

[1]शराब बेचनेवालेपर ईमान ले आयें, [2]कल्पित पक्षी ।

जलवये-हक़ नज़र आता है सनममें 'साहिर' !
है मेरे काबेकी तामीर सनम-ख़ानोसे ।।

हुस्नमें और इश्क़में जब राब्ता क़ायम हुआ ।
ग़म बना दिलके लिए और दिल बना मेरे लिए ।।

वोह भी आलम था कि तू-ही-था और कोई न था ।
अब यह कैफीयत है मैं-ही-मैंका है सौदा मुझे ।।

हुस्नको इश्क़से बेपरदा बना देते हैं वोह ।
वोह जो पिन्दारे-ख़ुदी[1] दिलसे मिटा देते हैं ।।

ख़ाली हाथ आयेंगे और जायेंगे भी ख़ाली हाथ ।
मुफ़्तकी सैर है, क्या लेते हैं, क्या देते हैं ।।

ज़िन्दगीमें है मौतका नक़्शा ।
जिसको हम इन्तज़ार कहते हैं ।।

दीदारे-शशजहत[2] है कोई दीदावर[3] तो हो ।
जलवा कहाँ नहीं, कोई अहलेनज़र तो हो ।।

दरेसनमकदाको हमने जाके खडकाया ।
हरममें जब न हुए बारयाब, क्या करते ?

हरम है मोमिनोका, बुतपरस्तोका सनमख़ाना ।
ख़ुदा-साज इक इमारत है मेरे पहलूमें जो दिल है ।।

---

[1]अहमका अभिमान, [2]अखिलविश्वके दर्शन; [3]देखनेवाला ।

चले जो होशसे हम बेख़ुदीकी मंज़िलमें।
मिला वोह ज़ौक़े-नज़र, पर उधर न देख सके॥

हम हैं और बेख़ुदी-ओ-बेख़बरी।
अब न रिन्दी न पारसाई है॥

९ मई १९५२]

पं० बृजमोहन दत्तात्रय कैफ़ी काश्मीरी ब्राह्मण हैं। आपके पूर्वज फरुखसियर बादशाहके साथ काश्मीरसे दिल्ली आये और सरकारी दफ्तरोमे उच्च पदोपर नियुक्त हुए। कैफीके पिता प० कन्हैयालाल नाभा स्टेटमें शहर कोतवाल थे।

अल्लामा कैफी १३ दिसम्बर १८६६ ई०मे दिल्लीमे उत्पन्न हुए। आपके नाना फारसीके बहुत बडे पण्डित थे। उन्हीसे फारसीकी शिक्षा प्राप्त की। अग्रेज़ी शिक्षा मिशन कॉलेजमे प्राप्त की। शायरीका प्रारम्भ ग़ज़लसे हुआ, परन्तु हाली-आज़ादके आन्दोलनोके फलस्वरूप आपने नज़्म भी लिखनी प्रारम्भ कर दी।

१९१५-१६मे यूरोपका भ्रमण करके वहाँके साहित्यिकोसे भेंट-मुलाकात की। आपकी कई कृतियाँ सरकारसे पुरस्कृत हो चुकी हैं। आप काश्मीरके विदेशी विभागके उपमत्री पदसे रिटायर हुए और एक रियासतमे मजिस्ट्रेट और कलेक्टर भी रहे। अब शान्तिपूर्वक साहित्य-सृजन कर रहे हैं। आप उर्दू-साहित्य-इतिहासके बहुत प्रतिष्ठित विद्वान हैं। आपकी आलोचनायें बहुत गवेषणापूर्ण होती हैं। आप उर्दू-संसारके एक स्तम्भ

समझे जाते हैं। सैकडो मुशायरो और साहित्यिक सभाओके आप सभापति होते रहे हैं। आपका उर्दू-साहित्यिक बहुत सम्मान करते हैं। न जाने कितने युवक आपसे प्रेरणा पाकर शायर और लेखक बन गये। विरोधी भी आपकी विद्वता और साहित्यिक सेवाओका लोहा मानते हैं और आपके दमको उर्दूके लिए एक बहुत बडी देन समझते हैं। हिन्दी-हितैषीके नाते जो स्थान आदरणीय पुरुषोत्तमदास टण्डनका है, वही उर्दू-ससारमे आपका है। सादा-मिज़ाज, साफ-दिल और बा-इख़लाक बुज़ुर्ग हैं। सभी आपको श्रद्धा भक्तिसे देखते हैं। दिल्लीकी बडी-से-बडी बज्मेअदबका सभापति होते हुए हमने आपको देखा है। आपके एक-एक शब्दको लोग मन्त्रकी तरह समझते हैं।

'कैफी' बूढे हो चले हैं और उनकी शायरी भी बूढी हो गई हैं। लेकिन उनके कलाममे न तो पुराने ढगकी शोख़ी मिलेगी, न बाज़ारूपन। उनका कलाम सजीदा और पाक होता है। निगार जनवरी १९४१ से चन्द अशआर चुनकर यहाँ दिये जा रहे हैं—

हैं मेरे दिलमें वोह आहे कि जो बिजली न बनीं।
मेरी आँखोमें वोह क़तरा हैं जो तूफाँ न हुआ॥

ग़म रहा उनका जो दोज़ख़में पडे जलते हैं।
मेरे ख़ुश होनेका जन्नतमें भी सामाँ न हुआ॥

राज़[1] उनके खुले जाते हैं एक-एक सभूपर।
और इसपै तमाशा है कि मै कुछ नहीं कहता॥

हाल यह बेख़ुदिये-इश्क़में[2] 'कैफी'का हुआ।
शेख़ काफिर उसे और गबर[3] मुसलमाँ समझा॥

---

[1]भेद, [2]प्रेमकी तन्मयतामें, [3]अग्निपूजक (यहाँ गैरमुस्लिमसे तात्पर्य है)।

यूं अगर देखिये क्या कुछ नहीं यह मुश्तेगुबार[1]।
और अगर सोचिये तो खाक भी इन्सांमें नहीं ।।

चारागरको हैरत है इरतकाये-वहशतसे।
पांवमें जो चक्कर था आ रहा है वोह सरमें ।।

सुहबते अगली जो याद आती है, जी कटता है।
कोई पूछे भी तो कहते है, हमें याद नहीं ।।

हां-हां मगर ऐ दोस्त ! तू तदबीर किये जा।
यह भी तेरी तकदीरके दफ्तरमें लिखा है ।।

गुले-पज़मुर्दाकी बिखरी हुई कुछ पत्तियां देखीं।
तो इक बेदिल यह चीख़ उट्ठा "मेरा दिल है, मेरा दिल है।।"

तुमसे अब क्या कहें, वोह चीज है दाग़े-ग़मे-इश्क़।
कि छुपाये न छुपे और दिखाये न बने ।।
बात वोह कह गये आये भी तो किस तरह यक़ी।
और सहर इसमें कुछ ऐसा कि भुलाये न बनें ।।

जिसको खबर नहीं, उसे जोशो-ख़रोश है।
जो पा गया है राज़, वोह गुम है, ख़मोश है ।।

पैकरे-ख़ाक है तू चर्ख़पै छा मिस्ले-गुबार।
तुझको मिट्टीमें मिलाया है जबीं-साईने ।।

नहीं मालूम अज़ां थी कि वोह बांगेनाकूस[2]।
कहीं खींचे लिये जाती है इक आवाज़ मुझे ।।
"इनकलाब आनेको ऐसा है न आया हो कभी ।।"
दरो-दीवारसे आती है यह आवाज़ मुझे ।।

---

[1] मुट्ठीभर ख़ाक, [2] शख-ध्वनि ।

समझे

हैं हमेशा जवान रहते हैं।
यक़ीनन इसी शबाबमें हैं॥

र बने यूँ ही नालेसे आहसे।
ा वोह फूट ही निकला निगाहसे॥
यह ख़ानयेदिल इक ख़यालसे।
दुनियाके हादसे इसे वीरां न कर सके॥

साक़ीकी इक नज़र ही हमें मस्त कर गई।
किसको सुराही-ओ ख़ुमो-साग़रका होश था॥

१६ मई १९५२]

'आज़ाद' अन्सारी

[१८७० —....ई०]

शेख अलताफ अहमद 'आज़ाद' अन्सारीका जन्म १८७० ई०में नागपुरमें हुआ। वहाँ आपके पिता ओवरसियर थे। १८-१९ वर्षकी अवस्थातक अरबी-फारसीकी शिक्षा प्राप्त की। १९०० ई०में देहरादूनमें मकतब खोला। १९०२से १९०९ तक कानपुरमें हकीमी की। यही आपकी पत्नीका निधन हो गया। फिर आप सहारनपुर, अम्वाला, अलीगढ, दिल्ली, आदि कई स्थानोमें रहे। १९२३के बाद आप हैदरावाद चले गये और वहाँ चश्मेका व्यापार करने लगे। आप शायरीमें हालीके शिष्य थे। आप पुन दिल्लीमें रहने लगे थे। यूँ आप सहारनपुरके रहनेवाले थे। १८९०में आपने शायरी प्रारम्भ की और २० वर्षतक हालीकी सुहवतका लाभ उठाया। आपका निधन हो चुका है। आपके स्वय निर्वाचित कलामसे चन्द शेर हम यहाँ निगार जनवरी १९४१ से साभार दे रहे हैं—

तबीयत ही दर्द-आश्ना हो गई।
दवाका न करना दवा हो गया॥

यूँ याद आओगे हमें इसला[1] ख़बर न थी।
यूँ भूल जाओगे हमें वहमो-गुमाँ न था॥

आह! किसने मुझे दुनियासे मिटाना चाहा।
आह! उसने, जिसे मैं हासिले-दुनिया जाना॥

ज़ाहिर है कि बेकस हूँ, साबित है कि बेबस हूँ।
जो ज़ुल्म किया होगा, बरदाश्त किया होगा॥

उम्मीदे-सकूँ रुख़सत, तस्कीने-दरूँ रुख़सत।
अब दर्दकी बारी है, अब दर्द मज़ा देगा॥

कभी दिनरात रगीं सुहबतें थीं।
अब आँखें हैं, लहू है, और मैं हूँ॥

तेरा गुलशन वोह गुलशन, जिसपै जन्नतकी फिज़ा सदक़े।
मेरा ख़िरमन[2] वह ख़िरमन, जिसपर अगारे बरसते हैं॥

अब आँखोके आगे वोह जलवे कहाँ?
अब आँखें उठानेसे क्या फायदा?

अब फ़रेबे-महर्बानी[3] रायगाँ[4]।
ज़िन्दगी भरको नसीहत हो गई॥

जब हमें बज़्ममें आनेकी इजाज़त न रही।
फिर यह क्यो पुरसिशेहालात है? यह भी न सही॥

---

[1]कदापि, [2]खलिहान, [3]कृपाओका मायाजाल;
[4]व्यर्थ।

अब हालेदिल न पूछ, कि तावे-बयाँ[1] कहाँ ?
अब महर्बां न हो कि ज़रूरत नहीं रही ॥

तेरा बारेगिराने-महर्बानी कौन उठा सकता ?
तेरा नामहर्बां होना कमाले-महर्बानी है ॥

सितमशआर ! सता, लेकिन इस कदर न सता ।
कि शुक्र शक्ले-शिकायात अख़्तयार करे ॥
ख़ुदाके वास्ते आ और इससे पहले आ ।
कि यास चारये-तकलीफेइन्तज़ार करे ॥

हाय ! वोह राहत कि जबतक दिल कहीं आया न था ।
हाय ! वोह साअ़त कि जब तुमसे शनासाई हुई ॥

मेरे शौकेसज़ाका ख़ौफनाक अंजाम तो देखो ।
किसीका जुर्म हो अपनी ख़ता मालूम होती है ॥

समझता हूँ कि तुम बेदादगर हो !
मगर फिर दाद लेनी है तुम्हींसे ॥

इक गदायेराहको[2] नाहक न छेड़ ।
जा, फ़क़ीरोंसे मज़ाक अच्छा नहीं ॥

तेरा अदील[3] कोई तेरे सिवा न होगा ।
तुझ-सा कहाँसे लाऊँ, तुझ-सा हुआ न होगा ॥
मंज़िलकी जुस्तजूसे पहले किसे ख़बर थी ?
रस्तोंके बीच होंगे और रहनुमा[4] न होगा ॥

---

[1]बयान करनेकी शक्ति, [2]मार्गके भिक्षुकको, [3]नज़ीर, तुझ जैसा, [4]पथ-प्रदर्शक ।

हक़ बना, बातिल बना, नाकिस बना, कामिल बना।
जो बनाना हो बना, लेकिन किसी क़ाबिल बना॥

जबाँ तक शिकवये-महरूमिये-दीदार आना था।
खिताब आया कि "जा, और ताकते-दीदार पैदा कर॥"

गैर फानी खुशी अता कर दी।
ऐ गमेदोस्त! तेरी उम्रदराज॥

उठो दर्दको जुस्तजू करके देखें।
तलाशे-सकूने तबीयत कहाँ तक?

दीदारकी तलबके तरीक़ोसे बेखबर।
दीदारकी तलब है तो पहले निगाह माँग॥

जो चाहना है चाह मगर कायदेके साथ।
जो माँगना है माँग मगर राह राह माँग॥

निशानेराह हाथ आया तो किससे? सिर्फ उल्फतसे।
कमाले-रहबरी पाया तो किसमें? सिर्फ रहजनमें॥

आओ, फिर मौक़ा है, कुछ इसरारकी बातें करें?
सूरते-मन्सूर बहकें, दारकी बातें करें॥

बयाने-राजेदिलकी ख्वाहिशें और वोह भी मिम्बर पर?
खबर भी है? यह बातें दारपर कहनेकी बातें हैं॥

कोई दोनों जहाँसे हाथ उठा बैठा तो क्या परवा?
तुम इन मोलो भी सस्ते हो, तुम इन दामो भी अरजाँ हो॥

दिल और तेरे खयालसे राहत न पा सके।
शायद मेरे नसीबमें राहत नहीं रही॥

इसे भी ख़ुश नज़र आया, उसे भी ख़ुश नज़र आया।
तेरे ग़ममें ब-हाले शादमाँ कर दी बसर मैंने ।।

मुनासिब हो तो अब परदा उठाकर।
हमारा शक बदल डालो यक़ीसे ।।

बेख़बर ! कारेख़बर मुश्किल नहीं।
बेख़बर हो जा, ख़बर हो जायगी ।।

जो वोह मिलता नहीं है आप खो जा।
कि इक यह भी तरीक़े-जुस्तजू है ।।

तेरे होते मेरी हस्तीका क्या ज़िक्र ?
यही कहना बजा है "मैं नहीं हूँ" ।।

आज वोह दिन है कि इक साक़ीके दस्ते-ख़ाससे।
पी और इतनी पी कि मैं हक़दारे-कौसर हो गया ।।

याराए-ज़ुहदो-ताबदिरअ़ कुछ तलब न कर।
तौफ़ीक़ हो तो सिर्फ़ मजाले-गुनाह माँग ।।

जो अहलेहरम दरपये-दुश्मनी हैं।
तो परवा नहीं, आस्ताँ और भी हैं ।।

आ, मगर इस क़दर करीब न आ।
कि तमाशा मुहाल हो जाये ।।

जब रुख़ेमक़सदसे इक परदा उठा।
और ला-तादाद परदे पड़ गये ।।

अचानक नज़्ले-बला[1] हो गया।
यकायक तेरा सामना हो गया॥

इन्सानकी बदबख़्ती अन्दाज़से बाहर है।
कम्बख़्त ख़ुदा होकर बन्दा नज़र आता है॥

बन्दापरवर! मैं वोह बन्दा हूँ कि बहरे-बन्दगी।
जिसके आगे सर झुका दूँगा ख़ुदा हो जायगा॥

२४ मई १९५२ ई०]

आबिद

---

[1] आपदाका आगमन।
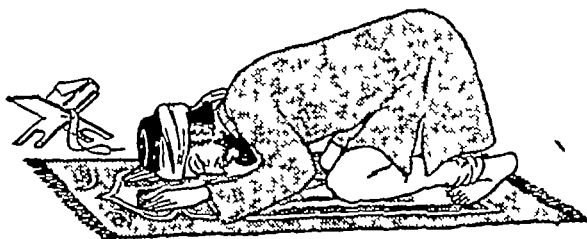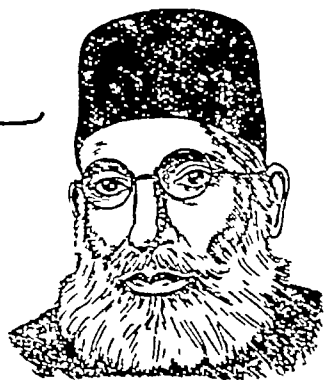
सैयद फज़लुलहसन 'हसरत' उन्नाव ज़िलेके मोहाना कसबेमे १८७५ई० मे उत्पन्न हुए, और १९०३ ई०में आपने अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटीसे बी० ए० पास किया।

'हसरत' कट्टर और धार्मिक मुसलमान थे। नमाज़ और रोज़ेके सख्त पाबन्द थे। ओलियाओके[1] मुरीद थे। फिरगी महल लखनऊके पीरे-खानकाहके हाथपर आप बैत[2] कर चुके थे, और इतनी श्रद्धा-भक्ति रखते थे कि अपने अन्तिम दिनोमे आप फिरगी महल आ गये थे। यही ता० १३ मई १९५१को आपकी मृत्यु हुई। मृत्युसे पहले आपने केवल यही अभिलाषा प्रकट की, कि आपका भी प्रतिवर्ष पीरे-खानकाहके साथ उर्स[3] किया जाय। आप अरसेसे प्रतिवर्ष हज-यात्राको भी जाया करते थे। किसी भी किस्मका नशा नही करते थे, यहाँतक कि तम्बाकूसे भी परहेज था।

मुसलमानोके हितके लिए जीना और मरना जीवनका मुख्य ध्येय समझते थे। इस्लामके लिए आपके हृदयमे दहकती हुई ज्वाला थी,

---

[1]पहुँचे हुए फकीरोके, [2]ईमान ला चुके थे, उनके भक्त हो गये थे।
[3]समाधि पर धार्मिक गायन आदि।

एक थे। आप लडाई समाप्त होनेके वाद छोडे गये। फिर काग्रेस और खिलाफतका गठ-वन्धन हो जानेपर असहयोग आन्दोलनमे आप जेल गये और कुछ दिनो वडे सरगर्म कार्य-कर्त्ता रहे, किन्तु साम्प्रदायिक मनोवृत्ति होनेके कारण आप १६२४के हिन्दू-मुस्लिम-सघर्षके वाद सदैव-को देशोपयोगी कार्योसे पृथक हो गये और मुस्लिमलीग-जैसी साम्प्रदायिक सस्थासे रिश्ता जोड लिया। आप मुस्लिमलीगके टिकटपर ससदके सदस्य निर्वाचित हुए। पाकिस्तानी आन्दोलनके पक्के हिमायती थे। लेकिन भारत-विभाजन होनेके वाद आप पाकिस्तान न जाकर भारतमे ही रहे, और निर्भीक होकर मुसलमानोके हितोमे विचार व्यक्त करते रहे।

आप स्वभावत उग्रविचारक और विद्रोही स्वभावके थे। पढते समय यूनिवर्सिटीमें, काग्रेसमे, मुस्लिमलीगमें, ससदमें, हर जगह विद्रोहका झण्डा वुलन्द रखते थे। यहाँतक कि पाकिस्तानके प्रवल अग होते हुए भी आपकी मि० जिन्नासे पटरी नही वैठती थी। यही कारण है कि आप राजनैतिक क्षेत्रमें केवल योद्धा वने रहे, सचालन-सूत्र आप कभी हस्तगत नही कर सके।

'हसरत'के राजनैतिक विचारोसे लोगोको मतभेद हो सकता है, लेकिन उनकी शायराना अज़मत और मानवताको सभी आदर और सराहनाकी दृष्टिसे देखते है। शायरीमे जो उनका स्थान है, उसका परिचय तो आगे मिलेगा ही, परन्तु उन्होने प्राचीन शायरोका चुना हुआ कलाम पचासो भागोमें प्रकाशित किया। जिससे उन शायरोका कलाम नष्ट होनेसे वच गया। यदि 'हसरत' शायर न भी होते तो भी यही एक कार्य उनकी ख्यातिके लिए वहुत वडा कार्य था।

साहित्यिक होनेके अतिरिक्त हसरत वहुत अच्छे इन्सान थे। जिससे जो सम्वन्ध एक वार हो गया, उसे जीवनभर निभाया। वहुत खुश-मिज़ाज, सुलह-कुल और सादा वज़अ-कतअके वुज़ुर्ग थे। शेरवानी, तुर्की टोपी,

शरई पायजामा उनका मखसूस लिबास था। दूरका चश्मा लगाते थे। पढते वक्त चश्मा उतार लेते थे। कद छोटा, रग साफ, आँखे बडी, चेहरे-पर चेचकके दाग, आवाज़ बारीक। भारत-विभाजनके बाद कुछ उर्दू पुस्तकोकी तलाशमें मै दिल्ली गया था क्रि वही आपके दर्शन हो गये। वहुत अखलाक और मुहब्बतसे पेश आये। मेरे यह निवेदन करनेपर कि मै आपका कलाम चयन कर रहा हूँ, मगर चाहता हूँ कि एक अपना शेर अपने दस्तेमुबारकसे डायरीमें लिख दे, आपने सहर्ष यह शेर लिख दिया—

पढिये इसके सिवा न कोई सवक।
"ख़िदमते-खल्क[1]-ओ-इश्क़े-हज़रते-हक[2]॥"

डायरीको पढता हूँ और सोचता हूँ कि 'हसरत' तो चले गये मगर कितनी वडी नसीहत अता फर्मा गये—

ख़िदमते-ख़ल्क-ओ-इश्के-हज़रते-हक

१३ मई १९५१को ७५ वर्षकी आयुमें आपका निधन हो गया, और अनवरबागमें अपने पीरेमुर्शिदके पास आपको समाधि मिली।

हसरतकी शायरी—

'हसरत' सिर्फ गज़लगो शायर थे, और यही उनकी सबसे वडी विशेषता है। न तो वे कभी आध्यात्मिक रूपी तत्त्व-चर्चाओमे उलझे, न कभी दार्शनिक गुत्थियोको सुलझानेका प्रयत्न किया। उन्होने केवल वही वोल वोले जो उनके जीवनसे सम्बन्धित थे।

हसरतको जो ख्याति और सर्वप्रियता मिली, वह वहुत कम लोगोको

---

[1]ससार-सेवा, [2]सत्यसे प्रेम।

नसीब होती है। जिन शायरोने मृत्युशैयापर छटपटाती गज़लमें जीवन सचार करके उसे दर्शनीय और गौरवपूर्ण वनाया, उनमें-से एक आप भी है।

'हसरत'का शायरीमे न तो कोई प्रतिद्वन्द्वी था, न उन्हे कभी अपने समकालीन शायरोसे तू-तू, मैं-मैंसे वास्ता पडा। वे छोटोंसे आदर और बड़ोसे सदैव स्नेह पाते रहे। उनका शायराना रग और व्यक्तित्व दोनो ही उच्च थे।

'हसरत'की शायरीमें कृत्रिमता नही, स्वय उनके जीवनके अनुभव है। उर्दूशायरीमें यह एक बहुत वड़ा दोष पाया जाता है कि वह वास्तविकतासे कोसो दूर है। जिन शायरोने कूचये-इश्कमें कभी कदम नही रखा, जो नही जानते कि आँख लगनेसे कैसी पीडा होती है, वे भी अपनी शायरीमें मजनूँ और फरहादके उस्ताद नजर आते है। जो जिन्दगीभर जाहिदे-खुश्क रहे, कभी एक बूँद सुरा हलकके नीचे उतारनेका अवसर नही मिला, वे भी अपनेको मयखानेका इमाम घोषित करते है। जो सारी जिन्दगी नमाज़-रोज़ेमे गँवाते रहे, हज-यात्राको सरके बल जाते रहे, वे शायर भी काबा-ओ-हश्रकी खिल्लियाँ उडाते रहे है।

इसका कारण यही है कि उर्दू-शायरीके महलका निर्माण इश्क और शरावके गारेसे हुआ है। गज़लमें शराबो-इश्कके अतिरिक्त और कुछ है ही नही। अत हर व्यक्ति जो शायर वनना चाहता है, उसे शराबो-इश्कके गीत गाने ही पडते है। चाहे उसके जीवनमें इनसे दूरका भी लगाव न हो।

उर्दू-शायरोके जीवन-परिचयमें अक्सर यह पढनेमे आता है कि वे ९-१० वर्षकी आयुमे ही शेर कहने लगे थे। भला यह भी कोई उम्रमें उम्र है, जिसमें इश्क सम्बन्धी किसी भी बातका अनुभव हो सके। फिर भी शायरीकी परम्पराके अनुसार इन बाल-कवियोके कलाममे हुस्न, माशूक, रकीब, दरवान, हरजाई आदि सभी देखनेको मिलते है। माँ-

वापके अत्यन्त प्रयत्न करनेपर भी दूध पीनेके लिए भी जिनकी नीद उचाट नही हो पाती, वे भी अपने आईनए-कलाममें गमे-हिज्राँमें रात-रातभर रोते-बिसूरते नज़र आते हैं।

तात्पर्य यह है कि वे अबोध किशोर जो प्रेम सम्वन्धी अनुभवोसे शून्य हैं, वे भी उर्दू-परम्पराका सहारा लेकर कल्पना क्षेत्रमे आशिक बने मजनूँ की तरह घूमते हैं। जो नही जानते कि माशूक है किस मर्ज़की दवा, वे भी माशूकोके हाव-भाव, नख़रे-गमज़े आदिको इस ढगसे नज़्म करते है कि मालूम होता है इश्ककी सभी मज़िलें तै कर ली है।

उर्दूमें ऐसे ही अनुभवहीन, शायरोका इश्किया कलाम पाया जाता है। 'हाली' जैसा शायर इसी दूषित प्रथाके कारण अपने आपको वर्षों धोखा देता रहा। इस धोखे-धडीके सम्बन्धमें हाली लिखते है--

"शायरीकी बदौलत चन्द रोज़ झूठा आशिक वनना पडा। एक ख़याली माशूककी चाहमे दश्तेजुनूँ (उन्माद-मार्ग)की वह ख़ाक उड़ाई कि कैस-ओ-फरहादको गर्द कर दिया। कभी नालये-नीमशबी (रात्रिमें बिलखते हुए)से रब्बेमसकन (ईश्वरासन)को हिला डाला, कभी चश्मेदरियावार (आँसुओ)से तमाम आलमको डुवो दिया। आहो-फुगाँके ज़ोरसे कर्रोबियाँके कान वहरे हो गये। शिकायतोकी बौछारसे ज़माना चीख़ उठा। तानोकी भरमारसे आसमान चलनी हो गया। जब रश्कका तलातुम (ईर्ष्याका वेग) हुआ तो सारी ख़ुदाईको रकीब (प्रतिद्वन्द्वी) समझा। यहाँतक कि आप अपनेसे बदगुमान हो गये। . वार-हा तेगेअब्रू (भवें-रूपी तलवार)से शहीद हुए और वार-हा एक ठोकरसे जी उठे। गोया ज़िन्दगी एक पैरहन (वस्त्र) था कि जव चाहा उतार दिया और जव चाहा पहन लिया। मैदानेकयामतमे अक्सर गुज़र हुआ। वहिश्त-ओ-दोज़ख़की अक्सर सैर की। वादानोशी (शराव पीने) पर तो खुम-के-खुम लुढा दिये और फिर भी सैर (सन्तुप्ट) न हुए। . . कुफ़्रसे मानूस और ईमानसे वेज़ार रहे। खुदासे शोख़ियाँ की।

२० वर्षकी उम्रसे ४० वर्षतक तेलीके बैलकी तरह इसी एक चक्करमे फिरते रहे और अपने नज़दीक सारा जहान तय कर चुके। जब आँख खुली तो मालूम हुआ कि जहाँसे चले थे, अबतक वही हैं।"[1]

'हसरत'की सबसे बडी विशेषता यही है कि उन्होने अपनेको इस धोखे-जालमे नही फँसाया। स्वय भी सच बोले और दूसरोको भी सच बोलनेके लिए प्रोत्साहित किया। 'हसरत'का प्रेम मानवी-प्रेम है। उन्होने ईश्वरकी आडमे प्रेमका बखान करके न तो भक्त बननेकी कभी चेष्टा की और न कभी दार्शनिक और आध्यात्मिक बननेकी भूल की। उन्होने केवल इसी दुनियाके प्रेमका बखान किया है।

हसरत एक सफल प्रेमी थे। अत उनके कलाममे हिज्र, नाले, नाकामी, बेऐतनाई आदिकी कैफियतोका बयान बहुत कम मिलता है, और यत्र-तत्र जो थोडा-बहुत मिलता है, वह उर्दू-परम्पराके हौज़मे जी बहलानेके लिए कूद पडनेके कारण मिलता है।

हसरतका जीवन इश्क, तसव्वुफ और राजनीतिका सगम रहा है। इश्ककी धारा उनके यहाँ अबाध गतिसे प्रवाहित रही है, और एकाकार हो गई है।

तसव्वुफकी झलक यत्र-तत्र इसलिए मिलती है कि 'हसरत' धार्मिक व्यक्ति थे। नमाज़-रोज़ेके सख्त पाबन्द, अर्से दराज़से हजके यात्री और सूफियोंके श्रद्धालु ऐसे भक्त कि फिरगी महलके एक सूफी बुजुर्गके हाथपर बैत कर चुके थे। प्रतिवर्ष अजमेर, प्रानकिलयर, बहराइच आदि सूफियाए-करामके उर्सोंमे शरीक होते थे। यही नही, उन्होने अपनी जीवन-लीला भी फिरगी महलकी दरगाहमें समाप्त की। वही उनको समाधि मिली और प्रतिवर्ष उनकी समाधिपर भी उनकी अन्तिम अभिलाषाके अनुसार उर्स होते रहनेकी व्यवस्था हुई। इसी श्रद्धा-भक्तिके कारण उनके कलाममें

---

[1]शेरोशायरी पृ० २७५-७६।

यत्र-तत्र सूफियाना शेर नज़र आते है। लेकिन उनका यह रग फीका है। और फीका होना लाज़िमी भी था। गुरुजनोकी श्रद्धा-भक्तिमे आनन्द तो मिलता है, पर प्रेयसी-मिलनकी प्रतीक्षामें जो उत्कठा, तडप, बेचैनी, और गर्मि-ए-मुहब्बत होती है, वह श्रद्धा-भक्तिमे नही। कर्तव्य पूर्ण करने और हृदयकी उमगमे जो अन्तर है, या भाई और पतिके साथ नारीके स्नेह और चाहतमे जो अन्तर है, वही अन्तर 'हसरत'की आशिकाना और सूफियाना शायरीमें है।

'हसरत'की राजनैतिक शायरी तो और भी फीकी और बेजान है। जनाब खलीलुलरहमान आज़मी लिखते है—

"हसरतने बार-हा जेलमे चक्की पीसी और पुलिसके कोडे खाये। लेकिन उनकी सियासी (राजनैतिक) शायरी रस्मी और फुसफुसी है। . क्या वजह है कि उनकी शायरीमे उनकी ज़िन्दगीका यह पहलू पूरे तौरपर अपना अक्स न दिखा सका? यह सवाल दरअस्ल बडा अहम (आवश्यक) है और वाकई हैरत होती है कि वही 'हसरत' जिनकी ज़िन्दगीमें हिन्दोस्तानने कितनी करवटे ली, काग्रेसकी इब्तदाई तहरीके (प्रारम्भिक आन्दोलन) आज़ादीसे लेकर जगेअजीम, कहते-बगाल, तकसीमेहिन्द, फिसादात और न जाने कितने वाकयात जिन्हे हिन्दोस्तानके बिगाडने और बनानेमे बडा दखल है, 'हसरत' ही के ज़मानेमे पेश आये और खुद 'हसरत' उसमे ज़ाती तौरपर शरीक रहे, लेकिन 'हसरत'की शायरीमे इन वाकयातकी गरमी, खून और धमक कही महसूस नही होती। उन्होने तिलक, डा० अन्सारी या बाज़ सियासी रहनुमाओ (राजनैतिक नेताओ)के बारेमे जो नज्मे लिखी है, वोह बहुत रस्मी अन्दाज़मे लिखी गई है, जैसे किसीका सेहरा लिख दिया जाये। वोह नक्काद (आलोचक) जो किसी शायरपर लिखते वक्त महज़ उसके ज़मानेके हालात और समाजी पसेमज़र (सामाजिक स्थिति)पर ही निगाह रखते है, यहाँ बडी दुश्वारीमें मुब्तिला हो जायेंगे। आखिर 'हसरत'के बारेमे

क्या फतवा सादिर किया जाये ? क्या वे रजअत पसन्द (दकियानूसी, पुराने खयालके) शाइर थे, कि ज़मानेकी तरफसे आँख बन्द करके अपनी महबूबा (प्रेयसी)की यादमे मुब्तिला रहे ? क्या वे कौमी तरक्की और आज़ादीकी तहरीकमे दिलसे हिस्सा नही ले रहे थे ? मेरा ख़याल है 'हसरत'का बडे-से-बडा मुख़ालिफ भी इस बातकी जुरअत नही कर सकता कि उनके खुलूस (नीयत)पर शुबहा करे। उन्होने हिन्दुस्तानकी जगे-आज़ादीमे जो कुर्बानियाँ दी है, उनका ऐतराफ न करना बडी बेईमानी होगी। लेकिन उनकी शायरीको पढते और उसपर राय देते वक्त ज़रा सब्रसे काम लेना पडेगा। 'हसरत' मुखलिस (साफ, निर्मल) थे, सच्चे थे। रजअत पसन्द नही, बल्कि बडे तरक्की पसन्द और इन्सानियतके लिए बडे मुफीद थे। लेकिन शायरीपर इन्सानके उस शऊरका असर पडता है, जो उसके मिज़ाज और उसकी शख्सियत (व्यक्तित्व)का परवरदा (पाला हुआ, पोसा हुआ) होता है। अगर कोई नक्काद (आलोचक) शायरके मिज़ाजको समझ ले और उसके शऊरका तजज़्या (परख) कर ले तो उसकी शायरीके महरकात (उभारो) और उसके मौज़ूआत (कविता-विषय)की नौइयतको बहुत आसानीसे समझ सकता है। दर-अस्ल खारजी दुनियामें जो कुछ हो रहा है, उससे तो इन्कार मुमकिन ही नही, लेकिन ख़ारजी दुनियाका अक्स हर शायरपर उसके शऊरके ऐतबार ही से पडता है। एक आदमी इनकलाबकी जगमें एक मुखलिस (सच्चे) सिपाहीकी हैसियतसे काम करनेके बावजूद आज़ादी और इनकलाबके इदराक (सूझ-बूझ)से महरूम होता है, और उसके शऊरमें उसे जज़्ब करने और उसकी तहोतक पहुँचनेकी सलाहियत (क्षमता) नही होती। वह अपने जिस्मो-जानको उस राहमें कुर्बान करना तो ज़रूरी समझता है, लेकिन उसे यह पता नही होता कि यह राह किस तरह मुतय्यन (निश्चित) की जाये। इसमें कौन-कौनसे मोहरे और चालें है। किन हथियारोंसे काम लिया जाये कि दुश्मनपर फतह हासिल हो। कब कदम फूंककर

रखना है और कब तेज़गामीकी ज़रूरत है। उसे तो सिर्फ आज़ादीसे मुहब्बत है, और उसका वोह एक जाँनिसार सिपाही है। इस सिपाहीके खलूसकी भी तारीफ की जायेगी, लेकिन उसके शऊर और इदराक (बुद्धि और समझ)पर भरोसा नही किया जा सकता। एक आदमी जो आज़ादी और इन्कलाबके लिए इतनी कुर्बानियाँ नही दे सकता, लेकिन वह उससे अलग रहते हुए भी उसे अपने शऊरमें जज़्ब करनेकी सलाहियत (क्षमता) रखता है और साथ ही साथ उसके अन्दर खलूस है तो वह इस जज़्बे (भाव)को शिद्दतसे महसूस कर सकता है, और उसके इदराक (सूझ-बूझ)पर हम ज्यादा भरोसा कर सकते है। 'हसरत' और 'इकबाल' दोनोकी शायरीको पढिये तो पता चलेगा कि सिर्फ शख्सियतोंके फर्कने एक सियासी (राजनैतिक) आदमीको मुहब्बतका शाइर और गैर सियासी तथा गोशानशीन शख्सको कौमोमुल्क आज़ादी-ओ-सियासत और इन्सानियतका शायर बनाया। 'हसरत'की सच्चाईमे कोई शुबहा नही, लेकिन उनकी शख्सियतमें वोह अन्सर(तत्त्व) नही थे, जो एक शख्सको मदीए, सियासतदाँ, मुफक्कर, फलसफी और मसायलेहयात (जीवन-गुत्थियो)का इदराक रखनेवाला बना देते है। उनकी सियासी ज़िन्दगीसे जो लोग वाकिफ है, वे अच्छी तरह जानते है कि 'हसरत' एक सियासी कारकुन (कार्य-कर्त्ता) होनेके बावजूद सियासी सूझ-बूझ नही रखते थे। वोह पुरखुलूस (सच्चे) मगर जज़्बाती (भावुक) आदमी थे। बहुत जल्द किसीके बारेमें कोई राय कायम कर लेते थे। यही वजह है कि सियासतमें वोह हमेशा नाकाम रहे। हरजमायतमे हिज़्बे मुखालफत (विद्रोहीवर्ग)की सरदारी उन्होने की और हर तजवीज़पर मुखालफतमें धुआँधार तकरीरें करनेके लिए वे मशहूर थे। किसी बातको ठण्डे दिलसे गौर करना, मसालह (अच्छे-बुरे पहलुओ) पर नज़र रखना, ज़ब्तो-इस्तकलाल (धैर्य और सजीदगी), हालात और वक्तकी रफ्तारको पहचानना और उसके तकाज़ोको समझना, मुनासिब मौकेपर कदम उठाना, यह

'हसरत'की सियासतमे शामिल न था। यही वजह है कि हम उन्हे एक सच्चा और वफादार सिपाही कह सकते है। लेकिन वा-शऊर सियासतदाँ नही। ज़ाहिर है कि सिपाही लड तो सकता है, लेकिन जगपर वा-शऊर तरीकेसे नज़र नही डाल सकता। वल्कि उसको तो अपनी कठिन मज़िलोमें अपने माज़ी (भूतकाल) की सुनहरी यादके सहारे ही दिल वहलाना होगा और मेरा ख़याल है कि हसरत जो वुढापेतक इश्किया शायरी करते रहे, उसकी सवसे वडी वजह यही है।"[1]

'हसरत'की शायरी उनकी आप वीती जीवनी है। यही उनकी शायरीकी सवसे वडी विशेषता है और यही उनकी शायरीका दोष भी। 'हसरत' एक अपने ही समाज और खान्दानकी युवतीसे प्रेम करते है। उसके लिए सामाजिक और खान्दानी रीतिरिवाजोसे सघर्ष करते है। इसी अवधिमे प्रेयसीसे छेड-छाड और आँख-मिचौनी चलती रहती है, और अन्तमें 'हसरत' उसे अपनी जीवन सगिनी वना लेनेमे कामयाव हो जाते है।

प्रेयसीको पत्नी वना लेनेपर इश्क मर जाता है। जो प्रेयसी कभी ईश्वर समझी जाती थी, वह शादी हो जानेपर दासी हो जाती है। शादी होनेपर प्रेयसीका वह वुलन्द मर्तवा कायम नही रह सकता, जो पहले होता है। फूल केवल दूरसे निहारनेके लिए है, सूँघनेपर उसका गौरव नष्ट हो जाता है।

हसरतका इश्क शादी होनेके वाद कवतक स्थिर रहता ? अधिक-से-अधिक ८-१० वर्ष। यानी हसरतकी २५-३० वर्षकी उम्रतक। हसरतकी प्रेयसी जो शादीके वाद 'वेगम हसरत' कहलाने लगी, उसे 'हसरत'के इश्किया अशआर सुननेके वजाय चूल्हे-चक्कीसे अधिक सरोकार हो गया।

---

[1]निगार जनवरी १९५२ पृ० ९३।

'हसरत'से ज्यादा अब वह बाल-बच्चोको चाहने लगी। उनके
पोषण, शिक्षा-दीक्षाकी चिन्तामे दिन-रात घुलने लगी।

यही कारण है कि 'हसरत'की इश्किया शार्यरीमे एकरूपत
आती है। यानी उन्हे जो अनुभव जवानीमें हुए, उन्होको बुढापेत
करते रहे। हसरतकी शायरी जवानीकी शायरी है। उनकी श
जवानीके उतारके साथ उतार आता गया है। होना तो यह चा
कि उम्रके साथ-साथ नये-नये अनुभवोको अपनी शायरीके ब
अभ्यासके साथ नित नये ढगसे सँजोते और तराशते जाते।
ऐसा नही हुआ, और इसका कारण केवल यही हो सकता है कि ज
बाद उनका इश्क भी बूढा हो गया। और उनका राजनैतिक जीवन
सघर्षमय हो गया कि फिर वे दिलकी शायरी न करके रस्मी तौरपर
करते रहे। यही वजह है कि उनकी शायरी भी उम्रके साथ बूढ
चली गई, और उनकी शायरीमें उत्तरोत्तर फीकापन आता चला

वे ज़िन्दगीभर एक ही मौज़ूँसे लिपटे रहे। जवानीके उफा
बोल, बोल गये—

याद कर वह दिन कि तेरा कोई सौदाई न था।
बा-वजूदे-हुस्न तू आगाहे-रअनाई न था॥

वही बुढापे (१९४१ ई०)मे भी बोलते रहे—

जब सिवा मेरे न था कोई निशाना तेरा।
याद है मुझको अभीतक वोह ज़माना तेरा॥

आज़मी साहब फर्माते हैं—

"हसरतके पहले दीवानसे उनके कलामका मुतालआ शुरू
तो तीसरे-चौथे दीवानतक पहुँचते-पहुँचते हसरत कुछ मद्धम होन
होते है, ओर ग्यारहवें-बारहवे तक पहुँचते-पहुँचते तो वे बिल्कु

उनका रोल तकरीबन खत्म हो गया था। कभी-कभार जो गज़लें कहते थे, वह रस्मी और बेजान होती थी। जिन्हें लोग तबरुक्कन पढते थे।"[१]

हसरतका शायरीमे मर्तबा—

'हसरत' मौजूदा गज़लगोईके बानी-मुबानी समझे जाते है। आपने उर्दू-गज़लमें उस समय जीवन-सचार किया, जब कि वह मृत्युशैयापर पडी छटपटा रही थी। न उसमे युगके साथ चलनेकी शक्ति रही थी, न अपनी ओर आकर्षित करनेकी क्षमता। वह बिस्तरे-मर्गपर पडी हुई कराह रही थी, और सन्निपात ज्वरमें इस तरह बड-बडा रही थी—

गिरे होते उलझकर आस्तांसे।
चले आते हो घबराये कहांसे ?

हमीं झूठे है, दगाबाज़ हमीं है, साहब।
हम सितम करते है और आप करम करते हैं॥

बाग़बां कलियां हो, हलके रगकी।
भेजना है एक कमसिनके लिए॥

छुपा-छुपाके नजर-बाज़ियां हो ग़ैरोसे।
हमींसे आँख चुराना ! ज़रा इधर देखो !!

'अमीर' इतना न छेडो उसको सरेशाम।
कि शब भर प्यार करनेको पडी है॥

वोह फूलवालोंका मेला वोह सैर याद है 'दाग़'।
वोह रोज झरनेपै जमघट, परी जमालोका॥

---

[१]निगार जनवरी १९५२ पृ० ११०।

गुद-गुदाया जो उन्हे नाम किसीका लेकर।
मुसकराने लगे वोह मुंहपै दुपट्टा लेकर॥

ईदका दिन है परीज़ाद है सारे घरमें।
राजा इन्दरका अखाडा है हमारे घरमें॥

परदा उठाके मुझसे मुलाकात भी न की।
रुख़सतके पान भेज दिये बात भी न की॥

सुबहको आये हो भूले शामके।
जाओ भी अब तुम रहे किस कामके॥
हाथापाईसे यही मतलब भी था।
कोई मुंह चूमे कलाई थामके॥

वस्लकी रात चली एक न शोख़ी उनकी।
कुछ न बन आई तो चुपकेसे कहा मान गये॥

पान बन-बनके मेरी जान कहाँ जाते है?
यह मेरे कत्लके सामान कहाँ जाते है॥

क्यो मुझसे है यह मुफ्तकी तकरार, क्या हुआ?
अच्छा जो मैंने कर ही लिया प्यार, क्या हुआ?

जब वोह बाहे गलेका हार नहीं।
दूरका प्यार कोई प्यार नहीं॥

वोह एक हम कि जो चाहा किया विसालकी रात।
वोह एक तुम कि तुम्हारी हयासे कुछ न हुआ॥

तुमने एक बोसेपै 'मुज़तर' दिले-मुज़तर वेचा।
यार ईमानकी ये है कि वड़े दाम लिये॥

कहते हैं "वस्लमें तुम छेडे ही जाते हो मुझे।
गालियाँ कुछ अभी पड जायें तो क्या बात रहे" ॥

किसीसे वस्लमें सुनते ही जबान सूख गई।
"चलो हटो भी, हमारी जबान सूख गई ॥"

आँखें दिखलाते हो जोवन तो दिखाओ साहब।
वोह अलग बाँधके रक्खा है जो माल अच्छा है ॥

जले हैं ग़ैर क्या-क्या, वोह जो ख़िलवतसे मेरे निकले।
परेशाँ, बाँधकर जूडा, दुपट्टा ओढकर उलटा ॥

छेड़ देना था कि भरमार थी दुश्नामोकी।
एक सीग़ा था कि फर-फर उसे गरदान गये ॥

इस तरहकी अश्लील वकवास जब कोई रोगी प्रारम्भ कर दे, तो घरवालोके अतिरिक्त भला किसमे साहस है, जो उसकी परिचर्या या मिजाजपुरसीके लिए नज़दीक आ सके। मृत्युके समीप जाती हुई गजलको सबसे घातक चरका 'हाली'के नज्म आन्दोलनसे लगा। जब घरका भेदी प्राण लेनेपर उतारू हो जाय, तब उसके बचनेकी आशा भी क्या की जा सकती है?

'हसरत'ने ठीक ऐसे सकटकालमे गज़लको सहारा दिया। 'दाग' और 'अमीर' मीनाईकी चिकित्सासे जो वड-वडाहट प्रारम्भ हो गई थी, उसे 'हसरत'ने प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा समाप्त ही नही किया, अपितु ऐसा कायाकल्प किया कि उसे अमरत्व प्राप्त हो गया। इस कायाकल्पका श्रेय केवल 'हसरत'को है, यह कहना न्यायसगत नही होगा। 'हसरत'की शायरीका जब युग प्रारम्भ हुआ, तब 'शाद' अज़ीमाबादी, 'यास' अज़ीमाबादी (अब नाम यगाना-चगेज़ी) और लखनवी शायर सफी, अज़ीज़, आरज़ू, जलील, असर, साकिब, महशर, तथा असगर गोण्डवी, फानी

बदायूनी आदि बडी तनदिहीसे गज़लकी सार-सँभाल कर रहे थे, और उस पतनोन्मुखी वातावरणमे भी उनके मुँहसे सुरुचिपूर्ण शेर निकल रहे थे।

'हसरत' और उनके समकालीन उक्त शायरोने सचमुच गज़लको जीवनदान दिया। उसे भद्रसमाजके उपयुक्त बनाया और युगके साथ चलते रहनेकी शक्ति प्रदान की।

'हसरत'ने उर्दू गज़लकी पुरानी रवायतोको नये साँचेमें ढाला। नई तराश-खराश की। उसे आकर्षक रूप-रग दिया। उनके कलाममे 'मुसहफी' जैसे कोमल और मधुर भाव और 'मोमिन' जैसी फारसी तरकीबोका समिश्रण एक अजीब लुत्फ पैदा कर देता है। लेकिन उनके यहाँ 'मीर' जैसा सोज़ो गुदाज़ नही है। स्वय भी फर्माया है—

'मीर'का शेवये-गुफ़्तार कहाँसे लाऊँ ?

और 'मीर'का शेवये-गुफ्तार बाजारमे बिकनेवाली चीज़ होता तो 'हसरत' भी खरीद लाते। मगर जो शेवये-गुफ्तार दिलमे चरका लगनेपर और जीवनभर खून रोनेसे आता है, उसे 'हसरत' क्योकर प्राप्त कर सकते थे? वे कामयाब आशिक थे। वे क्या जाने असफलता और निराशाके आनन्दको। उन्हे प्रेयसीकी यादमे सर फोडने और बिलख-बिलखकर रोनेकी लज़्ज़त कभी नसीब नही हुई।

'हसरत' 'तसलीम'[1] लखनवीके शिष्य थे। और 'मोमिन' स्कूलके तनहा यादगार। सो वह भी चल बसे। बकौल 'आसी' गाजीपुरी—

सुबह तक वोह भी न छोडी तूने ऐ बादेसबा!
यादगारे-रौनके-महफिल थी परवानेकी ख़ाक॥

---

[1]'तसलीम' 'तसनीम'के शागिर्द थे और 'तसनीम' 'मोमिन के शिष्य थे। 'मोमिन' 'तसनीम' और 'तसलीम'का परिचय-कलाम 'शेरोसुख़न' प्रथम भागमें दिया जा चुका है।

'हसरत' अवध प्रान्तीय और 'तसलीम' लखनवीके शिष्य होते हुए भी देहलवी रगके शायर थे। खुद भी फर्माया है—

'हसरत' मुझे पसन्द नहीं तर्ज़े-लखनऊ।
पैरो हूँ शायरीमें जनाबे 'नसीम'का॥

'हसरत'ने जिन 'नसीम' साहबका पैरो (अनुयायी) होनेका उल्लेख किया है, वह 'नसीम' देहलवीसे मुराद है। जो 'मोमिन'के शिष्य और 'हसरत'के उस्तादके उस्ताद थे। हसरतके उस्ताद 'तसलीम' लखनवी होते हुए भी सदैव देहलवी स्कूलके अनुयायी रहे।

'हसरत'के चन्द अशआरकी झाँकी—

मूसाने खुदाका जलवा तो देखना चाहा, लेकिन अपनेमे इतनी शक्ति और सामर्थ्य न जुटा सके, जो खुदाके जलवेको सह सकें। खुदा तो फिर भी खुदा है, लेकिन 'हसरत'की प्रेयसी भी इतनी महान है कि उसकी ओर देखनेका भी साहस नही होता—

मेरी निगाहे-शौक़का शिकवा नही जाता।
सोतेमें भी पाससे देखा नहीं जाता॥

'हसरत'का इश्क कितना बुलन्द और पवित्र है कि वे उसके आगे फिरदौसको भी हेच समझते हैं—

वल्लाह तुझे छोडके ऐ कूचये-जानाँ!
'हसरत'से तो फिरदौसमें जाया नहीं जाता॥

हमारा प्राणप्यारा जीवन सर्वस्व हमे विसार बैठा है, इसका कारण शायद यही है कि हमसे कोई अक्षम्य भूल हुई है। अन्यथा उसकी यह उपेक्षा हमपर कदापि न होती—

फिर और तग़ाफुलका सबब क्या है ख़ुदाया !
मैं याद न आऊँ उन्हें, ऐसा नहीं मुमकिन ।।

बच्चेकी तोतली और रसभरी वाणी सुनते-सुनते मन तृप्त नही होता। जी यही चाहता है कि बच्चा अपनी बाते बार-बार दुहराये जाय। इसीलिए ऐसा भाव धारण कर लिया जाता है कि हम उसकी बातें सुनना नही चाह रहे है। फलस्वरूप वह नई-नई अठखेलियो-द्वारा अपनी बातको बार-बार दुहराता है, और माँ-बाप आदि उसकी इस सरलताका आनन्द लूटते है। 'हसरत'की प्रेयसीकी भी यही आन्तरिक अभिलाषा है कि वह अपने प्यारेके प्यार भरे बोल बराबर सुनती रहे—

ख़ुद उसको मेरी अर्ज़े-तमन्नाका शौक है।
क्यों वरना यूँ सुने है कि गोया सुना नहीं ।।

भारतीय नारी पतिको ही परमेश्वर समझकर चारो ओरसे ध्यान समेटकर उसीकी हो रहती है। लेकिन पुरुषकी ओरसे उसे वह प्यार और सम्मान नही मिलता, जिसकी वह अधिकारिणी है। जो नारी जननी है, अम्बा है, सृष्टिकर्त्ता है, वह नारी भी ईश्वरका ही रूप है। पुरुष यदि कामुकताकी आँखें बन्द करके नारीके इस रूपका दर्शन करे तो फिर स्वर्ग और बैकुण्ठमें जानेकी ज़हमत गवारा क्यो की जाय? इसी पृथ्वीपर जन्म लेनेको विष्णु, ब्रह्मा, तरस उठें 'हसरत' इसी पवित्र भावना-को यूँ व्यक्त करते हैं—

हम क्या करें अगर न तेरी आरज़ू करें।
दुनियामें और भी कोई तेरे सिवा है क्या ?

अपने प्यारेकी यादमे दिन-रात लीन रहनेके अतिरिक्त और कुछ भी सुखकर नही है—

शब वही शब है, दिन वही दिन है।
जो तेरी यादमें गुज़र जायें ।।

इसी रगके दो शेर और—

सबसे मुँह मोडके राज़ी है तेरी यादसे हम।
इसमें इक शाने-फ़राग़त[1] भी है राहतके[2] सिवा॥

शाम हो या कि सहर याद उन्हींको रखनी।
दिन हो या रात हमें ज़िक्र उन्हींका करना॥

हसरतके यहाँ भी उर्दू ग़ज़लकी परम्पराके अनुसार रकीवका ज़िक्र आता है। मगर किस ख़ूबीके साथ? वे रकीवकी महफिलमें अपने हबीबकी बजा हरकतोको देखने या उसकी चौकसी करने नही जाते। वे तो केवल अपनी प्रेयसीके हमराह रहते है—

बज़्मे-दुश्मनमें भी दिल थामे हुए बैठा रहा।
ग़ैर मुमकिन है जहाँ ऐ शोख़! तू हो, मैं न हूँ॥

अक्सर लोगोने हसीन, मगर बेशऊर, युवतियोको रेलवे प्लेटफार्म या किसी दरियापर स्नान करते और कपडे बदलते देखा होगा। उनके फूहडपन और बेशऊरपनसे वहाँ खडे हुए शोहदे लुत्फ उठानेसे बाज़ नही आते--

तमन्नाने की ख़ूब नज़्ज़ारा-बाज़ी।
मज़ा दे गई हुस्नकी बेशऊरी॥

हसरतके दीवानमें इस तरहके गिरे हुए शेर स्थान न पाते तो उत्तम होता—

तुझमें कुछ बात है ऐसी, जो किसीमें भी नहीं।
यूँ तो औरोंसे भी दिल हमने लगा रक्खा है॥

---

[1] और न कुछ करनेकी शान; [2] चैनके।

बात तो 'हसरत' अपनी प्रेयसीसे यही कहना चाहते थे कि तू विश्वकी सुन्दरियोमें यकता है, तेरा कोई जवाब नही। मगर—"औरोसे भी दिल हमने लगा रक्खा है" कहकर अपनेको भौंरा साबित कर दिया और प्रेयसीको व्यर्थमें आशकित और वरहम कर दिया। इसी बातको 'मीर'ने इस खूबीसे व्यक्त किया है कि उनकी प्रेयसीके अनुपम सुन्दरी होनेके साथ ही 'मीर'के पारखी हृदय और सच्चे इश्कका परिचय मिलता है—

फूल, गुल, शम्सोकमर[1] सारे ही थे।
पर हमें उनमें तुम्हीं भाये बहुत॥

अब हम 'कुलियाते' हसरतसे चुनकर सभी रगके कुछ शेर सन्‌वार दे रहे है। ताकि पाठक हसरतकी शायरीके उतार-चढावका अनुमान लगा सके।

१८९३–१९०३ ई०

जो आना हो तो आओ बेतकल्लुफ।
यह अर्जे-जलवये-हैरत-फिजा[2] क्या ?

करते थे कभी हौसलये-तर्के-मुहब्बत।
अब सदमये-दूरी भी उठाया नही जाता॥
उम्मीद नहीं उनसे मुलाकातकी हरचन्द।
आंखोसे मगर शौके-तमाशा नहीं जाता॥

अल्लाहरी महरूमी, अल्लाहरी नाकामी।
जो शौक किया हमने सो खाम नजर आया॥
इस शग्लसे आंखोको दमभर जो नहीं फुरसत।
रोनेमें वह क्या ऐसा आराम नजर आया ?

---

[1]चांद-सूर्य, [2]जलवा देखनेके लिए प्रार्थना कबतक की जाय ?

कफ़समें सैयाद बन्द करदे, नहीं तो, बेरहम छोड ही दे।
यहाँ उम्मीदोबीममें[1] आख़िर रहेंगे हम ज़ेरेदाम[2] कबतक ॥

सताइये न मुझे यूँ ही दिलफ़िगार[3] हूँ मैं।
रुलाइये न मुझे ख़ुद ही बेक़रार हूँ मैं ॥
तेरा यह रग कि है बेसबब ख़फ़ा मुझसे।
मेरा यह हाल कि बेवजह बेकरार हूँ मैं ॥

हज़ारो बार छेडा, जोशिशेग़म-हाय-फ़ुरक़तने[4]।
हज़ारो बार आँसू आपके सरकी कसम निकले ॥

वोह जो बेचैन हुए देखके हालत मेरी।
हो गई और परेशान तबीयत मेरी ॥

छेडा है दस्तेशौक़ने[5], मुझसे ख़फ़ा है वोह।
गोया कि अपने दिलपै मुझे अख़्तियार है!

१९०३-१९१२ ई०

हम रहे याँ तक तेरी ख़िदमतमें सरगर्मे-नियाज़[6]।
तुझको आख़िर आशनाये-नाज़े-बेजा[7] कर दिया ॥

मानूस[8] हो चला था तसल्लीसे हाले-दिल।
फिर तूने याद आके बदस्तूर कर दिया ॥

किसे फ़ुरसत? तुम्हारी जुस्तजूके शौक़े-बेहदसे।
अभी हमने कहाँ ढूँढा, अभी हमने कहाँ पाया?

---

[1], [2]आशा और डरके जालमें कबतक फँसे रहेंगे? [3]भग्नहृदय; [4]विरह, कष्टोंके जोशने, [5]अभिलाषी हाथोंने, [6]नम्रप्रार्थी, [7]आवश्यकतासे अधिक सौन्दर्याभिमानी' [8]अभ्यस्त।

दयारेशौकमें मातम बपा है मर्गे-'हसरत'का।
वोह वज़ए-पारसा उसकी, वोह इश्के-पाकबाज़ उसका ॥

चल भी दिये वोह छीनके सब्रोकरारे-दिल।
हम सोचते ही रह गये यह माजरा है क्या ?

देखो जिसे, है राहे-फनाकी तरफ रवाँ।
तेरी महल-सराका यही रास्ता है क्या ?

इरादे थे कि उनसे हाले-दिल सब मिलके कहदेंगे।
मगर मिलनेपै हमसे आज होता है न कल कहना ॥

खुले न हमसे ख़मोशाने-आरज़ूकी ज़बाँ।
जो इत्तफाक भी हो, उनसे हमकलामीका ॥

अब तो उठ सकता नहीं आँखोसे बारे-इन्तज़ार[1]।
किस तरह काटे कोई लैलो-निहारे-इन्तज़ार[2] ॥
उनकी उलफतका यकीं हो उनके आनेकी उम्मीद।
हो यह दोनो सूरतें, तब है बहारे-इन्तज़ार ॥
उनके ख़तकी आरज़ू है, उनकी आमदका ख़याल।
किस कदर फैला हुआ है, कारोबारे-इन्तज़ार ॥

कमाले-ख़ाकसारीपर यह बेपरवाइयाँ 'हसरत'।
मैं अपनी दाद ख़ुद दे लूँ, कि मैं भी क्या कयामत हूँ ॥

हमपर भी मिस्ले ग़ैर हैं, क्यो महरबानियाँ ?
ऐ बदगुमाँ ! यह ख़ूब नहीं, बदगुमानियाँ ॥

---

[1]प्रतीक्षाका बोझ, [2]प्रतीक्षाके रात-दिन।

क़फ़समें सैयाद बन्द करदे, नहीं तो, बेरहम छोड ही दे।
यहाँ उम्मीदोबीममें[1] आख़िर रहेंगे हम ज़ेरेदाम[2] कबतक ॥

सताइये न मुझे यूँ ही दिलफ़िगार[3] हूँ मैं।
रुलाइये न मुझे ख़ुद ही बेक़रार हूँ मैं ॥
तेरा यह रंग कि है बेसबब ख़फा मुझसे।
मेरा यह हाल कि बेवजह बेक़रार हूँ मैं ॥

हज़ारो बार छेडा, जोशिशेग़म-हाय-फ़ुरक़तने[4]।
हज़ारो बार आँसू आपके सरकी कसम निकले ॥

वोह जो बेचैन हुए देखके हालत मेरी।
हो गई और परेशान तबीयत मेरी ॥

छेडा है दस्तेशौक़ने[5], मुझसे ख़फा है वोह।
गोया कि अपने दिलपै मुझे अख़्तियार है!

१९०३-१९१२ ई०

हम रहे याँ तक तेरी ख़िदमतमें सरगर्मे-नियाज़[6]।
तुझको आख़िर आश्नाये-नाज़े-बेजा[7] कर दिया ॥

मानूस[8] हो चला था तसल्लीसे हाले-दिल।
फिर तूने याद आके बदस्तूर कर दिया ॥

किसे फ़ुरसत ? तुम्हारी जुस्तजूके शौक़े-बेहदसे।
अभी हमने कहाँ ढूँढा, अभी हमने कहाँ पाया ?

---

[1], [2]आशा और डरके जालमें कबतक फँसे रहेंगे ? [3]भग्नहृदय; [4]विरह, कष्टोंके जोशने, [5]अभिलाषी हाथोंने, [6]नम्रप्रार्थी; [7]आवश्यकतासे अधिक सौन्दर्याभिमानी [8]अभ्यस्त।

दयारेशौकमें मातम बपा है मर्गे-'हसरत'का।
वोह वज़ए-पारसा उसकी, वोह इश्क़े-पाकबाज़ उसका॥

चल भी दिये वोह छीनके सब्रोकरारे-दिल।
हम सोचते ही रह गये यह माजरा है क्या ?

देखो जिसे, है राहे-फनाकी तरफ रवाँ।
तेरी महल-सराका यही रास्ता है क्या ?

इरादे थे कि उनसे हाले-दिल सब मिलके कहदेंगे।
मगर मिलनेपै हमसे आज होता है न कल कहना॥

खुले न हमसे खमोशाने-आरज़ूकी जबाँ।
जो इत्तफाक भी हो, उनसे हमकलामीका॥

अब तो उठ सकता नहीं आँखोसे बारे-इन्तज़ार[1]।
किस तरह काटे कोई लैलो-निहारे-इन्तज़ार[2]॥
उनकी उलफतका यकीं हो उनके आनेकी उम्मीद।
हो यह दोनो सूरतें, तब है बहारे-इन्तज़ार॥
उनके ख़तकी आरज़ू है, उनकी आमदका ख़याल।
किस क़दर फैला हुआ है, कारोबारे-इन्तज़ार॥

कमाले-ख़ाकसारीपर यह बेपरवाइयाँ 'हसरत'।
मैं अपनी दाद ख़ुद दे लूँ, कि मैं भी क्या कयामत हूँ॥

हमपर भी मिस्ले ग़ैर है, क्यो महरबानियाँ ?
ऐ बदगुमाँ ! यह खूब नहीं, बदगुमानियाँ॥

---

[1]प्रतीक्षाका बोझ, [2]प्रतीक्षाके रात-दिन।

भुलाता लाख हूँ लेकिन बराबर याद आते हैं।
इलाही तर्के-उलफतपर वोह क्योंकर याद आते हैं॥
हक़ीकत खुल गई 'हसरत' तेरे तर्के-मुहब्बतकी।
तुझे तो अब वह पहलेसे भी बढ़कर याद आते हैं॥

निगाहे-यार जिसे आश्नाये-राज़[1] करे।
वोह अपनी ख़ूबिये-क़िस्मतपै क्यों न नाज़ करे॥

और तो पास मेरे हिज्रमें क्या रक्खा है।
इक तेरे दर्दको पहलूमें छुपा रक्खा है॥
आह वह याद कि उस यादको होकर मजबूर।
दिले-मायूसने मुद्दतसे भुला रक्खा है॥

न देखे और दिले-उश्शाक़पर[2] फिर भी नज़र रक्खे।
कयामत है निगाहेयारका हुस्ने-ख़बरदारी[3]॥
यही आलम रहा गर उसके हुस्ने-सहर परवरका[4]।
तो बाक़ी रह चुकी दुनियामें राहो-रस्मे-हुश्यारी॥

मेरे उज़्रे जुर्मपर मुतलक न कीजे इल्तफात[5]।
बल्कि पहलेसे भी बढकर कजअदा[6] हो जाइए॥
मेरी तहरीरे-नदामतका[7] न दीजे कुछ जवाब।
देख लीजे और तग़ाफुल-आश्ना[8] हो जाइये॥
हाय री बेअख़्तियारी यह तो सब कुछ है मगर।
उस सरापा नाज़से क्योंकर ख़फा हो जाइये॥

---

[1]भेद जाननेवाला, अन्तरग साथी, [2]आशिकोंके दिलपर; [3]सौन्दर्यताकी सावधानी, [4]रूपके जादूका, [5]कृपा, [6]तिर्छे, खफा, [7]क्षमा-याचनाके, पत्रका, [8]उपेक्षापूर्ण।

मुझे शिकवये-जफाकी नहीं आने पाई नौबत।
वोह सितम भी गर करे है,तो ब-लुत्फे होशमन्दी ॥

देख ऐ सितमेजानाँ ! यह नक्शे-मुहब्बत है।
बनते हैं ब-दुश्वारी, मिटते हैं ब-आसानी ॥
थी राहते-हैरतकी किस दर्जा फरावानी ?
मैंने गमेहस्तीकी सूरत भी न पहचानी ॥

मैं उस बूते बदखूकी[1] इस आनपै मरता हूँ।
खींचा न कभी उसने अन्दोहे-पशेमानी[2] ॥

अर्जेकरमपै[3] तर्के-जफा भी न कीजिये।
ऐसा न हो कि आप मिला भी न कीजिये ॥

अब रोनेसे क्या होगा, परवाना है बेपरवा।
बरबाद है सब महनत, ऐ शमअ ! लगन तेरी ॥

जाहिर मलाले-रश्को-रकावत[4] न कीजिये।
बेहतर यही है उनसे शिकायत न कीजिये ॥

उज्रे-सितम जरूर न था आपके लिए।
'हसरत'को शर्मसारे-नदामत न कीजिये ॥

सितम हो जाये तमहीदे-करम[5] ऐसा भी होता है।
मुहब्बतमें बता ऐ जब्तेगम ! ऐसा भी होता है ॥

न मुझको इसकी खबर है, न खुद उन्हे है ख्याल।
कुछ इस तरहसे मुहब्बत बढाई जाती है ॥

---

[1]बदआदत; [2]अपने जुर्मपर शर्मिन्दा होनेकी परेशानी न उठाई। [3]कृपाकी याचनापर, [4]ईर्ष्या, शत्रुताके भावको, [5]कृपाकी भूमिका।

यह भी आदाबे-मुहब्बतने गवारा न किया।
उनकी तसवीर भी आँखोसे निकाली न गई॥
दिलको था हौसलये-अर्ज़े-तमन्ना[1] सो उन्हें।
सर गुजिश्ते-शबे-हिजराँ[2] भी सुनाई न गई॥

१९१२-१६ ई०

शरफ[3] हासिल हो उस जानेजहाँसे[4] मुझको निसबतका[5]।
ग़ुलामीका सही, गर हो न सकता हो मुहब्बतका॥

आपको अब हुई है क़द्रेवफा।
जब कि मैं लायके-जफा न रहा॥

तुझको पासे-वफा ज़रा न हुआ।
हमसे फिर भी तेरा गिला न हुआ॥
कट गई अहतियाते-इश्क़में उम्र।
हमसे इज़हारे-मुद्दआ न हुआ॥

कौन लाता तेरे अ़ताबकी[6] ताब।
ख़ैर गुज़री कि सामना न हुआ॥
छिड गई जब जमाले-यारकी बात।
ख़त्म ता-देर सिलसिला न हुआ॥
मैं गिरफ्तारे-उल्फते-सैयाद।
दामसे छुटके भी रिहा न हुआ॥

हर घडी शेख़को है फिक्रे-सवाब[7]।
यह भी इक तरहका अज़ाब[8] हुआ॥

---

[1]अभिलाषा प्रकट करनेका साहस, [2]विरह-रात्रिकी बीती घटना; [3]इज़्ज़त, [4]विश्वसुन्दरीसे, [5]सम्बन्धित होनेका, [6]क्रोधकी; [7]पुण्यकी चिन्ता, [8]रोग।

अब यह क्यो आप मनके फिर बिगड़े ।
अब यह किस बातपर अ़ताब हुआ ॥
आपके हाथसे करम[1] कि सितम ।
जो हुआ मुझपै बेहिसाब हुआ ॥

रहने लगी उनकी याद हरदम ।
अब और हमें रहेगा क्या याद ?

वोह तो करदें मेरा कुसूर मुआफ ।
मैं ही कहता नहीं, 'हुज़ूर मुआफ' ॥

सब आये, पर इक तू न आया, न आया ।
तेरा देर देखा किये रास्ता हम ॥*
यह क्या मुंसिफी[2] है, कि महफिलमें तेरी ।
किसीका भी हो जुर्म पायें सज़ा हम ॥
तेरी ख़ूए-बरहमसे[3] वाक़िफ थे फिर भी ।
हुए मुफ्त शर्मिन्दये-इल्तजा[4] हम ॥

तमहीदे-सुलहे-शौकके[5] सामान हो गये ।
जितने थे उनके जौर[6] सब अहसान हो गये ॥

---

[1]कृपा,

*साकी-ओ-मुतरिब आये, जाम आये, सुबू आये ।
आना था जिनको वो ही न आये तमाम रात ॥
—शमीम जयपुरी

[2]न्यायपरायणता, [3]क्रोधीस्वभावसे, [4]प्रार्थना करके शर्मिन्दा
[5]सुलह करनेके, [6]अत्याचार ।

खन्दये-अहलेजहांकी[1] मुझे परवा क्या थी।
तुम भी हँसते हो मेरे हालपै रोना है यही॥

अगर हुआ भी तो उल्टा असर दुआमें हुआ।
सकूनेयास[2] मिला, इज्तराबके[3] वदले॥

जमालेयारकी[4] रंगीनियाँ अदा न हुईं।
हजार काम लिया हमने खुश बयानीसे॥

बहुत खिजल[5] है तेरे दर्दसे दुआ मेरी।
यह खौफ है कि न सुन ले कहीं खुदा मेरी॥
छुपे वोह मुझसे तो क्या यह भी इक अदा न हुई।
वोह चाहते थे न देखे कोई अदा मेरी॥*
कहीं वोह आके मिटा दें न इन्तजारका लुत्फ।
कहीं कुबूल न हो जाये इल्तिजा मेरी॥†

मुझसे बरगश्ता न होते तो तआज्जुब होता।
आपको उज्रे-तग़ाफुलकी जरूरत क्या है॥

खींच लेना वोह मेरा परदेका कोना दफअतन।
और दुपट्टेसे तेरा वोह मुंह छुपाना याद है॥

---

[1]संसारके हँसनेकी, [2]निराशाका चैन, [3]तड़पके, [4]प्रेयसीके रूपकी, [5]शर्मिन्दा।

*अन्दाज अपना देखते हैं आईनेमें वोह।
और यह भी देखते हैं, कोई देखता न हो॥
—निजाम रामपुरी

†हम आँख बन्द किये तसव्वुरमें पड़े हैं।
ऐसेमें कहीं छमसे वोह आजायें तो क्या हो॥
—रियाज़ खैराबादी

ग़ैरकी नज़रोसे बचकर सबकी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ ।
वोह तेरा चोरी छुपे रातोको आना याद है ॥

परदेसे इक झलक जो वोह दिखलाके रह गये ।
मुश्ताक़ेदीद[1] और भी ललचाके रह गये ॥
टोका जो बज़्मेग़ैरसे आते हुए उन्हे ।
कहते बना न कुछ वोह क़सम खाके रह गये ॥

१९१६-१९१७ ई०

सुनके ज़िक्रेइश्क रह जाते है अक्सर हम ख़मोश ।
अब तलक इतना असर बाकी है उनकी यादका ॥

क्या हुआ 'हसरत' वोह तेरा इद्दआए-ज़ब्तेग़म[2] ।
दो ही दिनमें रंजे-फ़ुरक़तका गिला होने लगा ॥

की मैने लुत्फ़ेयारकी पहले न कुछ भी क़द्र ।
होती है किससे जिन्से-फ़रावांकी अहतयात[3] ॥

ऐ सहरे-हुस्ने-यार[4] मैं अब तुझसे क्या कहूँ ?
दिलका जो हाल तेरी बदौलत है आजकल ॥
इकतर्फ़ा बेख़ुदीका है आलम कि इश्कमें ।
तकलीफ़ आजकल है न राहत है आजकल ॥

हमपर तेरी निगाह जो पहले थी अब नहीं ।
सो भी न कुछ दिनोमें रहे तो अजब नहीं ॥

---

[1]देखनेके अभिलाषी, [2]कष्ट सहनेकी क्षमता, [3]अधिक वस्तुका आदर, चौकसी, [4]प्रेयसीके रूपका जादू ।

'हसरत' जफ़ायेयार तो इक आम थी अदा।
इज़हारे-इल्तफ़ात मगर बेसबब नहीं॥

उसीसे छुपते हैं होती है जिसपर उनकी नज़र।
अगर यही है तो उम्मीदवार हम भी हैं॥

मुझमें तावे-जमाले-यार कहाँ?
शौक़ उन्हें मेरे रूबरू न करे॥

उनके क़दमोंपै रख दिया सरे-शौक़।
हम यह क्या बेख़ुदीमें कर गुज़रे?

शबे-फ़ुरक़तमें याद उस बेख़बरकी बार-बार आई।
भुलाना हमने भी चाहा, मगर बेअख़्तियार आई॥

आग़ाज़े आशिक़ी[1] था, जोशो-ख़रोश यकसर।
या इन्तहायेग़म है, हैरानी-ओ-ख़मोशी॥

१९१७-१९१८ ई०

इसकी बात और है पायें जो हम इसमें भी मज़ा।
आपने तो न दिया कुछ भी अज़ीयतके[2] सिवा॥

उनको याँ वादेपै आ लेने दे ऐ अब्रे-बहार!
जिस क़दर चाहना फिर बादमें बरसा करना॥
कुछ समझमें नहीं आता कि यह क्या है 'हसरत'!
उनसे मिलकर भी न इज़हारे-तमन्ना करना॥

नज़र फिर न की उसपै दिल जिसका छीना।
मुहब्बतका यह भी है कोई क़रीना?

---

[1]प्रारम्भिक प्रेमासक्ति; [2]कष्टके।

'हसरत' फिर और जाके करें किसकी बन्दगी ?
अच्छा, जो सर उठायें भी उस आस्तांसे हम ॥

पूछते है वह कि "हमसे, तेरी ख़्वाहिश है सो क्या ?"
दिलमें जो-जो कुछ है मेरे, अब मै उनसे क्या कहूँ ?

ख़ुदा जाने यह अपना हाल क्या है हिजरेजानांमें।
कि आहे लबतक आती है, न अश्क आँखोसे बहते है ॥
ख़मोशीकी अजब यह गुफ्तगू है वस्लमें बाहम।
न कहते है वोह कुछ हमसे, न हम कुछ उनसे कहते है ॥

हाल खुल जायेगा बेताबिये-दिलका 'हसरत'।
बार-बार आप उन्हें शौक़से देखा न करें ॥

शौक जब हदसे गुज़र जाय तो होता है यही।
वरना हम और करमे-यारकी परवा न करें ॥

हविसेदीद[1] मिटी है, न मिटेगी 'हसरत'।
देखनेके लिए चाहो उन्हे जितना देखो ॥

हर नग़मेने उन्हींकी तलबका दिया पयाम।
हर साज़ने उन्हींकी सुनाई सदा[2] मुझे ॥
१९१८-१९२२ ई०

शिकवये-ग़म तेरे हुज़ूर किया।
हमने बेशक बड़ा कुसूर किया ॥

नादिम हूँ जान देकर, आँखोको तूने ज़ालिम !
रो-रोके बाद मेरे क्यों लाल कर लिया है ?

---

[1]देखनेकी तृष्णा; [2]आवाज़।

देख ले अब भी कहीं आकर जो वोह ग़फलतशआर ।
किस क़दर हो जाय मर जानेमें आसानी मुझे ॥

१९२२-१९२३ ई०

जान दे दो पहुँचके उनके हुज़ूर ।
हमने और उनसे कुछ कहा न सुना ॥

दिले-मजबूर भी क्या शै है कि दरसे अपने ।
उसने सौ बार उठाया तो मैं सौ बार आया ॥

सब्र मुश्किल है, आरज़ू बेकार ।
क्या करें आशिक़ीमें क्या न करें ॥

इक यह भी हक़ीक़तमें है शानेकरम उनकी ।
ज़ाहिरमें वोह रहते हैं जो हर वक़्त ख़फ़ा-से ॥

मेरा इश्क़ भी ख़ुदग़रज़ हो चला है ।
तेरे हुस्नको बेवफ़ा कहते-कहते ॥

१९२३ ई०

हम शिकवये-फ़लक ही करेंगे हुज़ूरे-दोस्त ।
ज़ाहिर न होने देंगे वहाँ भी क़ुसूरे-दोस्त ॥

अहदे-यक-उम्रे-फ़राग़तसे भी ख़ुशतर गुज़रा ।
वोह जो इक लहज़ा तेरी यादमें हमपर गुज़रा ॥

तुझसे अब मिलके तअाज्जुब है कि अरसा इतना ।
आजतक तेरी जुदाईका यह क्योंकर गुज़रा ॥

आपको आता रहा मेरे सतानेका ख़याल ।
सुलहसे अच्छी रही मुझको लड़ाई आपकी ॥*

१९२४ ई०

क़दमोंपै उनके रखके सर रफ़अ् मलाल[1] कर दिया ।
हिम्मते-उज्र्ख़्वाहने[2] आज कमाल कर दिया ॥

चलो जान देके 'हसरत' हुई ख़ूब ग़मसे फ़ुरसत ।
वोह कभी न तुमसे मिलते युँ ही सुबहोशाम करते ॥

१९२५–३४ ई०

करनेको तो मैं अहद करूँ तर्के-हविसका[3] ।
पर दिलसे कहूँ क्या जो नहीं है मेरे बसका ॥

हो रही है सबाहे-इश्कतुलू[4] ।
हो चले हैं चराग़े-अक़्ल ख़मोश ॥

तुझको ऐ महवे-तग़ाफ़ुल[5] मेरी परवा ही नहीं ।
हाले-दिल किससे मैं कहता, तूने पूछा ही नहीं ॥

१९३५–१९४० ई०

किस्मते-शौक आज़मा न सके ।
उनसे हम आँख भी मिला न सके ॥
हम तो क्या भूलते उन्हें 'हसरत' ।
दिलसे वोह भी हमें भुला न सके ॥

---

*वोह दुश्मनीसे देखते हैं, देखते तो हैं ।
मैं शाद हूँ कि हूँ तो किसीकी निगाहमें ॥
—आतिश

[1]मलाल दूर कर दिया, [2]क्षमा माँगनेके साहसने, [3]तृष्णा-त्यागका, [4]प्रेमरूपी पौ फट रही है, [5]उपेक्षा-लीन ।

थी कभी याद उनकी वजहे-सकूँ ।
अब किसी हालमें करार नहीं ॥

१९४१-१९५० ई०

उस शोख़का शिकवा किया, 'हसरत' यह तूने क्या किया ?
इससे तो ऐ मर्देख़ुदा ! बहतर था मर जाना तेरा ॥
यह किसके इजज़ेतमन्नाका[1] पास है कि वोह शोख़ ।
ब-ज़ोमेनाज़[2] भी दामन छुड़ा नहीं सकता ॥

रौनक़ेदिल यूँ बढ़ा ली जायगी ।
ग़मकी इक दुनिया बसा ली जायेगी ॥
दिल न तोड़ो 'हसरते'-नाकामका ।
ज़ुल्फ तो फिर भी बना ली जायगी ॥

ख़ुद फरामोशियोंमें[3] भी तो हमें ।
भूल जाना किसीका याद रहा ॥

बदगुमाँ आप हैं क्यों, आपका शिकवा है किसे ?
जो शिकायत है हमें गरदिशे-ऐयामसे है ॥

पैमाने-वफाके ईफाका[4] हम उनसे तकाजा भूल गये ।
इसका भी तो अब अहसास नहीं, क्या याद रहा क्या भूल गये ॥

'हसरत'की तमाम गज़लोंकी सख्या ७७१ होती है। जिनमे ३८३ गज़लें कैद या नज़रबन्दीकी हालतमे लिखी गई थी।

'हसरत'की पहली ग़ज़ल जो उन्होने १२ या १३ सालकी उम्रमें सबसे पहले कही—

---

[1]नम्रतापूर्ण अभिलाषाका, [2]अभिमानका बल रखते हुए;
[3]अपनेको भूले रहनेपर भी, [4]नेकी करनेके वायदेका।

मैं तो समझा था क़यामत आ गई।
ख़ैर फिर साहब सलामत हो गई॥
मसजिदोंमें कौन जाये वायज़ा!
अब तो इक बुतसे इरादत हो गई॥
जब मैं जानूं दिलमें भी आओ न याद।
गरचे ज़ाहिरमें अ़दावत हो गई॥
उनको कब मालूम था तर्ज़े-जफा।
गैरकी सुहबत कयामत हो गई॥
इश्क़ने उसको सिखा दी शायरी।
अब तो अच्छी फिक्रे 'हसरत' हो गई॥

और यह अन्तिम गज़ल उन्होने मृत्युसे छ माह पूर्व २० नवम्बर १९५०को लखनऊमें कही थी—

शौक कि दादेहया मिलती नहीं।
वोह निगाहे-आश्ना मिलती नहीं॥
शेवये-अहले-रियासे ज़ीनहार।
ख़ूए-अरबाबे-सफा मिलती नहीं॥
दीदनी है यह मुरव्वत हुस्नकी।
जुर्मे-उल्फतकी सज़ा मिलती नहीं॥
उनसे मिलनेकी हविसमें शौक़को।
ढूंढता है और दुआ मिलती नहीं।
आशिक़ीसे ख़ूए-नाज़े-हुस्ने-दोस्त!
बरसबीले-एतना मिलती नहीं॥
यह भी 'हसरत' क्या सितम है इश्कसे।
हुस्नको दादे-जफा मिलती नहीं॥

३१ मई १९५३ ई०]

'मीर' उर्दू-शायरीके खुदाये-सुखन समझे जाते हैं, और 'फानी' यास-यातके इमाम। यासयात यानी असफल और निराश-व्यक्तियोके ऐसे नेता कि जिन्हें कभी जीवनमें एक क्षणको भी सफलता और आशाकी एक भी किरण दिखाई नही दी। तमाम उम्र अथक परिश्रम और उद्योग करते रहे, किन्तु असफलता और निराशाके अतिरिक्त कुछ भी हाथ नही लगा। तब मजबूरन तकदीर (भाग्य)के आगे तद्बीर (पुरुषार्थ)को घुटने टेकने पड़े। इस पराजयकी घुटनको 'फानी'ने यूं व्यक्त किया है—

देख 'फानी' वोह तेरी तद्बीरकी मैयत[1] न हो।
इक जनाजा[2] जा रहा है, दोशपर[3] तक़दीरके॥

तमाम उम्र हाथ-पाँव मारते गुज़र जायें, फिर भी किनारा हाथ न आये, तब छट-पटाकर डूब जानेके अतिरिक्त अन्य उपाय भी क्या है?

कुछ आस्तिक कहेगे कि 'फानी'ने ऐसे घोर सकटके समय ईश्वरको पुकारा होता तो निश्चय ही बेड़ा पार हो जाता। फानीने यह भी करके

---

[1]अर्थी, [2]शव, [3]कन्धेपर।

देख लिया। वे जीवनभर आस्तिक बने रहे, घोर सकटके क्षणोमें भी वे खुदाको नही भूले। उनका दृढ विश्वास था कि खुदा रहीम है और उसकी रहमत कभी-न-कभी उनपर भी होगी। लेकिन मरते दमतक भी रहमतका सहारा जब नही मिला तो धीरजका बाँध टूट गया और उसी बेकलीमें उनके मुँहसे निकल गया—

या रब ! तेरी रहमतसे मायूस नहीं 'फानी'।
लेकिन तेरी रहमतकी ताख़ीरको क्या कहिये[1] ?

आपदाओके भँवरमे जब फानीकी जीवन-नौका चक्कर काट रही थी, उनकी सगिनी और युवा कन्या चल बसी, जो बच रहे उनको क्षणभर भी निराकुल न देख सके। यह वोह मनोव्यथा है कि इस टीसका अनुभव भुक्त-भोगी ही कर सकता है। 'मीर' तो एक कल्पना ही करके रह गये कि उन-जैसा बदनाम मद्यप भी मस्जिदका इमाम बन गया है—

मस्जिदमें इमाम आज हुआ आके वहाँसे।
कलतक तो यही 'मीर' ख़राबात-नशीं था॥

ख़राबात (मद्यालयों)के मीर (सरदार) रहे तो क्या, और मस्जिदमें इमाम[2] बने तो क्या ? इससे बिगडता-बनता क्या है ? लेकिन 'फानी' तो जीवनभर असफलताओ और निराशाओसे द्वन्द्व करते रहे और एक क्षणको भी विजयी न हुए, इसीलिए उर्दू-आलोचक उन्हे यासयातका इमाम कहते हैं।

---

[1]कौन कम्बख्त तेरी दयालुता और दीनबन्धुत्वमे सन्देह करता है ? हमे तो आशा ही नही, पूर्ण विश्वास है कि तू अपनी रहमतका हाथ हमारे लिए भी बढायेगा। लेकिन इतना जो विलम्ब (ताख़ीर) हो रहा है, इसको क्या कहा जाय ? क्या हम डूब जायेंगे तब ?

[2]धार्मिक नेता, जिसके पीछे खडे होकर लोग नमाज़ पढ़े।

यासयातका इमाम तो वह भी कहला सकता है, जो असफल और निराश व्यक्तियोमे आशाका सचार करे, कर्तव्य-क्षेत्रमे डटे रहनेके लिए उत्साहप्रद भावना भरे। लेकिन 'फानी' ऐसे इमाम नही हैं, अपितु किसी व्यक्तिमे आशा-उत्साहका कोई अकुर रह भी गया हो, तो उनकी इमामत (नेतृत्व) उसे जड-मूलसे उखाड फेकती है, उसी अर्थमे वे यासयातके इमाम हैं।

यही कारण है कि कुछ आलोचक उनकी जीवितावस्थामें ही यह दोषारोपण करने लगे थे कि 'फानी' हर वक्त रोते-विसूरते रहते हैं। उनकी प्रेम-ज्वाला ठडी पड गई है। गमसे घबराकर हर वक्त मौतकी कामना रखते हैं। उनकी शायरीमें व्यक्तिगत रोने-झीकनेके अतिरिक्त और रखा ही क्या है ? हाय-हाय करना, छाती पीटना, विधवाओकी तरह शोकमग्न रहना, विलखते रहना, उनका स्वभाव है। लखनवी शायरोकी तरह वह भी प्रेमको एक रोग समझते है। उनकी शायरीमें जनाजा, मैयत, कफन, लहद, मजार, शमा, परवाना आदि शब्दोकी भरमार रहती है। 'जोश' मलीहाबादी[1] तो उन्हे मानवतासे गिरा हुआ कहनेमें भी सकोच नही करते, क्योकि मनुष्य होकर जो गमोसे घबरा उठे, उसे वे मनुष्य नही, मनुष्यताका अभिषाप समझते है।

किसी हालतमें उक्त आलोचनाएँ ठीक है, किन्तु एक ही काँटेपर धान और मोती नही तोले जा सकते। हर व्यक्तिके जीवनके भिन्न-भिन्न पहलू होते है, और भिन्न-भिन्न वातावरणमें रहने-सहनेके कारण जुदा-जुदा आचार-स्वभाव होते हैं। रामायणका पाठक महाभारतके कौरव-पाण्डवोमें भी भरत-राम-जैसा स्नेह-सम्बन्ध देखना चाहेगा तो निराशाके अतिरिक्त कुछ भी हाथ नही लगेगा। हर शायर 'गालिब' और 'जोश' नही

---

[1]'जोश' मलीहाबादीका परिचय 'शायरीके नये दौर' नामक पुस्तकमे दिया गया है, जो कि शीघ्र छपेगी।

हो सकता। न हर शायर 'मीर' और 'फानी' जैसा दर्दीला दिल पा सकता है। प्रारम्भमें 'फानी' भी 'गालिब'से प्रभावित नज़र आते हैं, जैसा कि इन चन्द अशआरसे आभास मिलता है—

ग़ालिब— हस्तीके मत फरेबमें आजाइयो 'असद'!
आलम तमाम हलकये-दामे-ख़याल है॥
फ़ानी— हर मुज़दए-निगाहे-ग़लत जलवा ख़ुदफरेब।
आलम दलीले गुमरहीए-चश्मोगोश था॥

ग़ालिब— है ग़ैब-ग़ैब जिसको समझते हैं हम शहूद।
हैं ख़्वाबमें हनूज़ जो जागे हैं ख़्वाबमें॥
फ़ानी— तजल्लियाते-वहम है मुशाहिदाते-आबो-गिल।
करिश्मये-हयात है ख़याल, वोह भी ख़्वाबका॥
एक मुअ़म्मा है समझनेका न समझानेका।
ज़िन्दगी काहेको है? ख़्वाब है दीवानेका॥

ग़ालिब— हाँ खाइयो मत फरेबे-हस्ती।
हर चन्द कहे कि है, नहीं है॥
फ़ानी— है कि 'फानी' नहीं है क्या कहिए।
राज़ है बेनियाज़े-महरमे-राज़॥

ग़ालिब— न गुले-नग़मा हूँ, न परदयेसाज़।
मैं हूँ अपनी शिकस्तकी आवाज़॥
फ़ानी— हूँ, मगर क्या यह कुछ नहीं मालूम।
मेरी हस्ती है ग़ैबकी आवाज़॥

ग़ालिब— लो वोह भी कहते हैं कि "यह बे-नगो-नाम है"।
यह जानता अगर तो लुटाता न घरको मैं॥
फ़ानी— बहला न दिल, न तीरगीये-शामे-ग़म गई।
यह जानता तो आग लगाता न घरको मैं॥

ग़ालिब— छोडा न रश्कने कि तेरे घरका नाम लूँ।
हर-एकसे पूछता हूँ कि जाऊँ किधरको मैं॥

फ़ानी— वोह पाये-शौक़ दे कि जहत-आश्ना न हो।
पूछूँ न ख़िज्रसे भी कि जाऊँ किधरको मैं॥

ग़ालिब— उग रहा है दरो-दीवारसे सब्ज़ा 'ग़ालिब'!
हम बयाबाँमें है और घरमें बहार आई है॥

फ़ानी— याँ मेरे क़दमसे है वीरानेकी आबादी।
वाँ घरमें ख़ुदा रक्खे आबाद है वीरानी॥

ग़ालिब— मेरी तामीरमें मुज़मिर है इक सूरत ख़राबीकी।
हयूला बर्क़े-ख़िरमनका है, ख़ूने-गर्म दहक़ाँका॥

फ़ानी— तामीरे-आशियाँकी हविसका है नाम बर्क़।
जब हमने कोई शाख़ चुनी शाख़ जल गई॥

ग़ालिब— हो चुकीं 'ग़ालिब' बलाएँ सब तमाम।
एक मर्गे-नागहानी और है॥

फ़ानी— अपनी तो सारी उम्र ही 'फ़ानी' गुज़ार दी।
इक मर्गे-नागहाँके ग़मे-इन्तज़ारने॥

'ग़ालिब' और 'फ़ानी'मे अन्तर यही है कि दोनो आपदाओकी भट्टीमें जीवनभर सुलगते रहते हैं और अन्तमें राख हो जाते है। लेकिन 'ग़ालिब' तब भी मुसकराते रहते हैं, तीखे व्यग कसते है, और ऐसा मुँह चिढाते हैं कि आपदाये भी झेप-झेपकर रह जाती है—

न लुटता दिनको तो, कब रातको यूँ बेख़बर सोता।
रहा खटका न चोरीका, दुआ देता हूँ रहज़नको!

है किसीमें ऐसी हिम्मत कि सर्वस्व लुट जाये, फिर भी आह न करे, उलटा चोरका आभार ही माने? अपने उजाड घरको देखकर कितना तीखा व्यग करते हैं—

घर हमारा जो न रोते भी तो वीराँ होता।
बहर गर बहर न होता तो बयाँबा होता॥

[हमारा घर तो उजाड होना ही था, फिर रो-रोकर उसे आँसुओ-द्वारा हमने स्वय ही डुबो दिया तो क्या बुरा किया ?]

कम किरायेके टूटे-फूटे मकानमे रहते है। उसकी दीवारोपर काई जम गई है। छतो और मुँडेरोपर घास उग आई है। जानते है कि निर्धनताके कारण ऐसे मकानमे रहना पड रहा है, किन्तु अपनी इस बेबसीपर आँसू न बहाकर किस खूबीसे मुँह चिडाते है कि मकान-मालिकने यह शेर सुना होगा तो अपना सर पीट लिया होगा—

उग रहा है दरो-दीवारपै सब्जा 'गालिब'।
हम बयाबाँमें है और घरमें बहार आई है॥

घास और काईको 'सब्जा' और घरकी जीर्णताको 'बहार' कहना गालिबका ही कलेजा है।

दु खदरिद्रतामें जीवन व्यतीत करते-करते खयाल आया कि अगर खुदा मुझे लोक और परलोक दोनो प्रदान कर दे तो क्या हो ? चट स्वाभिमानी हृदय घृणासे भर आया, कि जिस खुदाने एक लमहेको सुख-चैनकी साँस नही लेने दी, उसका दिया हुआ अब क्यो स्वीकृत किया जाय ? लेकिन अपनी वज़अ-क़तअकी शराफतके कारण 'नही' कहनेका साहस भी नही होता, सकुचाकर रह जाते है—

दोनो जहान देके वोह समझा कि खुश हुआ।
याँ आ पडी यह शर्म कि तकरार क्या करें॥

लेकिन 'फानी' दु खकी भट्टीमे जलते हुए 'गालिब'की तरह मुसकरा नही सकते थे। उनका हृदय जिन परमाणुओसे बना था, उनमे मुसकानके अणु नही थे। 'फानी' अपनी व्यथा-पीडाके कारण 'गालिब'के बजाय

'मीर'के अधिक समीप मालूम होते हैं। उनके बहुतसे अशआर में 'मीर'का धोका होता है। ऐसे चन्द शेर दिये जाते हैं—

'फ़ानी'को या जुनूँ है या तेरी आरज़ू है।
कल नाम लेके तेरा दीवानावार रोया॥

नाला क्या ? हाँ इक धुआँ-सा शामे-हिज्र।
बिस्तरे-बीमारसे उट्ठा किया॥

आया है बादे-मुद्दत बिछड़े हुए मिले हैं।
दिलसे लिपट-लिपटकर ग़म बार-बार रोया॥

नाज़ुक है आज शायद, हालत मरीज़े-ग़मकी।
क्या चारागरने समझा, क्यों बार-बार रोया ?

ग़मके टहोके कुछ हों बलासे, आके जगा तो जाते हैं।
हम हैं मगर वह नींदके माते जागते ही सो जाते हैं॥

महवे-तमाशा हूँ मैं या रब ! या मदहोशे-तमाशा हूँ।
उसने कबका फेर लिया मुँह अब किसका मुँह तकता हूँ॥

गो हस्ती थी ख़्वाबे-परीशाँ नींद कुछ ऐसी गहरी थी।
चौंक उठे थे हम घबराकर फिर भी आँख न खुलती थी॥

फ़स्ले-गुल आई, या अजल आई, क्यों दरे ज़िन्दाँ खुलता है ?
क्या कोई वहशी और आ पहुँचा या कोई क़ैदी छूट गया॥

या कहते थे कुछ कहते, जब उसने कहा—"कहिये"।
तो चुप हैं कि क्या कहिये, खुलती है ज़बाँ कोई ?

यहाँ यह कहा जा सकता है कि 'फ़ानी' उम्रभर जलते-भुनते रहते, लेकिन उन्हे अपने दिलकी टीस शायरीमें बखेरकर पाठकोके हृदयको द्रवित करने और उन्हे निराशावादका पाठ देनेका क्या अधिकार था ?

उन्हे तो अपने रिसते हुए नासूरपर मरहम लगाकर डब-डबाई आँखोके आँसू पीकर ज़ाहिरामे मुसकराते रहना चाहिए था।

दिलमें हज़ार ग़म हो, जबींपर शिकन न हो

लेकिन शायरी चित्र-जैसी कला नही कि मनोभाव दबाकर फर्माइशके अनुसार चित्रित की जा सके। लाख प्रयत्न किये जाये, शायरके कलाममे उसके हृदयगत भाव व्यक्त हुए बगैर रह नही सकते। 'गालिब'ने लाख चाहा कि वे हृदयमे सुलगते ज्वालामुखीको दबाकर जीवनभर मुसकराते रहे और व्यगोक्तियाँ कसते रहे। मगर यह उनसे भी बराबर नही निभ सका, और उनकी हृदयगत आग उनके चारो ओर फैले बगैर नही रह सकी—

दिलमें ज़ौके-वस्ल-ओ-यादे-यार तक बाक़ी नहीं।
आग इस घरको लगी ऐसी कि जो था जल गया॥

किससे महरूमिये किस्मतकी शिकायत कीजे।
हमने चाहा था कि मर जायें, सो वह भी न हुआ॥

और जिसे मांगेसे मौत भी न मिले, वह असहाय और लाचार घुट-घुटकर जीने और मनको यह सान्त्वना देनेके अतिरिक्त और कर भी क्या सकता है—

कैदे-हयात-ओ-बन्दे-गम, अस्लमें दोनो एक हैं।
मौतसे पहले आदमी गमसे निजात पाये क्यो?

शायरी एक दर्पण है, जिसमे अनिच्छा होते हुए भी हृदयगत भावोका प्रतिबिम्ब पडे बगैर नही रह सकता। सैयद सुलेमान नदवीके शब्दोमे—

"गज़ल लिखनेके लिए स्याही बाज़ारमे नही मिलती, बल्कि खूं-चकां सीनेमे पाई जाती है। उसके लिए ज़ख्मी दिल दरकार है। इसलिए 'इकबाल'ने कहा है—

मिसरयेमन क़तरयेख़ूने मनस्त।

और 'कतरयेखून' शायरीमें उसी वक्त टपकता है, जब कि शायरका खलूस उसमे कारफरमा हो। शेरमे शेरियत (कवित्व)के साथ-साथ तासीर (प्रभाव, असर)का होना भी जरूरी है।"[1] तासीर बगैर शेर निष्प्राण शरीरके समान है।

'फानी'के एक-एक शब्दमे उनकी आत्मा बोल रही हैं। उनके कलामके अध्ययनसे उनके जीवन-पृष्ठ स्वय उजागर हो जाते हैं, और यही उनकी शायरीका कमाल है। ज़हीरउद्दीन अहमदख़ाँ लिखते है—

"वही शायरी बुलन्दपाया (उच्चतम) होगी, जिसको शायरने खुद महसूस किया हो। जिन्दगीकी चक्कीमें जिसने अपनेको पीसा हो, और रजो-गमकी भट्टीमे जिसने अपनेको सुलगाया हो, उससे जो आवाज़ निकलती है, वही शायरी है।"[2]

'फानी' इस शायरीकी कसौटीपर पूरा उतरते है, जैसा कि उनके जीवन-परिचयसे आभास मिलता है।

शौकतअलीखाँ 'फानी' १३ सितम्बर १८७९ ई०में बदायूँ ज़िलेके इस्लामनगरमे उत्पन्न हुए। वे पठान है और उनके पूर्वज शाह आलमके शासनकालमें कावुलसे भारत आये और यहाँ उच्च पदोपर प्रतिष्ठित रहें।

'फानी'के परदादा नवाब बशारतखाँ, बदायूँ सूबेके गवर्नर थे और २०० गाँव उनकी जागीरमें थे। धीरे-धीरे जागीर खिसकती गई और नौबत यहाँतक आ पहुँची कि आपके पिता मुहम्मद शुजाअतअलीखाँ पुलिसकी नौकरी करनेपर मजबूर हुए और उस थोडे-से वेतनमें ही अपनी सारी ज़िन्दगी गुज़ार गये।

---

[1]निगार अप्रेल १९४६, पृ० १०, [2]निगार अप्रेल १९४६, पृ० ११।

'फानी'ने १६०१में बी० ए० और १६०८मे एल-एल० बी० पास किया। १६२३ तक लखनऊमें रहे, उसके बाद सन् ३२ तक आगरेमें वकालत करते रहे। कुछ अर्से बरेली और बदायूंमे भी वकालत की। जब कही भी प्रैक्टिस न चली, तब हैदराबादके प्रधान मत्री महाराजा किशनप्रसाद 'शाद'ने महरबानी फरमाकर हैदराबाद बुला लिया। मगर वहाँ भी अभाग्यने साथ नही छोडा। वहाँ जाकर जिन असुविधाओ और विघ्न-वाधाओका सामना करना पडा होगा, उसका कुछ आभास निम्न पत्रसे होता है, जो कि उन्होने २८ जून १६३३को अपने एक सम्वन्धीको लिखा था—

"मेरा तकर्रुर (नियुक्ति) नही हुआ है, देखिये कव होता है ? और कहाँ ? या गालिबन होता भी है या नही।"

'फानी'को वहाँ मुल्की और गैरमुल्की झगडोके कारण भी परेशानी उठानी पडी ।[1] आखिर राम-राम करके फानी-जैसे शायरको वहाँके एक हाईस्कूलकी हेडमास्टरी नसीव हुई ।

इसी अर्सेमे उनकी जीवन-सगिनी और युवा पुत्री चल वसी। यहाँ तक कि उनके वहाँ एकमात्र हितैषी महाराजा किशनप्रसाद भी स्वर्गस्थ हो गये। इसे भाग्य-रेखके अतिरिक्त और क्या कहा जाय ? वकौल 'जिगर' मुरादाबादी—

---

[1]हैदराबादमे यह पान्तीय भावना वहुत पुरानी है। सरकारी नौकरियोमे मुसलमानोको तो तरजीह दी ही जाती रही है, लेकिन वहाँके मुसलमान भी यह वर्दाश्त नही करते थे कि उनके यहाँ कोई अन्य प्रान्तीय आये। हैदरावादसे बाहरके लोगोको वहाँ 'ग़ैरमुल्की' समझा जाता है। मिर्ज़ा 'दाग'की नियुक्तिपर भी यह एतराज़ उठा था। आज भी वह रोग ज्यो-का-त्यो वना हुआ है।

मेरे ग़मख़ानये-मुसीबतकी ।
चाँदनी भी सियाह होती है ॥

आजीविकाकी खोजमें—लखनऊ, बरेली, इटावा, आगरा, हैदराबाद—न जाने कहाँ-कहाँकी खाक छानी। जहाँ भी गये असफलताओ और निराशाओने आगे बढकर स्वागत-सत्कार किया। 'फानी' भावुक थे, तनिक-तनिक-सी बातें उनके दिलपर चरका पहुँचाती थी। और दिल जब ज़ख्मी होता है तो बकौल 'सीमाब'—

सितारोंकी चमकसे चोट लगती है रगे-जाँपर

हैदराबादमें जिसप्रकार उन्होने दिन गुज़ारे, उनके बारेमें वहाँके पत्र 'पयाम'ने लिखा था—

"इस सरज़मीनपर शायद ही कोई ऐसा साहबे-कमाल इस कसमपुरसीकी हालतमे दफ्न हुआ हो, जिस हालतमे 'फानी'ने अपनी ज़िन्दगीके चन्द आखिरी साल गुज़ारे।"

शेरगोईका शौक 'फानी'को ग्यारह वर्षकी अवस्थामें ही हो गया था। यानी सबसे पहली गज़ल आपने १८९० ई०मे कही और २० वर्षकी आयुमें दीवान मुकम्मिल हो गया था। अफसोस कि वह नष्ट हो गया। १९०६में दूसरा दीवान तैयार किया तो वह भी पहले दीवानकी तरह गुम हो गया। आखिर दिल बैठ गया और १९१७ तक 'फानी' दुनियाए शायरीसे रूपोश रहे। इसके बाद जलवागर हुए तो उनका पहला दीवान बदायूँसे छपा। दूसरा दीवान 'बाकियाते फानी' १९२६में और शेष कलाम 'वजदानियात' १९४०मे प्रकाशित हुआ। बकौल किसीके—

"लुत्फतरीन अहसासात रखते हुए तबाहियो और बरबादियोका मुसलसल (निरन्तर) शिकार होना और फिर ज़िन्दा भी रहना एक इन्सानको फानी न बना दे तो और क्या तवक्कोह (आशा) हो सकती है? हवादस-ओ-सदमात (मुसीबतें और रजोगम) इब्तदामें दर्दनाक

भी मालूम होते है, और नाकाबिले बरदाश्त भी। इन्सान चीखता भी है और आँसू भी बहा लेता है। लेकिन उस हिरमाँ-नसीब (असफल-निराश व्यक्ति)को क्या कहिए? जिसके आँसू भी इन मुतवातिर और पैहम (लगातार-निरन्तर) चोटोसे खुश्क हो जाते है। फिर उसकी मुसकराहट भी 'आह' बन जाती है। और यास (निराशा)में उसको लुत्फ भी आता है। चुनाँचे किसी मातमकदे (शोक-गृह)के नौहा (मातम) करने-वालेसे अगर तराने-शादयाने (मगलवाद्य)की तवक्कोह (आशा) नही की जा सकती तो 'फानी'की शायरी भी यासया (निराशावादी) शायरी ही हो सकती थी।"

फानीने जब होश सँभाला तो लखनवी शायरीसे कघी, चोटी, सुरमा-मिस्सी, चोली-दामन विदा हो गये थे। लखनऊकी नवाबी मिट चुकी थी। इसलिए रगीन और ज़नानी शायरीकी जगह मर्सिया ले रहा था। लखनऊके उरूजके दिनोमे वहाँके शायरोने जिस तत्परतासे रगीन एव ख़ारजी शायरीके नोक-पलक सँवारे थे, उसी तेज़ीसे मर्सियाके मैदानमे भी कूदे। जिस घरमें शादीके नग्मोसे कान पडी आवाज़ सुनाई न देती हो, उस घरमें अकस्मात दुर्घटना होने पर क्रन्दन भी आकाशभेदी उठता है। मर्सियागोई रगीन शायरीकी प्रतिक्रिया थी, और यह स्वाभाविक भी था। उन दिनो लखनवी शायरोको रजो-गम गिरय-ओ-मातम, गोरे-गरीबाँ और यासो-हिरमाँके अतिरिक्त कुछ सूझता ही न था। यहाँतक कि गजलमें भी मर्सियतका-रग चढ रहा था। रगीन शायरीकी तरह इसमें भी लखनवी शायरोने तकल्लुफ और कृत्रिमताको हाथसे नही छोडा।

फानीकी प्रकृति इस वातावरणके अनुकूल थी। वे इस रगसे काफी प्रभावित हुए। यद्यपि प्रारम्भमे वे गालिबके अनुयायी नज़र आते है, किन्तु लखनवी मर्सियतका वातावरण उनके अधिक अनुकूल रहा। अत करुणा-व्यथा भरे बोल उनके मुंहसे अनायास निकलने लगे।

यहाँतक कि इस पृथ्वीका स्वर्ग काश्मीर भी उनके हृदय-कमलको

नही खिला सका, वहाँका प्रसिद्ध 'निशातबाग' भी उन्हे फर्सूदा (कुम्हलाया हुआ) नज़र आया—

इस बाग़में जो कली नजर आती है।
तसवीरे-फसुर्दगी नजर आती है॥
कश्मीरमें हर हसीन सूरत 'फानी'।
मिट्टीमें मिली हुई नजर आती है॥

फूलोकी नजर-नवाज रगत देखी,
मखलूक़की दिल-गुदाज हालत देखी,
कुदरतका करिश्मा नजर आया कश्मीर,
दोजखमें समोई हुई जन्नत देखी॥

उनकी पत्नी और पुत्री मिट्टीमें मिल जाये और उनका घर जिसे वह जन्नत बनाना चाहते थे, दोज़ख बन जाये, तब हर हसीन सूरत उन्हे मिट्टीमें मिली हुई और 'जन्नत' दोज़खमें समोई हुई दिखाई न दे तो और क्या दे? यही व्यथा-भरा अलाप धीरे-धीरे वह रूप लेता गया, जिसे आज 'फानी'की शायरी कहा जाता है। व्यथा रूपी दीमकसे खाये हुए उनके मनसे यही ध्वनित होगा, चाहे वह काश्मीरमें रहे या हैदराबाद-में—

दैरमें या हरममें गुजरेगी।
उम्र तेरे ही ग़ममें गुजरेगी॥

और धीरे-धीरे 'फानी' रज-ओ-ग़मके इतने आदी हो गये हैं कि उन्हे सुख-चैनका तो ख्वाबो-ख़याल भी नही आता। उन्हे तो अब यही आशका खाये जाती है कि दुःखसे भरे-पूरे दिन उनके जो व्यतीत हो रहे हैं, वोह भी दुर्दैव कही उनसे छीन न ले।

हाँ नाखुने-ग़म कमी न करना।
डरता हूँ कि ज़ख़्मेदिल न भर जाये॥

और इस दुःखको वे मर्दानावार आमन्त्रण देते हैं—

ग़ैरत हो तो ग़मकी जुस्तजू कर।
हिम्मत हो तो बेक़रार हो जा॥

और इस गमको वे अपना सर्वस्व समझते हुए सगर्व कहते हैं—

चुन लिया तेरी मुहब्बतने मुझे।
और दुनिया हाथ मलकर रह गई॥

'फानी'ने मर्सियतसे बहुत जल्द कनाराकशी करके अपना जुदागाना-रग अख़्तियार कर लिया। कही उनके यहाँ गालिब-जैसी दार्शनिकता, और कही 'मीर'-जैसा सोज़ोगुदाज़ पाया जाता है। इश्किया रगमें भी उन्होने अपनी मौलिक प्रतिभाका परिचय दिया है।

हूँ असीरे-फरेबे-आज़ादी[1]।
पर हैं और मश्क़े-हीलये-परवाज़[2]॥

इश्क है परतवे-हुस्ने-महबूब[3]।
आप अपनी ही तमन्ना क्या ख़ूब॥

अब लबपै वोह हंगामये-फरियाद नहीं है।
अल्लाहरे तेरी याद कि कुछ याद नहीं है॥

हमको मरना भी मयस्सर नहीं जीनेके बग़ैर।
मौतने उम्रे-दो रोज़ाका बहाना चाहा॥

---

[1]स्वतन्त्रताके धोकेका कैदी, [2]पर होते हुए भी न उड़नेके लिए बहाना ढूंढना, [3]प्रेयमीके सौन्दर्य्यका प्रतिविम्ब।

बिजलियाँ शाख़े-नशेमनपै बिछी जाती हैं।
क्या नशेमनसे कोई सोख़्ता-सामाँ[1] निकला?

'फ़ानी'की जिन्दगी भी क्या जिन्दगी थी या रब!
मौत और जिन्दगीमें कुछ फ़र्क़ चाहिए था॥

फ़ानीके चन्द मक़्ते—

किसीके ग़मकी कहानी है जिन्दगीए-'फ़ानी'।
ज़माना एक फ़साना है, मेरे नालोंका॥

ख़ाके-'फ़ानी'की क़सम है, तुझे ऐ दश्ते-जुनूँ!
किससे सीखा तेरे ज़र्रोंने बयाबाँ होना?

चमनसे रुख़सते 'फ़ानी' क़रीब है शायद।
कुछ अबकी बूए-कफ़न दामने-बहारमें है॥

किसकी कश्ती तहे-गरदाबे-फ़ना[2] जा पहुँची?
यकबयक शोर जो 'फ़ानी' लबे-साहिलसे[3] उठा॥

आज रोज़े-विसाल 'फ़ानी' है।
मौतसे हो रहे हैं नाज़ो-नियाज़॥

'बाक़याते फ़ानी' और 'वजदानियत' शीर्षक उनके दो संकलनोंसे उनके सभी रंगके अशआर पेश किये जा रहे हैं—

तूने करम किया तो ब-उनवाने रंजोज़ीस्त।
ग़म भी मुझे दिया तो ग़मे-जाविदाँ न था॥

आ गई है तेरे बीमारके मुँहपर रौनक़।
जान क्या जिस्मसे निकली, कोई अरमाँ निकला॥

---

[1]दग्धहृदय, [2]मृत्यु-दरियाके तलेमें, [3]किनारेसे।

रस्मेखुद्दारीसे गो वाकिफ न थी दुनिया-ए-इश्क ।
फिर भी अपना जख्मेदिल शरमिन्द-ए-मरहम न था ।।

मजाके-तल्खपसन्दी न पूछ, उस दिलका—
बग़ैर मर्ग जिसे जीस्तका मजा न मिला ।।
मेरी हयात है महरूमे-मुद्दआ-ए-हयात ।
वोह रहगुजर हूँ जिसे कोई नक्शेपा न मिला ।।

यूँ सबको भुला दे कि तुझे कोई न भूले ।
दुनिया ही में रहना है तो दुनियासे गुजर जा ।।

क्या-क्या गिले न थे कि इधर देखते नहीं ।
देखा तो कोई देखनेवाला नहीं रहा ।।

एक आलमको देखता हूँ मैं ।
यह तेरा ध्यान है मुजस्सिम क्या ।।

फुरसते-रजेअसीरी दी न इन धडकोने हाय ।
अब छुरी सैयादने ली, अब कफसका दर खुला ।।

मंजिलेइश्कपै तनहा पहुँचे कोई तमन्ना साथ न थी ।
थक-थककर इस राहमें आखिर इक-इक साथी छूट गया ।।

रफ्तए-नजर[1] हो जा, सबसे बेखबर हो जा ।
खुल गया है राज[2] अपना खुल न जाये राज उनका ।।

फरेबेजलवा और कितना मुकम्मिल ऐ मुआजल्लाह ।
बडी मुश्किलसे दिलको बज्मे-आलमसे उठा पाया ।।

---

[1]उपेक्षित दृष्टि; [2]भेद ।

हाय क्या दिन हैं कि नक़्शे-सजदा है और सर नहीं।
याद हैं वोह दिन कि सर था और वबालेदोश[१] था॥

निगहे-क़हर ख़ास है मुझपर।
यह तो अहसाँ हुआ सितम न हुआ॥
अब करम है तो यह गिला है मुझे।
कि मुझीपर तेरा करम न हुआ॥

गुलमें वोह अब नहीं है जो आलम था ख़ारका।
अल्लाह क्या हुआ वोह ज़माना बहारका॥

तिनकोंसे खेलते ही रहे आशियाँमें हम।
आया भी और गया भी ज़माना बहारका॥

उसको भूले हुए तो हो 'फ़ानी'!
क्या करोगे अगर वोह याद आया॥

घर ख़ैरसे तक़दीरने वीराना बनाया।
सामाने-जुनूँ[२] मुझसे फ़राहम[३] न हुआ था॥

बालींपै[४] जब तुम आये तो आई वोह मौत भी।
जिस मौतके लिए मुझे जीना ज़रूर था॥
थी उनके सामने भी वही शाने-इज़्तराब[५]।
दिलको भी अपनी वज़अपै कितना ग़रूर था॥

बा-ख़बर है वोह सबकी हालतसे।
लाओ हम पूछ लें न हाल अपना॥

---

[१]कन्धोका बोझ, [२]उन्मादका सामान, [३]एकत्र, [४]बीमारके सिरहाने, [५]तडपनेकी शान।

अल्लाहरे एतमादेमुहब्बत[1] कि आजतक ।
हर दर्दकी दवा है वोह अच्छा किये बग़ैर ।।

निगाहें ढूँढती हैं दोस्तोको और नहीं पातीं ।
नजर उठती है जब जिस दोस्तपर पडती है दुश्मनपर ।।

न इब्तदाकी खबर है न इन्तहा मालूम ।
रहा यह वहम कि हम है, सो वोह भी क्या मालूम ?
यह जिन्दगीकी है रूदादे-मुख़्तसिर[2] 'फानी' !
वजूदे-दर्दमुसल्लिम,[3] इलाज ना मालूम ।।

किस जोममें है ऐ रहरवेगम[4] ! धोकेमें न आना मंजिलके ।
यह राह बहुत कुछ छानी है, इस राहमें मंजिल कोई नहीं ।।

हाँ ऐ यक़ीनेवादा ! दामन तेरा न छूटे ।
यह आसरा न टूटे वोह आयें या न आयें ।।

दिलमें आते हुए शरमाते हैं ।
अपने जलवोंमें छुपे जाते हैं ।।

ना महरबानियोका गिला तुमसे क्या करें ?
हम भी कुछ अपने हालपै अब महरबां नहीं ।।

तसकीन[5] अजीब चाहता हूँ ।
दुशमनका नसीब चाहता हूँ ।।

ग़म भी गुजश्तनी[6] है खुशी भी गुजश्तनी ।
कर ग़मको अख़्तयार कि गुज़रे तो ग़म न हो ।।

---

[1]प्रेम-विश्वास, [2]संक्षिप्त कहानी, [3]दर्द पूर्णरूपेण है; [4]ग़मकी राहपर चलनेवाले, [5]चैन, [6]नाशवान ।

बहार लाई है पैग़ामे-इनक़लाबे-बहार ।
समझ रहा हूँ मैं कलियोंके मुसकरानेको ॥

काफिर सूरत देखके मुँहसे आह निकल ही जाती है ।
कहते क्या हो ? अब कोई अल्लाहका यूँ भी नाम न ले ॥

गो नहीं जुज़-तर्क-हसरत[1] दर्देहस्तीका[2] इलाज ।
आह वोह बीमार जो आज़ुर्द-ए-परहेज़[3] है ॥

अहले-ख़िरदमें[4] इश्क़की रुसवाइयाँ न पूछ ।
आने लगी है ज़िक्रे-वफ़ासे हया मुझे ॥

या रब ! नवाये-दिलसे[5] तो कान आश्ना-से[6] हैं ।
आवाज़ आ रही है, यह कबकी सुनी हुई ॥

तर्के-तदबीरको भी देख लिया ।
यह भी तदबीर कारगर न हुई ॥
यूँ मिली हर निगाहसे वोह निगाह ।
एककी एकको ख़बर न हुई ॥
आज तस्कीने दर्देदिल 'फ़ानी' !
वह भी चाहा किये मगर न हुई ॥

उनके तो दिलसे नक्शे-कुदूरत[7] भी मिट गया ।
हम शाद[8] है कि दिलमें कुदूरत नहीं रही ॥

ज़िन्दगी ख़ुद क्या है 'फ़ानी' यह तो क्या कहिये मगर ।
मौत कहते हैं जिसे वोह ज़िन्दगीका होश है ॥

---

[1]अभिलाषाओंके त्यागके अतिरिक्त, [2]जीवन-व्यथाका, [3]परहेज़ करते-करते दुखी, [4]अक्लमन्दोंमें, [5]दिलकी आवाज़से, [6]परिचित-से, [7]द्वेष-भाव, [8]प्रसन्न ।

न दिलके ज़र्फ़को[1] देखो न तूरको[2] देखो।
बलाकी धुन है तुम्हें बिजलियाँ गिरानेकी॥

कलतक जो तुमसे कह न सका हाले-इज़्तराब[3]।
मिलती है आज उसकी ख़बर इज़्तराबसे॥

मुद्दआ है कि मुद्दआ न कहूँ।
पूछते है कि मुद्दआ क्या है?

दुश्मने-जाँ थे तो जाने-मुद्दआ क्यो हो गये?
तुम किसीकी जिन्दगीका आसरा क्यो हो गये?

जिन्दगी यादे-दोस्त है यानी—
जिन्दगी है तो ग़ममें गुज़रेगी॥

आपने अहद किया है मेरी ग़मख़्वारीका।
अब इजाज़त हो तो यह अहद मुझे याद रहे॥

मरके टूटा है कहीं सिलसिलये क़ैदे-हयात?
मगर इतना है कि ज़ंजीर बदल जाती है॥

शेवये-आशिकी नहीं हिज्रमें आरज़ूए-मर्ग।
हाँ नहीं जिन्दगी अज़ीज़, मौत ही जिन्दगी सही॥

जीने भी नहीं देते मरने भी नहीं देते।
क्या तुमने मुहब्बतकी हर रस्म उठा डाली?

तर्के-उम्मीद बसकी बात नहीं।
वरना उम्मीद कब बर आई है॥

---

[1]पात्रताको; [2]एक पर्वतका नाम, [3]तड़पकी ख़बर।

मौजोंकी सयासतसे मायूस न हो 'फ़ानी' !
गरदाबकी हर तहमें साहिल नज़र आता है ॥

फूलोंसे तअ़ल्लुक तो, अब भी है मगर इतना ।
जब ज़िक्रे-बहार आया, समझे कि बहार आई ॥

कर ख़ूये-जफ़ा न यक-बयक तर्क ।
क्या जानिये मुझपै क्या गुज़र जाये ॥

वोह हमसे कहाँ छुपते ? हम खुद हैं जवाब उनका ।
महमिलमें जो छुपते है, छुपते नहीं महमिलसे ॥

हर राहसे गुज़रकर दिलकी तरफ चला हूँ ।
क्या हो जो उनके घरकी यह राह भी न निकले ॥
शिकवा न कर फ़ुग़ाँका, वोह दिन ख़ुदा न लाये ।
तेरी जफ़ाएँ दिलसे जब आह भी न निकले ॥

लो तबस्सुम भी शरीके-निगहे-नाज़ हुआ ।
आज कुछ और बढ़ा दी गई क़ीमत मेरी ॥

दो घड़ीके लिए मीज़ाने-अदालत ठहरे ।
कुछ मुझे हश्रमें कहना है ख़ुदासे पहले ॥

गुल दिये थे तो काश फ़स्ले-बहार ।
तूने काँटे भी चुन लिये होते ॥

चौंक पड़ते हैं ज़िक्रे 'फ़ानी'से ।
नींद उचटती है इस कहानीसे ॥

बेज़ौक़ेनज़र बज़्मे-तमाशा न रहेगी ।
मुँह फेर लिया हमने तो दुनिया न रहेगी ॥

पछतायेंगे आप दिलको लेकर।
कमबख़्त गमआश्ना बहुत है।।

जिन्दगीकी दूसरी करवट थी मौत।
जिन्दगी करवट बदलकर रह गई।।

क्या बला थी अदाये-पुरसिशेयार।
मुझसे इज़हारे-मुद्दआ न हुआ।।

तेरे फ़िराक़में हालत तबाह-सी है तबाह।
न दिलपै हाथ न अब सूए-आसमाँ है निगाह।।

रस्मे-बेदादे-दोस्त आम हुई।
तल्ख़िये-ज़ीस्त भी हराम हुई।।

करमे-बेहिसाब चाहा था।
सितमे-बेहिसाबमें गुज़री।।

मिज़ाजेदहरमें उनका इशारा पाये जा।
जो हो सके तो बहरहाल मुसकराये जा।।

तू कहाँ है कि तेरी राहमें यह काबा-ओ-दैर।
नक्श बन जाते है मंजिल नहीं होने पाते।।

१४ मई १९५२ ई०]

काबा-ओ-दैर

वहशत १८ नवम्बर १८८१मे जन्मे, कलकत्तेके आप निवासी हैं और भारत-विभाजनके वाद पूर्वी पाकिस्तान चल गये हैं। १९११ ई०में आपका दीवान प्रकाशित हुआ था। आप इस्लामिया कालेज कलकत्तेमे उर्दूके प्रोफेसर रह चुके हैं। १९३१ ई०में अंग्रेज़ सरकारसे खानवहादुरीका खिताब भी मिला था। आपका कलाम पुख्ता और गहराई लिये हुए होता है।

अभी तो तेरी मायूसीसे इत्मीनान है ऐ दिल !
मुझे उस वक्त होगा खौफ जब तू शादमाँ होगा ॥

फिर नवाज़िश आपकी हदसे ज़ियादा हो गई।
फिर दिले-आफ़तरसीदा बदगुमाँ होने लगा ॥

मुझे अब तानये-अफसुर्दगी देता है तू ऐ दिल !
कभी तूफान था मैं भी ज़माना यादकर मेरा ॥

किसीसे कहती है चितवन किसीकी।
"कि तू क्या और तेरा मुद्दआ क्या ॥"

निशाने-मंज़िले-जानाँ मिले-मिले-न-मिले ।
मज़ेकी चीज़ है यह ज़ौक़े-जुस्तजू मेरा ॥

है नज़रबाज़ोंमें हलचल, सब हैं गरमे-जुस्तजू ।
वोह परी है कौन 'वहशत' जिसका दीवाना हुआ ॥

दिलके कहनेपै चलूँ अक़्लका कहना न करूँ ।
मैं इसी सोचमें हूँ, क्या करूँ और क्या न करूँ ॥

ज़रूरत तुमको क्या मुझसे तकल्लुफ़की तवाज़अकी ।
यही अन्दाज़ वोह हैं जो मुझे मायूस करते हैं ॥

इस दिलनशीं अदाका मतलब कभी न समझे ।
जब हमने कुछ कहा है, वोह मुसकरा दिये हैं ॥*

कुछ शौक़ कर दिया है, छेड़ोंसे हमने तुमको ।
कुछ हौसले हमारे तुमने बढा दिये हैं ॥

निशाने-ज़िन्दगि-ए-दिल है, बेक़रारिये-दिल ।
है दिलकी मौत अगर चैन आ गया दिलको ॥

आप अपना रूऐ-ज़ेबा देखिये ।
या मुझे महवे-तमाशा देखिये ॥

जिससे चाहो पूछ लो तुम मेरे सोज़े-दिलका हाल ।
शमअ भी महफ़िलमें है; परवाना भी महफ़िलमें है ॥

---

*इसी ख़यालको 'सबा' अकबरावादीने किस ख़ूबीसे व्यक्त किया है—

गलतफ़हमियोंमें जवानी गुज़ारी ।
कभी वोह न समझे कभी हम न समझे ॥

अब ख़फ़ा होने लगे हो मुझसे हर-हर बातमें।
तुम कि हो जाते थे दुश्मनसे ख़फ़ा मेरे लिए॥

दोनोंने किया है मुझको रुसवा।
कुछ दर्दने और कुछ दवाने॥

हँसा हूँ हालपर अपने जहाँ रोनेका मौक़ा था।
किया है शुक्रके परदेमें क़िस्मतका गिला मैंने॥

है हिदायतके लिए मौजूद ख़ुद तेरा ज़मीर।
गोशे-दिलसे सुन हक़ीक़तकी यही आवाज़ है॥

वोह आयें या न आयें, उन्हे अख़्तियार है।
ऐ ज़ौक़े-इन्तज़ार मै ख़ुश हूँ कि तू तो है॥

परवानेकी है मौतपर ऐ शमअ़! मुझको रश्क।
तेरा शहीदेनाज़ तेरे रूबरू तो है॥

हो रसाई क्या वहाँतक बस इक आसरा यही है।
कि उन्हींको याद आये कभी अपने नातवाँकी॥

निगार जनवरी १९४१

अल्लाहरे-ज़ोरे मजबूरी ख़ुद मुझको हैरत होती है।
जो बार उठाना पड़ता है, क्योंकर वोह उठाया जाता है॥
यह भी है तमाशा उल्फ़तका, जो बात है वोह नादानीकी।
मंज़ूर नहीं है रब्त जिन्हे, रब्त उनसे बढ़ाया जाता है॥

सरेबालीं ज़रा आजाओ तुम बीमारे-हिजरांके।
कि इक हिचकीमें वोह कह दे कहानी ज़िन्दगी भरकी॥

निगाहे-नाज तेरी मेरे हक़म इक मुअम्मा है।
समझ ही में नहीं आता कि क्या इरशाद होता है।।

गो मैं हूँ तुझसे दूर तेरी आरज़ू तो है।
तेरा पता मिले-न-मिले जुस्तजू तो है।।

बारहा बे इल्तफाती देखकर सैयादको।
खुद-ब-खुद बेताब होकर मै तहे-दाम आ गया।।

२० मई १९५२ ई०]

सैयाद

महफ़िलमें हूँ अब रंगे-'यगाना' ग़ालिब।
वोह कौन 'यगाना' ? वही 'ग़ालिब'के चचा॥

'यास'के बजाय अब 'यगाना' उपनामसे शेर कहने लगे। निरन्तरके विरोधोके कारण लखनऊका वातावरण इतना विषाक्त हो गया कि आप लाहौर चले गये और वहाँ उर्दू-साहित्यके प्रसिद्ध सम्पादकाचार्य्य तथा आलोचक मौलाना ताजवर नजीबाबादीके साथ साहित्यिक अनुष्ठानमें लग गये। वहाँ भी पंजाबियोकी प्रान्तीय भावनाओके कारण आप स्थिर न रह सके और लखनऊ लौट आना पडा। लखनऊ पहुँचनेपर अहले लखनऊके पुराने ज़ख्म फिर हरे हो गये, और वे आपको हर तरहसे मिटानेको कटिबद्ध हो गये। आखिर महाराजा किशनप्रसाद 'शाद' प्रधान मंत्रीके निमंत्रणपर आप हैदराबाद चले गये और वहाँ किसी ज़िलेमें सब-रजिस्ट्रार बना दिये गये।

मिर्ज़ा 'यगाना' सर्वधर्म समभावी है। साम्प्रदायिकतासे कोसो दूर है। फर्माया है—

कृशनका[1] हूँ मै पुजारी अलीका बन्दा हूँ।
'यगाना' शानेख़ुदा देखकर रहा न गया॥

मिर्ज़ा किसी बाहरी ख़ुदाके कायल नही, वह तो अपने मनमन्दिरके पुजारी है। जो ईश्वर अपने घटमे विराजमान है, उसे बाहर खोजना सरासर भूल है—

आपसे बाहर चले हो ढूंढने।
आह! पहला ही कदम झूठा पडा॥

दिखावटी पूजा-उपासनासे आपको बेहद चिढ है—

कलमा पढ़ूं तो क्यो पढ़ूं, सबकी नज़रपै क्यो चढ़ूं ?
यादे-ख़ुदा तो दिलसे है, दिलसे ज़बांतक आये क्यो ?

---

[1]शुद्ध नाम कृष्ण।

मिर्ज़ा मज़हबी दीवानगीको इन्सानियतके लिए बोझ समझते हैं—

दुनियाके साथ दीनकी बेगार ! अलअमाँ।
इन्सान आदमी न हुआ जानवर हुआ ।।

और पुरुषार्थ छोडकर जो हाथपर हाथ धरे ईश्वरके भरोसे बैठनेके आदी हैं, उनके समक्ष ईश्वरकी सर्वशक्तिमानताकी नि सारता बताते हुए फर्माया है—

आईको टाल दे जभी जानें।
दम-ब-खुद है तो फिर ख़ुदा क्या है ।।

छैल-छबीले विलासी युवकोपर कितना मीठा व्यग किया है—

वक़्त जिसका कटे हसीनोमें।
कोई मर्दाना काम क्या करता ?

यह नौजवानी, यह नामुरादी।
छाई है मुँहपर यह मुर्दनी क्या ।।

मिर्ज़ा सबके हितमें अपना हित समझते है। वे आपा-धापीके कायल नही। यहाँतक कि वह एक ही नावमें बैठे मुसाफिरोको डूबते देखकर स्वय भी डूब जाना श्रेष्ठ समझते हैं—

मुझे ऐ नाख़ुदा ! आख़िर किसीको मुंह दिखाना है।
बहाना करके तनहा पार उतर जाना नहीं आता ।।

महात्मा गाधी जीवनभर हिन्दू-मुस्लिम एक्यका प्रयत्न करते रहे, परन्तु साम्प्रदायिक लोग सदैव अडगा लगाते रहे, इसी भावको मिर्ज़ा यूं व्यक्त करते हैं—

सुलह ठहरी तो है बिरहमनसे।
कहीं मजहब अडा न दे कोई टाँग ।।

इन्सान, इन्सानके आगे हाथ फैलाये, इस दयनीय स्थितिसे खीजकर मिर्ज़ाको कहना पडा—

ख़्वाह प्याला हो या निवाला हो ।
वन पड़े तो झपट ले, भीक न मांग ॥

ईश्वर और खुदाके नामपर ससारमें जैसे वीभत्स कृत्य हुए है, वैसे कार्य नारकीयो, दोज़खियो और दरिन्दोसे होने सम्भव ही नही। धर्म-मज़हवकी रक्षाके लिए जितने मानवोकी हत्याये होती रही है, यदि उन सवकी हड्डियाँ एकत्र की जा सकती तो सुमेर पर्वतको अपनी इस ऊँचाईका इस कदर गर्व न रहता। ईसाइयोके रोमन कैथोलिक और प्रोटेंसटैण्टोका पारस्परिक वध, आस्तिको द्वारा नास्तिकोका विध्वन्स, और अहले इस्लाम-का ग़ैर इस्लामियोके खिलाफ जहाद, पुराने पोथोमे पडे कराह रहे थे कि भारत-विभाजनके वक्त ईश्वर-खुदाके लाडले वेटोने उनके नामपर जो लाखो मनुष्योकी वलि दी है और लाखो नारियोकी जो अस्मतदरी की है, उसके समक्ष दरिन्दोकी क्रूरता भी पानी-पानी हो गई। स्वय खुदा भी यह महसूस करने लगा होगा कि मैंने दुनिया वनाकर घोर अपराध ही किया है—

तख़लीक़े-कायनातके दिलचस्प जुर्मपर ।
हँसता तो होगा आप भी यज़दाँ कभी-कभी ॥

—अदम

ऐसे ही मजहवी उन्मादसे तग आकर मिर्ज़ा 'यगाना'ने अपने किसी मुसलमान दोस्तको कुछ ऐसे शब्द लिख दिये, जो इस्लामके लिए अपमान जनक समझे गये। वस फिर क्या था ? खुदाके वन्दो और रसूलके इन लाडलोने ७० वर्षके बूढे यगानाको घेर लिया। तारकोलसे मुंह काला करके, जूतोका हार डालकर उनको गधेपर विठाना चाहा, मगर गधेको

मनुष्योकी यह हरकत पसन्द न आई, और वह स्वय शर्माकर भाग खडा हुआ। इस वाकयेसे मजहबी दीवाने क्या सबक लेते, उनका इन्तक़ाम और भडक उठा, और उन्होने एक और गधेको पकडकर रिक्शामें जोता और मिर्ज़ा 'यगाना'को उसपर बिठाकर लखनऊ भरमें घुमाया गया। थोडी-थोडी दूरपर उन्हे रिक्शापर खडे होनेको मजबूर किया जाता था, ताकि जनता उनपर थूक सके, लानत-न्योछावर कर सके और यह सब दिनदहाडे उत्तर प्रदेशकी राजधानी लखनऊमें इसी अप्रेल १६५३ में पुलिस-की चौकियोके सामने हुआ। मानवताका शव निकलता रहा, सभ्यता बैठी सर पीटती रही, मगर ख़ुदाके बन्दे ख़ुदाको ख़ुश करनेमें मसरूफ रहे।

सत्य बोलनेपर भी अनेक बाधाओ-मुसीबतोका सामना करना पडता है यह मिर्ज़ा यगाना ख़ूब जानते थे, जैसा कि उन्होने वर्षों पहले फर्माया भी था—

शामत आ गई आख़िर कह गया ख़ुदा लगती।
रास्तीका फल पाता बन्दये-मुकर्रब क्या ?

[बारगाहे ख़ुदावन्दीका सबसे बडा फरिश्ता खरी बात कहने पर जन्नतसे निकाल दिया गया। उसने यही कहा था कि जिस सरको मैंने तेरी हुज़ूर मे झुकाया है, उसे आदमे-ख़ाकीके सामने क्योकर झुका दूं ? कितना उच्च और श्रेष्ठ उपासनाका भाव था, परन्तु ख़ुदा साहब इस उच्च भावनाकी क़द्र न कर सके, और तानाशाहीपर उतर आये कि तूने आज्ञा भग करके अनुशासन-हीनताका परिचय दिया है और उसे जन्नतसे निकाल दिया। जब फरिश्ते भी सत्य बोलनेपर दण्ड पा सकते हैं तो सर्वसाधारणकी तो बात ही क्या ?]

फिर भी न जाने क्यो चूक गये और ईर्ष्यालुओको व्यर्थमे ही आक्रमण करनेका अवसर दे दिया।

मिर्ज़ा 'यगाना' वृद्धावस्थाके कारण हैदराबादसे आकर अब लखनऊ रहने लगे हैं।

जून १९५३]

ख़ुदीका नशा चढा आपमें रहा न गया।
ख़ुदा बने थे 'यगाना' मगर बना न गया॥
गुनाहे-ज़िन्दादिली कहिये या दिल-आज़ारी[1]।
किसीपै हँस लिये इतना कि फिर हँसा न गया॥
समझने क्या थे, मगर सुनते थे तरानये-दर्द।
समझमें आने लगा जब तो फिर सुना न गया॥
पुकारता रहा किस-किसको डूबनेवाला।
ख़ुदा थे इतने, मगर कोई आड़े आ न गया॥

पहले अपनी तो ज़ात पहचाने।
राज़े-कुदरत बखाननेवाला॥
जानकर और होगया अनजान।
हो तो ऐसा हो जाननेवाला॥
पेटके हलके लाख बडमारें।
कोई खुलता है जाननेवाला ?
ख़ाकमें मिलके पाक हो जाता।
छानता क्या है छाननेवाला॥
दिनको दिन समझे और न रातको रात।
वक्तकी क़द्र जाननेवाला॥

क्या ख़बर थी दिल-सा शाह-शाह आख़िर एक दिन।
इश्क़के हाथो गदाओ-का-गदा[2] हो जायगा॥

---

[1]सताना, [2]भिक्षुक।

किस दिले-बेक़रारको तूने यह वलवला दिया।
देना न देना एक है, जर्फ़से[1] जब सिवा दिया॥
हुस्न चमक गया तो क्या, बूएवफा तो उड़ गई।
इस नई रोशनीने आह दिलका कँवल बुझा दिया॥

जिन्दा रक्खा है सिसकनेके लिए
वाह अच्छे दोस्तसे पाला पड़ा॥

किधर चला है? इधर एक रात बसता जा।
गरजनेवाले गरजता है क्या, बरसता जा॥
रुला-रुलाके ग़रीबोंको हँस चुका कलतक।
मेरी तरफ़से अब अपनी दसापै हँसता जा॥

शरबतका घूंट जानके पीता हूँ खूनेदिल।
ग़म खाते-खाते मुँहका मज़ातक बिगड़ गया॥

इसी फरेबने मारा कि कल है कितनी दूर।
इस आज-कलमें अबस[2] दिन गँवाये हैं क्या-क्या?
खुशीमें अपने कदम चूम लूँ तो ज़ेबा[3] है।
वोह लग़ज़िशोंपै[4] मेरी मुसकराये हैं क्या-क्या॥

बस एक नुक्तये-फ़र्ज़ीका[5] नाम है काबा।
किसीको मरकज़े-तहक़ीकका[6] पता न चला॥
उमीदो-बीमने[7] मारा मुझे दुराहेपर।
कहाँके दैरोहरम? घरका रास्ता न मिला॥

---

[1]आवश्यकतासे अधिक, पात्रतासे सिवा, [2]व्यर्थ, [3]मुनासिब; [4]लडखडानेपर, [5]कल्पना-बिन्दुका, [6]खोजके लक्षका, [7]आशा-निराशाने।

मुझे दिलकी ख़तापर 'यास' ! शरमाना नहीं आता।
पराया जुर्म अपने नाम लिखवाना नहीं आता॥
बुरा हो पाये-सरकशका कि थकजाना नहीं आता॥
कभी गुमराह होकर राहपर आना नहीं आता॥
मुसीबतका पहाड आख़िर किसी दिन कट ही जायेगा॥
मुझे सरमारकर तेशेसे मर जाना नहीं आता॥
दिले-बेहौसला है इक ज़रा-सी ठेसका महमाँ।
वह आँसू क्या पियेगा जिसको ग़म खाना नहीं आता॥
सरापा राज़ हूँ मे क्या बताऊँ कौन हूँ, क्या हूँ?
समझता हूँ मगर दुनियाको समझाना नहीं आता॥

गिला किसे है कि क़ातिलने नीमजाँ[1] छोडा।
तडप-तडपके निकालूँगा हौसला दिलका॥
ख़ुदा बचाये कि नाज़ुक है उनमें एक-से-एक।
तुनक-मिजाज़ोंसे ठहरा मुआमला दिलका॥
किसीके हो रहो अच्छी नहीं यह आज़ादी।
किसीकी ज़ुल्फ़से लाज़िम है सिल्सिला दिलका॥
पियाला ख़ाली उठाकर लगा लिया मुँहसे।
कि 'यास' कुछ तो निकल जाय हौसला दिलका॥

परवाने कर चुके थे सर-अंजामे-ख़ुदकशी[2]।
फ़ानूस आड़े आ गया, तक़दीर देखना॥

चराग़ेज़ीस्त[3] बुझा दिलसे इक धुआँ निकला।
लगाके आग मेरे घरसे मेहमाँ निकला॥

---

[1]अर्द्धमृतक, [2]आत्महत्याका प्रयत्न, [3]जीवन-दीप।

तडपके आबलापा[1] उठ खडे हुए आखिर।
तलाशेयारमें जब कोई कारवाँ निकला॥
लहू लगाके शहीदोमें हो गये दाखिल।
हविस तो निकली मगर हौसला कहाँ निकला?
लगा है दिलको अब अजामेकारका खटका।
बहारे-गुलसे भी इक पहलुए-खिज़ाँ निकला॥

ज़माना फिर गया चलने लगी हवा उलटी।
चमनको आग लगाके जो बाग़बाँ निकला॥
कलामे 'यास'से दुनियामें फिर इक आग लगी।
यह कौन हज़रते 'आतिश'का हमज़बाँ निकला?

हवाएतुन्दमें[2] ठहरा न आशियाँ अपना।
चराग जल न सका ज़ेरे-आस्माँ अपना॥
जरसने[3] मुज़दए-मंजिल[4] सुनाके चौंकाया।
निकल चला था दबे पाँव कारवाँ अपना॥
खुदा किसीको भी यह ख्वाबे-बद न दिखलाये।
कफसके सामने जलता है आशियाँ अपना॥

सुहबते-वाइज़में भी अँगडाइयाँ आने लगीं।
राज़ अपनी मैकशीका क्या कहे क्योंकर खुला।

रोशन तमाम काबा-ओ-बुतख़ाना हो गया।
घर-घर जमालेयारका अफसाना हो गया॥

दयारे-बेखुदी है अपने हकमें गोशये-राहत।
ग़नीमत है घडीभर ख्वाबे-गफलतमें बसर होना॥

---

[1]पाँवके छाले, [2]तेज़ हवामें, [3]यात्रीदलके ऊँटोकी घण्टीकी आवाज़ने, [4]यात्राका अन्त होनेकी खुशखबरी।

दिले-आगाहने वेकार मेरी राह खोटी की।
बहुत अच्छा था अजामे-सफरसे बेख़बर होना ॥

लाश कम्बख़्तकी काबेमें कोई फिकवा दे।
कूचये-यारमें क्यो ढेर हो बेगानेका ॥

जीस्तके है यही मज़े वल्लाह।
चार दिन शाद, चार दिन नाशाद ॥
सब्र इतना न कर कि दुश्मनपर।
तल्ख़ हो जाय लज़्ज़ते-बेदाद ॥

आप क्या जानें मुझपै क्या गुज़री।
सुबहदम देखकर गुलोका निखार ॥
दूरसे देख लो हसीनोको।
न बनाना कभी गलेका हार ॥
अपने ही सायेसे भडकते हो।
ऐसी वहशतपै क्यो न आये प्यार ॥
तू भी जी और मुझे भी जीने दे।
जैसे आबाद गुलसे पहलू-ए-ख़ार ॥
बेनियाज़ी भली कि बेअदबी।
लडखडाती ज़बांसे शिकवये-यार ॥
बन्दगीका सबूत दूँ क्योकर।
इससे बहतर है कीजिये इन्कार ॥
ऐसे दो दिल भी कम मिले होगे।
न कशाकश हुई न जीत न हार ॥

ढूंढ़ते फिरते हो अब टूटे हिए दिलमें पनाह।
दर्दसे ख़ाली दिले-गबरू-मुसलमां देखकर ॥

सब्र करना सख़्त मुश्किल है तड़पना सहल है ।
अपने बसका काम कर लेता हूँ आसाँ देखकर ॥

ऐसी पिला कि साक़िया ! फ़िक्र न हो निजातकी ।
नशा कहीं उतर न जाय रोज़े-शुमार देखकर ॥
आबला-पा निकल गये काँटोको रौंदते हुए ।
सूझा फिर आँखसे न कुछ मंज़िले-यार देखकर ॥

सब तेरे सिवा काफ़िर, आख़िर इसका मतलब क्या ?
सिर फिरा दे इन्साँका ऐसा ख़ब्ते-मज़हब क्या ?

ज़मीं करवट बदलती है बलाये-नागहाँ होकर ।
अजब क्या सरपै आये पाँवकी ख़ाक आस्माँ होकर ॥
उठो ऐ सोनेवालो ! सरपै धूप आई क़यामतकी ।
कहीं यह दिन न ढल जाये नसीबे-दुश्मनाँ होकर ॥
अरे ओ जलनेवाले ! काश जलना ही तुझे आता ।
यह जलना कोई जलना है कि रह जाये धुआँ होकर ॥

पसीना तक नहीं आता, तो ऐसी ख़ुश्क तौबा क्या ?
नदामत वोह कि दुश्मनको तरस आ जाये दुश्मनपर ॥

उस तरफ़ सात आसमाँ और इस तरफ़ इक नातवाँ ।
तुमने करवट तक न ली दुनियाको बरहम देखकर ॥

ख़ुदा जाने अजलको पहले किसपर रहम आयेगा ?
गिरफ़्तारे कफ़सपर या गिरफ़्तारे नशेमनपर ॥

मजाल थी कोई देखे तुम्हे नज़र भरकर ।
यह क्या है आज पडे हो मले-दले क्योंकर ॥

कोई क्या जाने बाँकपनके यह ढंग।
सुलह दुश्मनसे और दोस्तसे जंग॥
क्या ज़माना था कैसे दुश्मन थे?
रातभर सुलह और दिनभर जंग॥
संगे-दिलको बना दूँ देवता मैं।
आप क्या जानें बन्दगीके ढंग?

फिरते हैं भेसमें हसीनोंके।
कैसे-कैसे डकैत थाग-की-थाग॥

आह! यह बन्दये ग़रीब आपसे लौ लगाये क्यों?
आ न सके जो वक़्तपर, वक़्तपै याद आये क्यों?*

दीदकी[1] इल्तजा[2] करूँ? तिश्ना[3] ही क्यो न जान दूँ।
परदयेनाज़[4] ख़ुद उठे, दस्ते-दुआ उठायें क्यों?

बदल न जाये ज़मानेके साथ नीयत भी।
सुना तो होगा जवानीका एतबार नहीं॥
जो ग़म भी खायें तो पहले खिलायें दुश्मनको।
अकेले खायेंगे ऐसे तो हम गँवार नहीं॥

नतीजा कुछ भी हो लेकिन हम अपना काम करते हैं।
सबेरे ही से दूरन्देश फ़िक्रे-शाम करते हैं॥

---

*इसी मज़मूनपर असर लखनवीका यह अमर शेर भी सुनें—

हम उसीको ख़ुदा समझते हैं।
जो मुसीबतमें याद आ जाये॥

[1]दर्शनोकी, [2]प्रार्थना, [3]प्यासा, [4]प्रेयसीका परदा।

दावरे-हश्र[1] होशयार, दोनोमें इम्तयाज़[2] रख ।
बन्दये-नाउम्मीद[3] और बन्दये-बेनियाज़में[4] ।।
यादे-ख़ुदाका वक्त भी आयेगा कोई या नहीं ?
यादे-गुनाह कब तलक शामोसहर नमाज़में ?

नाख़ुदा ! कुछ ज़ोरे-तूफ़ाँ आज़माई भी दिखा ।
फ़िक्रे-साहिल छोड लगर डाल दे मजधारमें ।।
'यास' ! गुमराहीसे अच्छी ज़हमते-वामान्दगी ।
डाल लो ज़जीर कोई पायेकज-रफ़्तारमें ।।

पैवन्दे-ख़ाक होनेका अल्लाहरे इश्तयाक ।
उतरे हम अपने पाँवसे अपने मज़ारमें ।।
शरमिन्दये-कफ़न न हुए आसमाँसे हम ।
मारे पडे है सायए-दीवारे-यारमें ।।
कहते हो अपने फेलका मुख़्तार है वशर ।
अपनी तो मौत तक न हुई अख़्तियारमें ।।
दुनियासे 'यास' जानेको जी चाहता नहीं ।
वल्लाह क्या कशिश है इस उजड़े दयारमें ।।

मौत माँगी थी ख़ुदाई तो नहीं माँगी थी ।
ले दुआ कर चुके अब तर्के-दुआ करते है ।।
गलेमें बाहे डाले चैनसे सोना जवानीमें ।
कहाँ मुमकिन फिर ऐसा ख़्वाब देखूं जिन्दगानीमें ।।
ग़नीमत जान उस कूचेमें थककर बैठ जानेको ।
किसे दमभर मिला आराम दौरे-आसमानीमें ।।

---

[1]प्रलयके दिन न्याय करनेवाले, [2]भेद-अन्तर, [3]असफल भक्तमें; [4]अभिलाषा न रखनेवाले भक्तमें ।

यकसाँ कभी किसीकी न गुज़री जमानेमें।
यादश बख़ैर बैठे थे कल आशियानेमें॥
सदमा दिया तो सब्रकी दौलत भी देगा वोह।
किस चीजकी कमी है सख़ीके ख़जानेमें॥
अफसुर्दा ख़ातिरोंकी ख़िज़ाँ क्या, बहार क्या?
कुंजे-कफसमें मर रहे या आशियानेमें॥
हम ऐसे बदनसीब कि अबतक न मर गये।
आँखोंके आगे आग लगी आशियानेमें॥
दीवाने बनके उनके गलेसे लिपट भी जाओ।
काम अपना कर लो 'यास' बहाने-बहानेमें॥

हिजाबेनाज़ बेजा 'यास' जिस दिन बीचमें आया।
उसी दिनसे लड़ाई ठन गई शेख़ो-बिरहमनमें॥

तौबा भी भूल गये इश्क़में वोह मार पड़ी।
ऐसे ओसान गये है कि ख़ुदा याद नहीं॥
क्या अजब है कि दिले-दोस्त हो मदफन अपना।
कुश्तये-नाज़ हूँ मैं क़ुश्तये-बेदाद नहीं॥

ख़ूनके घूँट बलानोश पिये जाते है।
ख़ैर साक़ीकी मनाते है जिये जाते है॥
एक तो दर्द मिला उसपै यह शाहाना मिज़ाज।
हम ग़रीबोंको भी क्या तोहफे दिये जाते है॥
दिल है पहलूमें कि उम्मीदकी चिनगारी है।
अबतक इतनी है हरारत कि जिये जाते है॥

तो क्या हमीं है गुनहगार, हुस्नेयार नहीं?
लगावटोंका गुनाहोंमें क्या शुमार नहीं?

खटका लगा न हो तो मज़ा क्या गुनाहका।
लज्ज़त ही और होती है चोरीके मालमें॥
अल्लाह कफ़समें आते ही क्या मत पलट गई।
आख़िर हमीं तो हैं कि फड़कते थे जालमें॥

महराबोमें सजदा वाजिब, हुस्नके आगे सजदा हराम।
ऐसे गुनहगारोपै ख़ुदाकी मार नहीं तो कुछ भी नहीं॥
दिलसे ख़ुदाका नाम लिये जा, काम किये जा दुनियाका।
काफ़िर हो, दींदार हो, दुनियादार नहीं तो कुछ भी नहीं॥

सजदा वह क्या कि सरको झुकाकर उठा लिया।
बन्दा वोह है जो बन्दा हो, बन्दानुमा न हो॥
उम्मीदे-सुलह क्या हो, किसी हक़परस्तसे।
पीछे वोह क्या हटेगा, जो हदसे बढा न हो॥

मज़ा जब है कि रफ्ता-रफ्ता उम्मीदें फलें-फूलें।
मगर नाज़िल कोई फ़ज़्ले-इलाही नागहाँ क्यो हो॥
समझमें कुछ नहीं आता पढे जाऊँ तो क्या हासिल ?
नमाज़ोका है कुछ मतलब तो परदेसी ज़बाँ क्यो हो ?

दिल अपना जलाता हूँ, काबा तो नहीं ढाता।
और आग लगाते हो, क्यों तुहमते-बेजासे॥

बाज़ आ साहिलपै गोते खानेवाले बाज़ आ।
डूब मरनेका मज़ा दरियाए-बेसाहिलमें है॥

मुफलिसीमें मिज़ाज शाहाना।
किस मरज़की दवा करे कोई॥

हँस भी लेता हूँ ऊपरी दिलसे।
जी न बहले तो क्या करे कोई॥

न जाने क्या हो यह दीवाना जिस जगह बैठे।
खुदीके नशेमें कुछ अनकही न कह बैठे॥

कोई जिद थी या समझका फेर था।
मन गये वोह मैंने जब उल्टी कही॥
शक है काफिरको मेरे ईमानमें।
जैसे मैंने कोई मुंह देखी कही॥
क्या खबर थी यह खुदाई और है।
हाय! क्यो मैंने खुदा लगती कही॥

ताअत हो या गुनाह पसेपरदा खूब है।
दोनोंका मजा जब है कि तनहा करे कोई॥

बन्दे न होगे, जितने खुदा है खुदाईमें।
किस-किस खुदाके सामने सजदा करे कोई?

इतना तो जिन्दगीका कोई हक अदा करे।
दीवानावार हालपै अपने हँसा करे॥

जमाना खुदाको खुदा जानता है।
यही जानता है तो क्या जानता है॥
वोह क्यो सर खपाये तेरी जुस्तजूमें?
जो अजामे-फिक्रेरसा जानता है॥
खुदा ऐसे बन्दोंसे क्यो फिर न जाये।
जो बैठा हुआ माँगना जानता है॥
वोह क्यो फूल तोडे वोह क्यों फूल सूंघे?
जो दिलका दुखाना बुरा जानता है॥

क्यों होशमें फिर आया, क्यो हाथ मल रहा है ?
हदसे गुजरनेवाले तेरी यही सजा है ॥
मजिलकी फिक्र क्यो हो, जब तू हो और मै हूँ ।
पीछे न फिरके देखूँ काबा भी हो तो क्या है ॥

हासिले-फिक्रे नारसा क्या है ।
तू खुदा बन गया बुरा क्या है ॥
कैसे-कैसे खुदा बना डाले ।
खेल बन्देका है खुदा क्या है ॥
दर्दे-दिलकी कोई दवा न हुआ ।
या इलाही ! यह माजरा क्या है ॥
नूर ही नूर है कहाँका जहूर ।
उठ गया परदा अब रहा क्या है ॥
रहने दे हुस्नका ढका परदा ।
वक्त-बेवक्त झाँकता क्या है ॥

यहींसे सैर कर लो 'यास' इतनी दूर क्यो जाओ ।
अदम आबादका डाडा मिला है कूए-कातिलसे ॥

गला न काट सके अपना वाये नाकामी ।
पहाड काटते है रोजोशब मुसीबतके ॥

मौत आई आने दीजिये परवा न कीजिये ।
मजिल है खत्म सजदये-शुकराना कीजिये ॥
दीवानावार दौडके कोई लिपट न जाय ।
आँखोमें आँख डालके देखा न कीजिये ॥

क्या कोई पूछनेवाला भी अब अपना न रहा ।
दर्दे-दिल रोने लगे 'यास' जो बेगानोंसे ॥

पढके दो कलमे अगर कोई मुसलमाँ हो जाय ।
फिर तो हैवान भी दो रोजमें इन्साँ हो जाय ॥
आगमें हो जिसे जलना तो वोह हिन्दु बन जाय ।
ख़ाकमें हो जिसे मिलना वोह मुसलमाँ हो जाय ॥
नशये-हुस्नको इस तरह उतरते देखा ।
ऐबपर अपने कोई जैसे पशेमाँ हो जाय ॥

मजा गुनाहका जब था कि बावज़ू करते ।
बुतोको सजदा भी करते तो क़िब्लारू करते ॥

जो रो सकते तो आँसू पूछनेवाले भी मिल जाते ।
शरीके-रजोगम दामनसे पहले आस्तीं होती ॥

जैसे दोज़ख़की हवा खाके अभी आया है ।
किस क़दर वाइज़े मक्कार डराता है मुझे ॥
जलवये-दारोरसन अपने नसीबोंमें कहाँ ?
कौन दुनियाकी निगाहोपै चढाता है मुझे ॥

सुलहजूईने गुनहगार मुझे ठहराया ।
जुर्म साबित जो किया चाहो तो मुश्किल हो जाय ॥
नाख़ुदाको नहीं अबतक तहे-दरियाकी ख़बर ।
डूबकर देखे तो बेगानये-साहिल हो जाय ॥

एक ही सजदा किया दूसरेका होश कुजा ।
ऐसे सजदेका यह अजाम कि बातिल हो जाय ॥

न इन्तक़ामकी आदत न दिल दुखानेकी ।
बदी भी कर नही आती मुझे कुजा नेकी ?

अल्लाहरी बेताबियेदिल वस्लकी शबको ।
कुछ नींद भी आँखोमें है कुछ मयका असर भी ॥

वोह् कश-म-कशे-ग़म है कि मैं कह् नहीं सकता।
आग़ाज़का अफसोस और अंजामका डर भी॥

कोई बन्दा इश्क़का है कोई बन्दा अक्लका।
पांव अपने ही न थे क़ाबिल किसी ज़ंजीरके॥

शैतानका शैतान, फरिश्तेका फरिश्ता।
इन्सानकी यह बुलअ़जबी याद रहेगी॥

दर्देसर था सजदये शामोसहर मेरे लिए।
दर्देदिल ठहरा दवाए दर्देसर मेरे लिए॥
दर्देदिलके वास्ते पैदा किया इन्सानको।
ज़िन्दगी फिर क्यो हुई है, दर्देसर मेरे लिए॥
फितरते-मजबूरको अपने गुनाहोंपै है शक।
वा रहेगा कबतलक तौबाका दर मेरे लिए॥

हँसीमें लग़ज़िशे-मस्ताना उड़ गई वल्लाह्।
तो बेगुनाहोसे अच्छे गुनाहगार रहे॥
ज़माना इसके सिवा और क्या वफा करता।
चमन उजड़ गया कांटे गलेका हार रहे॥

ऐसी आज़ाद रूह् इस तनमें।
क्यो पराये मकानमें आई॥
बात अधूरी मगर असर दूना।
अच्छी लुक़नत ज़बानमें आई॥
आंख नीची हुई अरे यह क्या।
क्यो ग़रज़ दरमियानमें आई॥
मैं पयम्बर नहीं 'यगाना' सही।
इससे क्या कस्र शानमें आई॥

कीमया-ए-दिल क्या है, खाक है, मगर कैसी ?
लीजिये तो महँगी है, बेचिये तो सस्ती है ॥
खिज्रे-मंजिल अपना हूँ, अपनी राह चलता हूँ ।
मेरे हालपर दुनिया क्या समझकर हँसती है ॥

बन्दा वोह बन्दा जो दम न मारे ।
प्यासा खडा हो दरिया किनारे ॥

शबे-उम्मीद कट गई लेकिन—
जिन्दगी अपनी मुख्तसिर न हुई ॥

सलामत रहें दिलमें घर करनेवाले ।
इस उजडे मकांमें बसर करनेवाले ॥
गलेपै छुरी क्यो नहीं फेर देते ।
असीरोंको बेबालो-पर करनेवाले ॥
खडे है दुराहेपै दैरो-हरमके ।
तेरी जुस्तजूमें सफर करनेवाले ॥
कुजा सहने-आलम, कुजा कुंजे-मरक़द ।
बसर कर रहे है बसर करनेवाले ॥

१० दिसम्बर १९५०]

यगाना साहबके कलामका चयन उनके निम्न ग्रन्थोंसे किया गया है—
१—गजीना—प्रकाशक, कौमी दारुल इशाअत लाहौर,
प्रकाशन-सन और आवृत्तिका उल्लेख नहीं ।
१८६ पृष्ठोमें १२१ गजलें और १६३ रुबाइयाँ है,
२—**आयाते वजदानी**—प्रकाशक—मिर्ज़ा मुरादवेग चुगताई हैदराबाद दक्षिण—१९४५ ई०मे प्रकाशित पृ० ४००, विस्तृत टीका और भाष्य सहित ।

हज़रत अमजद १८८४ ई०मे हैदरावादमें पैदा हुए। आपके जन्मके ४० रोज़ वाद पिताका निधन हो गया। माताके अतिरिक्त कोई ऐसा कुटुम्बी या रिश्तेदार न था, जो भरण-पोषणका भार उठाता। आमदनीका कोई ज़रिया नही था। ज़िन्दगी निहायत तकलीफसे वसर होती थी। फिर भी-विधवा और असहाय माँ ने हिम्मत न हारी और महनत-मज़दूरी करके अमजदका भरण-पोषण ही नही किया, अपितु उन्हे उन दिनोके रिवाजके अनुसार फारसीकी उच्च शिक्षा भी दिलाई। अमजद वहुत परिश्रमी और अध्ययनशील थे। जिन उस्तादसे आपने फारसीका अध्ययन किया, वे आपके मकानसे १४ मील दूर रहते थे। फिर भी आप उनके पास दैनिक पढने जाते थे। इस परिश्रमका परिणाम यह हुआ कि आपने फारसीमें मुशी फाज़िलकी सर्वोच्च डिगरी प्राप्त की।

हैदरावाद उन दिनो शेरो-शायरीका मुख्य केन्द्र वना हुआ था। मिर्ज़ा 'दाग़'-जैसे ख्यातिप्राप्त उस्ताद हैदरावादमे जल्वा-फर्मा थे। दो हज़ारके लगभग उनके शिष्य भारतके कोने-कोनेमें विखरे हुए थे। 'दाग़' की गज़लसराईसे जव समस्त भारत गमक रहा था, तव हैदरावादकी

साहित्यिक मजलिसोके तो ठाट ही निराले होगे, जहाँ वे स्वय अपनी ज़बाने-मुबारकसे ग़ज़ल पढते थे। स्थानीय लोगोके अतिरिक्त बीसो शिष्य दिल्ली, इलाहाबाद, एटा, पजाब आदि-जैसे सुदूर शहरोमे उस्तादकी खिदमतमे रहते थे। महाराजा सर किशनप्रसाद 'शाद' जो कि हैदराबाद राज्यके प्रधान मत्री थे, अधिक-से-अधिक शायरोका समागम बनाये रखते थे। उन जैसा महमाँ-नवाज़, कद्रदाँ, कला-पारखी और उदार-हृदय प्रधान शासक जहाँ मौजूद हो और स्वय नवाब हैदराबाद मिर्ज़ा 'दाग'के शिष्य हो, और शेरोशायरीमें दिलचस्पी लेते हो, उस हैदराबादका क्या कहना? गली-गली, कूचे-कूचेमे मुशायरोकी महफिलें जमती थी। 'दाग़'के अतिरिक्त उत्तरी भारतसे 'सरशार', 'तुर्की', 'गिरामी', 'ज़हीर' वगैरह भी रौनक अफरोज़ थे। इसी वातावरणमें अमजद भी परवान चढ रहे थे। चुनाचे शायरीका शौक बचपनसे ही हो गया। कहीसे 'नासिख़'का दीवान हाथ लग गया, अत चुपचाप उसे पढते रहते और शेर कहनेका अभ्यास करते रहते थे। पहले-पहल आपने यह शेर मौज़ूं किया—

नहीं ग़म गरचे दुश्मन हो गया है, आसमाँ अपना।
मगर या रब! न हो, नामहरबाँ वोह महरबाँ अपना॥

जीविकोपार्जनके लिए आप स्कूलमें शिक्षक हो गये, और उसी अल्प वेतनमे स्वाभिमानके साथ सन्तोषपूर्वक जीवन-निर्वाह कर रहे थे, कि दैवसे आपका यह सुख भी नही देखा गया। आपकी माँ, पत्नी और पुत्री दरियामें डूब गये। किसी तरह कई फर्लांग मौजोके थपेडे खाकर अकेले 'अमजद' साहब बचे। इस दुर्घटनासे आपको बहुत सदमा पहुँचा।

आप स्वाभिमानी, महमाँनवाज़, विनम्र और सरल एव सादा स्वभावके बुज़ुर्ग हैं। आप ग़ज़ल और नज़्म दोनो ही कहते हैं।

नालए-जाने-ख़स्ता-जाँ,[1] अर्शेबरींपै[2] जाये क्यो ?
मेरे लिए ज़मीनपर साहबे-अर्श[3] आये क्यो ?
नूरे-ज़मीं-ओ-आसमाँ, दीदये-दिलमें आये क्यो ?
मेरे सियाह-ख़ानेमें कोई दिया जलाये क्यो ?
ज़ख़्मको घाव क्यो बनाओ ? दर्दको और क्यों बढाओ ?
निसबतेहूको[4] तोड़कर कीजिये हाय-हाय क्यो ?
बख़्शने वाला जब मेरा उफूपै[5] है तुला हुआ ?
मुझ-सा गुनहगार फिर जुर्मसे बाज़ आये क्यो ?
'अमजदे'-ख़स्ता हालकी पूरी हो क्योकर आरज़ू।
दिल ही नहीं जब उसके पास,मतलबेदिल बर आये क्यो ?

अमजद सूफी ख़यालके है। आपका इश्क ईश्वरीय और भाव दार्शनिक है। उसी दृष्टिसे निम्न अशआर अवलोकन कीजिये—

हम तो एक बार उसके हो जायें।
वोह हमारा हुआ, हुआ, न हुआ ॥
ढूँढता हूँ मैं हर नफस[6] उसको।
एक नफस[7] मुझसे जो जुदा न हुआ ॥
क्या मिला वहदते-वजूदीसे[8] ?
बन्दा, बन्दा रहा, ख़ुदा न हुआ ॥
बन्दगीमें यह किब्रयाई[9] है ?
खैर गुजरी कि मै ख़ुदा न हुआ ॥

---

[1]निर्बल शरीरवाले दिलकी आहे, [2]ईश्वरके समीप तक, [3]भगवान्; [4]ईश्वर-लीनताको, [5]क्षमाशीलतापै, [6]हर स्वासमे, [7]एक लमहेको, [8]एक ईश्वरवादसे, [9]अभिमान।

किस तरह नज़र आये वोह परदानशीं 'अमजद' !
हर परदेके बाद और एक परदा नज़र आता है ॥*

वोह करते हैं सब छुपकर, तद्बीर इसे कहते हैं।
हम घर लिये जाते हैं, तक़दीर इसे कहते हैं ॥†

चन्द रुबाइयात—

हर ज़र्रेपै फ़ज़ले-किब्रिया[1] होता है।
इक चश्मे-ज़दनमें[2] क्या-से-क्या होता है ॥
असनाम दबी ज़बांसे यह कहते हैं—
"वोह चाहे तो पत्थर भी ख़ुदा होता है ॥"

हर गामपै चकराके गिरा जाता हूँ।
नक़्शे-कफ़े-पा बनके मिटा जाता हूँ ॥
तू भी तो सम्भाल मेरे देनेवाले !
मैं बारे-अमानतमें दबा जाता हूँ ॥

इस जिस्मकी केचुलीमें इक नाग भी है।
आवाज़-शिकस्ता दिलमें इक राग भी है ॥
बेकार नहीं बना है, इक तिनका भी।
ख़ामोश दियासलाईमें इक आग भी है ॥

---

*आह परदा तो कोई मानए-दीदार नहीं।
अपनी ग़फ़लतके सिवा कुछ दरो-दीवार नहीं ॥
—दर्द

†हम ख़्वाबमें वां पहुँचे, तद्बीर इसे कहते हैं।
वोह नींदसे चौंक उट्ठे, तक़दीर इसे कहते हैं ॥

[1]ईश्वरीय कृपा, [2]पलक मारते।

हर चीज़का खोना भी बडी दौलत है।
बेफिकरीसे सोना भी बडी दौलत है॥
इफलासने[1] सख़्त मौत[2] आसाँ कर दी।
दौलतका न होना भी बडी दौलत है॥

साँचेमें अजलके हर घडी ढलती है।
हर वक्त यह शमए-ज़िन्दगी जलती है॥
आती-जाती है साँस अन्दर-बाहर।
या उम्रके हलकपर छुरी चलती है॥

हासिल न किया महरसे[1] ज़र्रा तुमने।
दरियासे पिया न एक कतरा तुमने॥
'अमजद' साहब ! ख़ुदाको क्या समझोगे ?
अबतक ख़ुद ही को जब न समझा तुमने॥

—आजकल १५ जुलाई १९४६ ई०

कामयाबीके नहीं हम जिम्मेदार।
कामकी हदतक हमारा काम है॥
जब्र उस मुख़्तारपर क्योंकर करें ?
अर्ज़ कर देना हमारा काम है॥

हुस्ने-सूरतको नहीं कहते हैं हुस्न।
हुस्न तो हुस्ने-अमलका नाम है॥
रह सके किस तरह 'अजमद' मुतमईन !
ज़िन्दगी खौफ़े-ख़ुदाका नाम है॥

२७ मई १९५३ ई०] —आजकल जून १९४६ ई०

---

[1]निर्धनताने, [2]कठिनतासे आनेवाली मृत्यु, दुःखदमृत्यु, [1]सूर्यसे।

तू कानका कच्चा है तो बहरा हो जा,
बदबीं[1] है अगर आँख तो अन्धा हो जा।
ग़ाली-ग़ीबत[2] दरोग़गोई[3] कबतक?
'अमजद' क्यों बोलता है, गूँगा हो जा॥

मत सुन परदेकी बात बहरा हो जा,
मत कह इसरारे-ग़ानी[4] गूँगा हो जा।
वोह रूए लतीफ़[5] और यह नापाक नज़र[6],
'अमजद' क्यो देखता है अन्धा हो जा॥

दुनियाके हरइक ज़र्रेसे घबराता हूँ।
ग़म सामने आता है, जिधर जाता हूँ।
रहते हुए इस जहाँमें मिल्लत गुज़री,
फिर भी अपनेको अजनबी पाता हूँ॥

दिलशाद[7] अगर नहीं तो नाशाद सही,
लबपर नग़मा[8] नहीं तो फ़रियाद सही।
हमसे दामन छुड़ाके जानेवाले,
जा-जा गर तू नहीं तेरी याद सही॥

गुलज़ार[9] भी सहरा[10] नज़र आता है मुझे,
अपना भी पराया नज़र आता है मुझे।
दरिया-ए-वजूदमें है तूफ़ाने-अदम[11],
हर क़तरे में ख़तरा नज़र आता है मुझे॥

---

[1]कुदृष्टि, [2]पीठ पीछे बुराई करनेकी आदत, [3]असत्य सम्भाषण; [4]शत्रुका भेद; [5]सुशीला पवित्र नारीकी कोमल देह, [6]कामुक दृष्टि; [7]प्रसन्न, [8]संगीत [9]उद्यान, [10]वीरान जंगल, [11]अस्तित्व रूपी दरियामें मृत्यु रूपी तूफ़ान।

बरबाद न कर बेकसका चमन, बेदर्द ख़िज़ाँसे कौन कहे।
ताराज[1] न कर मेरा ख़िरमन,[2] उस बर्क़े-तपाँसे[3] कौन कहे॥
मुझ ख़स्ता जिगरकी जान न ले, यह कौन अजलको[4] समझाये।
कुछ देर ठहर जा ऐ दरिया! दरिया-ए-रवाँसे[5] कौन कहे॥
सीनेमें बहुत ग़म हैं पिन्हा[6] और दिलमें हज़ारों हैं अरमाँ।
इस क़हरे-मुजस्सिमके[7] आगे, हाल अपना ज़बाँसे कौन कहे॥
हरचन्द हमारी हालतपर रहम आता है हरइकको लेकिन—
कौन आपको आफ़तमें डाले, उस आफ़ते-जाँसे कौन कहे॥
क़ासिदके बयाँका ऐ 'अमजद' क्योंकर हो असर उनके दिलपर
जिस दर्दसे तुम ख़ुद कहते हो, उस तर्जेबयाँसे कौन कहे॥

किस शानसे 'मैं' कहता हूँ, अल्लाहरे मैं।
समझा नहीं 'मैं' को आजतक वाहरे मैं॥

आजकल फरवरी १९५४ ई०

फकीर

[1]नष्ट, [2]खलिहान; [3]कौन्दती हुई विजलीसे, [4]मृत्युको, [5]वहते हुए दरियासे, [6]छिपे हुए, [7]साक्षात मौतसे।

'आसी' ग़ाज़ीपुरी

[...... — १९१७ ई०]

हज़रत शाह अब्दुलअलीम 'आसी' अपने सूफियाना कलाम और रुबाइयोके कारण प्रसिद्ध थे। आप नासिख़ स्कूलके स्नातक और लखनवी शायर थे। अत. आपके यहाँ ख़ारजी और लखनवी रगके अशआरकी भी काफी सख्या है। जिनके नमूने न देकर हम केवल चन्द चुने हुए शेर दे रहे है—

गौना करते ही पिया कमाने-खाने परदेश चला गया और वहाँ मिरच-देशवालोंके[1] फन्देमें फँस गया। बेचारे परस्पर मुंह भी न देख सके। वहाँसे किसी तरह बचकर आया भी तो कब? जब केस रूपा हो गये। और आँखें इस योग्य न रही कि एक दूसरेको निहार सकें। विरह-व्यथा सहते-सहते वे विरहके मूर्तमान रूप हो गये हैं। उन्हे तब वस्ल नसीब

---

[1]दक्षिण अफ्रीका आदि प्रदेश बसानेके लिए अग्रेज भारतसे कुली भर्ती किया करते थे। जो निश्चित अवधिके बाद ही भारत वापिस आ सकते थे। उनमें अधिकाश कष्टोके कारण मर जाते थे, या वही रह जाते थे, विरले ही लौटकर आ पाते थे। इन्ही प्रदेशोको उन दिनो मिरच-देश कहा जाता था।

होता है, जब वे वस्लके योग्य नही रहे। वे दोनो रजोगमके इतने अभ्यस्त हो गये है कि उन्हे यह जीवन भरकी कठोर तपस्याके बाद मिली हुई मिलनकी शुभवेला भी आकुल किये दे रही है। इसी जीवनके अनुभवको 'आसी' देखिये किस ख़ूबीसे एक शेर में समोते है—

वस्ल है, पर दिलमें अबतक जौके-गम पेचीदा है।
बुल-बुला है ऐन दरियामें मगर नम-दीदा है॥

[वस्ल नसीब है, मगर दिल गमोके शौकका इतना आदी हो गया है कि वह वस्लका लुत्फ उठानेके योग्य नही रहा है। पानीका बुलबुला पानीमें रहते हुए भी अश्रुपूर्ण (नमदीदा) है, क्योकि वह अपने क्षणिक जीवनसे परिचित है]

अक्सर सूफी शायर हर जगह खुदाका जलवा देखते है—

मदरसा या दैर था या काबा या बुतख़ाना था।
हम सभी मेहमान थे, इक तू ही साहबख़ाना था॥
—ख्वाजा दर्द

यहाँतक कि वे माशूकके पैकरमे भी ख़ुदाको ही देखते है।

मगर 'आसी'के इश्ककी इन्तहा और बुलन्दी देखिये कि वह ख़ुदाको ख़ुदा ही नही समझते। वे हश्रमें पहुँचे तो उनका खयाल था कि वहाँ ख़ुदाका जलवा देखनेको मिलेगा और वह हमारा इन्साफ करेगा। मगर हश्रमें यह क्या हश्र-बरपा हुआ कि जिसे लोग ख़ुदा समझ रहे है, वह तो 'आसी'का वही शोख़ माशूक है। उसने 'आसी'को देखते ही हयासे मुँह फेर लिया—

हश्रमें मुँह फेरकर कहना किसीका हाय! हाय!!
"आसी-ए-गुस्ताख़का हर जुर्म ना-बख़्शीदा है॥"

वहाँ भी वादये-दीदार इस तरह टाला।
"कि ख़ास लोग तलब होंगे बारे आमके बाद॥"

मूर्ति-पूजक तो मुसलमानोंसे अधिक तेरे भक्त है। मुसलमान तो केवल काबेमें ही तुझे सजदा करते है और यह तो सब जगह तेरा चिन्तन और स्मरण करते है—

इतने बुतख़ानोंमें सजदे एक काबेकी एवज़।
कुफ़्र तो इस्लामसे बढकर तेरा गरवीदा है॥

वर्षोंकी साधनाके बाद, प्यारेका दीदार नसीब हुआ, मगर दिलको यकीन नही आता कि प्यारा यूँ भी जलवागर हो सकता है—

मेरी आँखें और दीदार आपका ?
या क़यामत आ गई या ख्वाब है॥

इश्कके बारेमे 'आसी' फर्माते है—

आशिक़ीमें है महवियत दरकार।
राहते-वस्ल-ओ-रजे-फुरकत क्या ?

इसी गज़लके चन्द अशआर और—

न गिरे उस निगाहसे कोई।
और उफ्ताद क्या, मुसीबत क्या ?
जिनमें चर्चा न कुछ तुम्हारा हो।
ऐसे अहबाब, ऐसी सुहबत क्या ?

जाते हो जाओ, हम भी रुख़सत है।
हिज्रमें जिन्दगीकी मुद्दत क्या ?

'आसी' खुदासे दुआ माँगते हैं—

ताबे-दीदार जो लाये मुझे वोह दिल देना।
मुँह क़यामतमें दिखा सकनेके काबिल देना॥
रश्के-ख़ुरशीदे-जहाँ-ताब दिया दिल मुझको।
कोई दिलबर भी इसी दिलके मुकाबिल देना॥

अस्ल फित्ना है, कयामतमें बहारे-फरदौस।
जुज़ तेरे कुछ भी न चाहे मुझे वोह दिल देना॥
तेरे दीवानेका बेहाल ही रहना अच्छा।
हाल देना हो अगर रहमके काबिल देना॥
हाय-रे-हाय तेरी उक्दाकुशाईके मज़े।
तू ही खोले जिसे वोह उक्दये-मुश्किल देना॥

चन्द शेर और—

तुम नहीं कोई तो सबमें नज़र आते क्यो हो?
सब तुम ही तुम हो तो फिर मुँहको छुपाते क्यो हो?

फिराके-यारकी ताक़त नहीं, विसाल मुहाल।
कि उसके होते हुए हम हो, यह कहाँ यारा?

तलब तमाम हो मतलूबकी अगर हद हो।
लगा हुआ है यहाँ कूच हर मुक़ामके बाद॥

अनलहक और मुश्ते-ख़ाके-मन्सूर।
ज़रूर अपनी हकीकत उसने जानी॥

इतना तो जानते हैं कि आशिक फना हुआ।
और उससे आगे बढके ख़ुदा जाने क्या हुआ॥

यूँ मिलूँ तुमसे मैं कि मैं भी न हूँ।
दूसरा जब हुआ तो ख़िलवत क्या ?

इश्क़ कहता है कि आलमसे जुदा हो जाओ।
हुस्न कहता है जिधर जाओ नया आलम है ?

न कभीके बादापरस्त हम, न हमें यह कैफ़े-शराब है।
लबेयार चूमें हैं ख़्वाबमें, वही जोशे-मस्तिये-ख़्वाब है॥
दिले मुब्तिला है तिरा ही घर, उसे रहने दे कि ख़राबकर।
कोई मेरी तरह तुझे मगर न कहे, कि ख़ाना ख़राब है॥
उन्हे किब्रे-हुस्नकी' नख़वतें, मुझे फ़ैज़े-इश्क़की हैरतें।
न कलाम है, न पयाम है, न सवाल है, न जवाब है॥
दिले-अन्दलीब यह शक नहीं, गुलो-लालाके यह वरक़ नहीं।
मेरे इश्कका वोह रिसाला है, तेरे 'हुस्नकी यह किताब है॥

नहीं होता कि बढ़कर हाथ रख दें।
तडपता देखते हैं, दिल हमारा॥
अगर काबू न था दिलपर, बुरा था।
वहाँ जाना सरे-महफ़िल हमारा॥

वहाँ पहुँचके यह कहना सबा ! सलामके बाद।
"कि तेरे नामकी रट है, ख़ुदाके नामके बाद॥"

यह हालत है तो शायद रहम आ जाय।
कोई उसको दिखा दे दिल हमारा॥

'रूप मदका गरूर।

बे तेरे, जीनेकी किस जीसे तमन्ना करते ?
मर न जाते जो शबे-हिज्र तो हम क्या करते ?

भला किस दिलसे हम इनकारे-दर्दे-इश्क करते हैं।
नहीं कुछ है तो क्यों रह-रहके दिलपर हाथ धरते हैं॥

ज़ाहिरमें तो कुछ चोट नहीं खाई है ऐसी।
क्यों हाथ उठाया नहीं जाता है जिगरसे ?

ता-सहर वोह भी न छोड़ी तूने ऐ बादे-सबा !
यादगारे-रौनक़े-महफिल थी परवानेकी ख़ाक॥

तूने दावाए-ख़ुदाई न किया ख़ूब किया।
ऐ सनम ! हम तेरे दीदारको तरसा करते॥
दिले-बीमारसे दावा है मसीहाईका।
चश्मे-बीमारको अपने नहीं अच्छा करते॥
दाग़ेदिल दिलबर नहीं, सीनेसे फिर लिपटा हूँ क्यों ?
मैं दिलेदुश्मन नहीं, फिर यूँ जला जाता हूँ क्यो ?

रात इतना कहके फिर आशिक तेरा ग़श कर गया।
"जब वही आते नहीं, मैं होशमें आता हूँ क्यो ?"

वोह कहते हैं—"मैं जिन्दगानी हूँ तेरी"।
यह सच है तो इसका भरोसा नहीं है॥*

*तुम हमारी ज़िन्दगी, पर ज़िन्दगीकी क्या उम्मीद ?
तुम हमारी जान, लेकिन क्या भरोसा जानका ?
—ज़ौक

कमी न जोशे-जुनूंमें, न पाँवमें ताक़त।
कोई नहीं जो उठा लाये घरमें सहराको ॥

ऐ पीरेमुग़ाँ ! ख़ूनकी बू साग़रे-मै में।
तोडा जिसे साक़ीने, वोह पैमानये-दिल था ॥

—निगार जनवरी १९५० ई०

कुछ हमीं समझेंगे या रोज़े-क़यामतवाले।
जिस तरह कटती है उम्मीदे-मुलाकातकी रात ॥

ग़ुबार होके भी 'आसी' फिरोगे आवारा।
जुनूंने-इश्क़से मुमकिन नहीं है छुटकारा ॥

हम-से बेकल-से वादये-फरदा ?
बात करते हो तुम क़यामतकी ॥

साथ छोडा सफरे-मुल्केअदममें सबने।
लिपटी जाती है मगर हसरते-दीदार हनूज़ ॥

हवाके रुख़ तो ज़रा आके बैठ जा ऐ क़ैस !
नसीबे-सुबहने छेड़ा है ज़ुल्फे-लैलाको ॥

बस तुम्हारी तरफसे जो कुछ हो।
मेरी सई और मेरी हिम्मत क्या ॥

जो रही और कोई दम यही हालत दिलकी।
आज है पहलु-ए-ग़मनाकसे रुख़सत दिलकी ॥
घर छुटा, शहर छुटा, कूचये-दिलदार छुटा।
कोहो-सहरामें लिये फिरती है वहशत दिलकी ॥

रास्ता छोड दिया उसने इधरका 'आसी'।
क्यो बनी रहगुज़रे-यारमें तुरबत दिलकी ॥

तरक्क़ी और तनज़्ज़ुलकी न पूछो।
मैं दुश्मन हो गया, दुश्मन हुआ दोस्त ॥

इश्क़ने फरहादके परदेमें पाया इन्तक़ाम।
एक मुद्दतसे हमारा ख़ून दामनगीर था ॥
वोह मुसव्वर था कोई या आपका हुस्नेशबाब।
जिसने सूरत देख ली, इक पैकरे-तसवीर था ॥

मेरे दुश्मनको न मुझपर कभी क़ाबू देना।
तुमने मुंह फेर लिया, आह, यही क्या कम है?

कोई तो पीके निकलेगा, उड़ेगी कुछ तो बू मुँहसे।
दरे-पीरेमुग़ांपर मैपरस्तो चलके बिस्तर हो ॥
किसीके दरपै 'आसी' रात रो-रोके यह कहता था—
कि "आखिर मैं तुम्हारा बन्दा हूँ, तुम बन्दा परवर हो ॥"

टुकड़े होकर जो मिली, कोहकनो-मजनूंको।
कहीं मेरी ही वोह फूटी हुई तकदीर न हो ॥

यह दोनो एक ही तरकशके हैं तीर।
मुहब्बत और मर्गे-नागहानी ॥

तुम्ही सच-सच बता दो कौन था शीरींकी सूरतमें।
कि मुश्तेख़ाककी हसरतमें कोई कोहकन क्यो हो ॥

कौन उस घाटसे उतरा कि जनावे 'आसी'।
बोसा लेनेको बढे हैं लबे-साहिलकी तरफ ॥

मिलनेकी यही राह, न मिलनेकी यही राह।
दुनिया जिसे कहते हैं, अजब राहगुज़र है॥

ऐ शबेगोर ! वोह बेताबि-ए-शबहाय फिराक़।
आज आरामसे सोना मेरी तकदीरमें था॥

—तनकीदी हाशिये

६ जून १९५३ ई०]

'असग़र' गोंडवी

[१८८४–१९३६ ई०]

असगरहुसैन साहव 'असगर'के पूर्वज गोरखपुर ज़िला निवासी थे। आपके पिता गोण्डेमें कानूनगो थे। उन्होने वहीसे पेंशन ली और फिर स्थाई रूपसे वही वस गये थे।

असगर १ मार्च १८८४ ई०में पैदा हुए। घरेलू वातवरण और आर्थिक स्थिति अनुकूल न होनेके कारण स्कूली शिक्षा व्यवस्थित रूपसे न हो सकी। यूं फारसी-अरवीका अच्छा ज्ञान था। अंग्रेज़ी भी समझ-वोल लेते थे। लेकिन यह सव उनके निजी अध्यवसाय और परिश्रमका परिणाम था।

'असग़र' शायर न होते तो भी उनकी ख्यातिमें अन्तर न पडता। आप सदाचारी और पवित्र थे। आपका व्यक्तित्व उच्च और प्रभावशाली था। आपके सत्सगके परिणामस्वरूप 'जिगर' जैसे मशहूर रिन्द मैखानेका रास्ता छोडकर सम्यक् मार्गपर चल निकले।

आप चश्मेका रोजगार करते थे, आमदनी अल्प होते हुए भी न कभी आपने तंगदस्तीका किसीसे ज़िक्र किया, न कभी मेहमांनवाज़ीमें अन्तर पड़ने दिया। अच्छा पहनते थे, अच्छा खाते थे। जो वज़ा शुरुमें अख्तियार की, उसे जीवनभर निभाया।

कुछ अर्से आप लाहौरके 'उर्दू मरकज़'में कार्य करते रहे, और अन्तिम दिनोमें आप 'हिन्दुस्तानी' एकेडमी' इलाहाबादकी त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी'का सम्पादन करते थे। 'असगर' खुद फर्माया करते थे कि "मेरी जिन्दगीमें कोई वाकया काबिलेज़िक्र नही है।" १९३६ ई०में आपका निधन हो गया।

शायरीमें पहले तो आप मुशी खलील अहमद 'वज्द'से सशोधन लेते रहे। फिर चन्द गज़लें मुशी अमीर अल्लाह 'तसलीम'[1]को दिखाई। लेकिन यह क्रम अधिक नही चल सका। 'असगर' बाकायदा किसीके शिष्य नही हुए। आपने जो मौलिक प्रतिभा और बुद्धि पाई थी, उसको देखते हुए यह कहना पडता है कि उन दिनो आपके योग्य कोई उस्ताद भी नही था। वही दकियानूसी पुरातन सडे-गले विचारोकी शृखला चली आ रही थी। उस शृखलामें 'असगर' जैसा प्रतिभाशाली जकडकर नही रखा जा सकता था। उसे जिस लक्षपर पहुँचना था, उसके लिए कोई पगडडी नही बनी थी। उसे स्वय नई डगर बनानी थी।

लीक-लीक गाडी चले, लीकहि चलें कपूत।
लीक छोड तीनों चलें, शायर, सिह, सपूत॥

'असगर' उर्दूके उन्ही शायरो, नरसिहो और सपूतोमें-से एक थे, जो अपना मार्ग स्वय बनाते है। बकौल जिगर मुरादाबादी—

अपना ज़माना आप बनाते है अहले-दिल।
हम वोह नही कि जिसको ज़माना बना गया॥

'असगर'ने भी 'अमीर' और 'दाग़'की शायरीके वातावरणमें आँखें खोली। लेकिन आपने उस रगको सर्वथा हेय समझकर अपना नवीन

---

[1] आपका परिचय शेरोसुखन प्रथम भागमें दिया जा चुका है।

मार्ग चुना, और तारीफ यह कि जिस गज़लसे लोग दामन बचाकर निकलने लगे थे, उसीको अपने पवित्र भाव व्यक्त करनेका साधन चुना, और उस पतनोन्मुखी गज़लमे इतनी पवित्रता भरी कि उसका कायाकल्प ही हो गया। गज़ल आज जिस ऊँचाईपर पहुँच गई है, उसके इस विकासकी कल्पना स्वप्नमें भी नही हो सकती थी।

'असगर'का प्रेम ईश्वरीय प्रेम है। आपके किसी शेरमें आध्यात्मिकता-की सुबास है तो किसी शेरमे दार्शनिकताकी झलक। कही सूफियाना रग हिलोरें ले रहा है, तो कही पवित्र प्रेम छलका पड रहा है। आपके यहाँ अश्लील, निकृष्ट विचार तो दरकिनार, एक शेर भी साधारण और हलका नही मिलता। प्रत्येक शेर आत्म-विभोर कर देनेकी शक्ति रखता है। जो भी कहा गया है, बहुत गहरेमें डूबकर कहा गया है।

'असगर'का प्रेम निर्मल स्वच्छ और निष्कलक है। उनके प्रेममें विषयाशक्ति नही कि उसे छिपाये फिरें, वे तो मुक्त-हृदयसे अपने प्रेमको प्रकट करते है और दृढतापूर्वक कहते है—प्रेम ही मेरे जीवनकी चेष्टा (सई) है। यही मेरे जीवनकी कमाई (हासिल) है। यही मेरी यात्राका अभीष्ट स्थान है और यही वहाँ तक पहुँचनेके लिए पगडडी (जाद-ए-मज़िल) है—

इश्क़ ही सअई मेरी, इश्क ही हासिल मेरा।
यही मजिल है, यही जाद-ए-मजिल मेरा॥

'असगर'का यह प्रेम अपने प्यारेकी खोजमे उन्हे मन्दिरो-मस्जिदोकी खाक नही छनवाता। अपितु उनके झमेलोंसे उन्हे बेदाग निकाल ले जाता है—

दैर[1]-ओ-हरम[2] भी कूचए-जानांमें आये थे।
पर शुक्र है कि बढ गये दामन बचाके हम॥

---

[1]मन्दिर, [2]मस्जिद।

परिणाम इसका यह होता है कि वे इस प्रेमाग्निमे तपकर इतने महान हो उठते है कि अपने प्यारेकी यादमें जहाँ भी मत्था टेक देते है, एक तीर्थ बन जाता है। और यह तीर्थ है भी क्या ? जहाँ कही सिद्ध पुरुषो और वीतरागात्माओके चरण पहुँचे है, वही उनकी स्मृतिमें तीर्थ बन गये।

नियाजे-इश्क़को[1] समझा है क्या ऐ वाइजे-नादाँ !
हजारो बन गये काबे, जहाँ मैने जबीं रख दी ॥

प्रेमी जब उक्त स्थितिमे पहुँच जाता है, तब उसके लिए मिलन-सुख और विरह-दु ख कुछ अर्थ नही रखते—

क्या दर्दे-हिज्र और यह क्या लज्जते-विसाल।
उससे भी कुछ बुलन्द मिली है नजर मुझे ॥

और अन्तमें एक ऐसी स्थिति आती है कि प्रेमी और प्यारा दोनो एकाकार हो जाते हैं—

अब न यह मेरी जात है, अब न यह कायनात[2] है।
मैंने नवाये-इश्क़को[3] साजसे यूँ मिला दिया ॥

असगरने कुछ इसी तरहके भाव भिन्न-भिन्न अशआरमें इस तरह व्यक्त किये है—

इक सूरते-उफ्तादगीये-नक़्शे-फना[4] हूँ।
अब राहसे[5] मतलब न मुझे राहनुमासे[6] ॥

मेरे मजाक़ेशौक़का इसमें भरा है रग।
मै ख़ुदको देखता हूँ, कि तसवीरे-यारको ॥

---

[1]प्रेम-विभोरताको, [2]सासारिक वस्तुएँ, [3]प्रेम-वाणी, प्रेम-सगीतको; [4]विनाशका मिटा हुआ चिह्न, [5]मार्गसे, [6]पथ-प्रदर्शकसे।

हुजूमे-शौकमें अब क्या कहूँ मैं क्या न कहूँ ?
मुझे तो खुद भी नहीं, अपना मुद्दआ मालूम ॥

जहान है कि नहीं जिस्मोजान है कि नहीं ।
वोह देखता है मुझे, उसको देखता हूँ मैं ॥

बेख़ुदीका[1] आलम है, महवे-जिबहसाई[2] हूँ ।
अब न सरसे मतलब है, और न आस्तानेसे[3] ॥

अब न कहीं निगाह है, अब न कोई निगाहमें ।
महव[4] खड़ा हुआ हूँ मैं, हुस्नकी जलवागाहमें ॥

जुनूने-इश्क़में हस्तीए-आलमपै नजर कैसी ?
रुख़ेलैलाको क्या देखेंगे महमिल देखनेवाले ॥

अब मुझे खुद भी नहीं होता है कोई इम्तियाज[5] ।
मिट गया हूँ इस तरह उस नक़्शे-पा-के सामने ॥

नजरमें वोह गुल समा गया है, तमाम हस्तीपै छा गया है ।
चमनमें हूँ या कफसमें हूँ मैं मुझे अब इसकी खबर नहीं है ॥

अक्स किस चीजका आईन-ए-हैरतमें नहीं ।
तेरी सूरतमें है क्या जो मेरी सूरतमें नहीं ॥

खुदा जाने कहाँ है 'असग़रे' दीवाना बरसोंसे ।
कि उसको ढूंडते हैं काब-ओ-बुतख़ाना बरसोंसे ॥

'असगरने अपने प्यारेके मोहनी रूपका वर्णन इतनी कुशलता और पवित्रतासे किया है कि कही भी वासनाकी गन्ध नही आती—

---

[1]आत्मलीनताका, [2]नतमस्तक-लीन, [3]प्यारेके दर्वाज़ेके पत्थरसे, [4]तल्लीन, [5]विवेक ।

उसका वोह क़दैरअना,[1] उसपर वोह रुख़े-रंगीं[2]।
नाज़ुक-सा सरेशाख़[3] इक गोया गुलेतर[4] देखा॥

तुम सामने क्या आये, इकतरफा बहार आई।
आँखोंने मेरी गोया फरदौसे-नज़र[5] देखा॥

उठ्ठे अजब अन्दाज़से वोह जोशेग़ज़बमें।
चढता हुआ इक हुस्नका दरिया नज़र आया॥

होशपर बिजली गिरी, आँखें भी ख़ैरा[6] हो गई।
तुम तो क्या थे, इक झलक-सी थी तुम्हारी यादकी॥

जो शजर बाग़में है, वोह शजरे-तूर[7] है आज।
पत्ते-पत्तेमें जो देखा तो वही नूर[8] है आज॥

यूँ मुसकराये जान-सी कलियोंमें पड गई।
यूँ लबकुशा हुए कि गुलिस्ताँ बना दिया॥

ताक़त कहाँ मुशाहदये-बेहिजाबकी[9]।
मुझको तो फूंक देगी, तजल्ली[10] नक़ाबकी॥

नक्शे-क़दम यह है, उसी जाने-बहारके।
इक पखडी पडी है लहदपर गुलाबकी॥

मैं इज़्तराबे-शौक़[11] कहूँ या जमाले-दोस्त[12]।
इक बर्क़[13] है जो कौंद रही है नक़ाबमें॥

---

[1]उपयुक्त कद, [2]सुन्दर मुख, [3]टहनीपर, [4]ताज़ा फूल; [5]स्वर्गका दृश्य। [6]चकाचौंध, [7]तूर पर्वतका वृक्ष, [8]रूप प्रकाश, [9]परदेसे बाहर देखनेकी, [10]आभा, [11]उत्कण्ठाकी बेचैनी, [12]प्यारेका रूप, [13]बिजली।

वोह निकहतसे[1] सिवा पिन्हाँ[2], वोह गुलसे भी सिवा उर्यां[3]।
यह हम हैं जो कभी परदा, कभी जलवा समझते हैं ॥

और सच तो यह है कि उसके रूपका वखान हो भी नही सकता—

अगर खमोश रहूँ मैं तो तू ही सब कुछ है।
जो कुछ कहा तो तेरा हुस्न हो गया महदूद ॥

'असगर'के दीवानमें एक शेर भी ऐसा नही, जिसमे कामुकताकी गन्ध आये। उनके यहाँ पवित्र प्रेम हिलोरें ले रहा है। वे तो प्यास बुझानेको भी कामुकता (बुलहविसी) समझते हैं। अपने प्यारेकी खोजमें मृगमरीचिका (मौज-सराव)में भटकते रहना ही जीवनका सार समझते हैं। दर्शनोकी प्यास बुझी तो फिर प्रेमपिपासा कहाँ रही?

मैं बुलहविस[4] नहीं कि बुझाऊँगा तिश्नगी[5]।
मेरे लिए तो उठती हैं मौजें सरावकी[6]॥

अब तो यह तमन्ना है किसीको भी न देखूं।
सूरत जो दिखा दी है तो ले जाओ नज़र भी ॥

आये थे सभी तरहके जलवे मेरे आगे।
मैंने मगर ऐ दीदये-हैराँ नहीं देखा ॥

हम एक बार जलवये-जानाना देखते।
फिर कावा देखते न सनमखाना देखते ॥

तसलीम[7] मुझको खानये-कावाकी मंज़िलत[8]।
सब कुछ सही मगर वोह तेरा आस्ताँ[9] नहीं ॥

---

[1]फूलकी सुगन्धसे, [2]छुपा हुआ [3]नग्न, प्रकट, [4]कामुक; [5]प्यास, [6]मृगमरीचिकाकी, [7]स्वीकृत, [8]इज्जत, गौरव; [9]निवासस्थान।

हर ज़र्रेमें सहराके बेताब नज़र आई।
लैलीको भी मजनूँने यूँ ख़ाक बसर देखा॥

प्रेममे तो आठो पहर भीगा रहे, तभी जीवनकी सार्थकता है—

क़हर है थोड़ी-सी भी ग़फलत तरीक़े-इश्क़में।
आँख झपकी कैसकी और सामने महमिल न था॥

'असगर'की रिन्दी मुलाहिज़ा हो—

रहा जो होश तो रिन्दी-ओ-मैकशी क्या है।
ज़रा ख़बर जो हुई फिर वोह आगही[1] क्या है॥

उर्दू शायरीकी परम्पराके अनुसार 'असगर'के यहाँ भी शेख़-ओ-ज़ाहिदका ज़िक्र मिलता है। मगर देखिये कितने सलीके और सौजन्यताके साथ—

न होगा काविशे-बेमुद्दआका[2] राज़दाँ[3] बरसो।
वोह ज़ाहिद जो रहा सरगुश्तए सूदो-ज़ियाँ[4] बरसों॥

सनमकदेमें तजल्लीकी ताब मुश्किल है।
हरममें शेख़को महवे-नमाज़ रहने दे॥

मन्दिरो-मस्जिदोको लेकर ससारमें इतना अधिक नर-सहार हुआ। फिर भी धर्मान्धोकी आँखे नही खुलती। ईश्वर और ख़ुदाके नामपर

---

[1]होश्यारी, वाकिफियत, [2]नि स्वार्थ लगन, स्वार्थहीन कार्य्योंका; [3]भेदी, [4]हानि-लाभके झगडेमें भटकनेवाला। भाव यह है कि ज़ाहिद तो हूर-जन्नतकी अभिलाषामें नमाज़-रोज़ेका पाबन्द रहा, वह कैसे जानेगा कि नि स्वार्थ पूजा-उपासना क्या होती है ?

उनके बन्दोका हर समय रक्त पीनेको प्रस्तुत रहते है। इसके विपरीत 'असगर'का पवित्र हृदय है कि—

मौजे-नसीमे-सुबहमें[1], बूए-सनम कदा[2] भी है।
और भी जान पड गई कैफियते-नमाज़में[3]॥

'असगर' शायर है, मौलवी या वाइज़ नही। वे भी भूले-भटकोको मार्ग सुझाते है। मगर वाइज़की तरह नही कि पथिक खिन्न हो उठे—

फित्ना-सामानियोकी[4] खू[5] न करे।
मुख़्तसर यह कि आरज़ू न करे॥
पहले हस्तीकी है तलाश जरूर।
फिर जो गुम हो तो जुस्तजू न करे॥
मावराये-सुख़न[6] भी है कुछ बात।
बात यह है कि गुफ्तगू न करे॥

तर्के-मुद्दआ[7] कर दे ऐने-मुद्दआ[8] हो जा।
शाने-अवद[9] पैदाकर मजहरे-ख़ुदा[10] हो जा॥
उसकी राहमें मिटकर, बे-नियाजे-ख़लकत बन।
हुस्नपर फिदा होकर हुस्नकी अदा हो जा॥
तू है जब पयाम उसका फिर पयाम क्या तेरा।
तू है जब सदा उसकी, आप बेसदा हो जा॥

---

[1]प्रात कालीन मृदु पवनमे, [2]मन्दिरोकी सुगन्ध भरी होनेसे, [3]नमाज़ पढनेमे और भी आनन्द आने लगा, [4]सासारिक वस्तुओकी; [5]इच्छा; [6]वाणीका सयम, चुप रहना, [7]अभिलाषाओका त्याग, [8]इच्छा रहित, निर्मल, [9]आत्मसमर्पण करके उसके सेवक बननेका गौरव प्राप्त कर, [10]ईश्वरके प्रकट होनेका स्थान।

आदमी नहीं सुनता आदमीकी बातोंको।
पैकरे-अमल बनकर ग़ैबकी सदा हो जा॥

यह मुझसे सुन ले तू राजे-पिन्हाँ[1] सलामती खुद है दुश्मने-जाँ[2]।
कहाँसे रहरवमें[3] जिन्दगी हो कि राह जब पुरख़तर नहीं है[4]॥

तलब कैसी[5]? कहाँका सूदो-हासिल कैफे-मस्तीमें[6]।
दुआतक भूल जाते, मुद्दआ[7] इतना हसीं होता॥

चला जाता हूँ हँसता खेलता मौजे-हवादससे[8]।
अगर आसानियाँ हो, जिन्दगी दुश्वार हो जाये॥

'असगर' भी युवकोको कुछ कर गुज़रनेकी प्रेरणा देते है, परन्तु कितने कोमल और मधुर ढगसे कि नसीहतका आभासतक नही मिलता। वे 'हाली'की तरह वाइज़ बनकर यह नही कहते—

कुछ कर लो नौजवानो उठती जवानियाँ है।

बल्कि रिन्दाना एक लतीफ इशारा भर करके रह जाते है।

खूब जी भरके उठा ले जोशे-वहशतके[9] मजे।
फिर कहाँ यह दश्त[10], यह नाका[11] कहाँ, महमिल[12] कहाँ?

---

[1]छुपा हुआ भेद, [2]सुख-चैन ही आत्माके शत्रु है, [3]यात्रीमें जीवनका ओज कहाँसे आये, [4]जब मार्ग ही भयानक एव कण्टकाकीर्ण नही है। भाव यह है कि सघर्षमे ही ज़िन्दगी है, [5]अभिलाषाओका ज़िक्र क्या; [6]आत्म-लीनतामें हानि-लाभका लेखा-जोखा क्यो, [7]सुरुचिपूर्ण उपासनाका ध्येय पवित्र हो तो दुआके लिए हाथ उठानेकी भी याद न रहे, [8]आपदाओंसे, [9]दीवानगीके, [10]बियाबान, [11]ऊँटनी, [12]लैलाका महमिल।

'असगर' इश्कमें रोना-विसूरना तो खिलाफेशान समझते ही हैं। बल्कि आपका विश्वास है कि सुखके साथ यदि दुख न रहे तो जिन्दगी बेमजा हो जाय—

सहबाए-खुशगवार[1] भी या रब ! कभी-कभी।
इतना तो हो कि तल्खियेग़म[2] बेमजा न हो ॥

हमारे सामने 'असगर' साहबके निम्न दो ग्रन्थ है—

१—निशाते-रूह—इसमें कुल ६३ गजलें है।

२—सरोदे जिन्दगी—इसमें कुल ४८ ग़जलें हैं।

इन्ही दोनो ग्रथोसे असग़रके सरल शेर चुनकर दिये जा रहे हैं—

सारे आलममें किया तुझको तलाश।
तू ही वतला है रगेगरदन[3] कहाँ ?
ख़ूब था सहरा, पर ऐ जौक़े-जुनूँ।
फाड़नेको नित नये दामन कहाँ ?

वोह लज्जते-सितमका जो ख़ूगर[4] समझ गये।
अब जुल्म मुझपे है कि सितम गाह-गाहका[5] ॥
शीशेमें मौजे-मै को यह क्या देखते है आप।
इसमें जवाव है उसी वक्रें-निगाहका ॥

मेरी वहशतपै बहस-आराइयाँ अच्छी नहीं नासह !
वहुत-से बाँध रक्खे हैं गरेवाँ मैंने दामनमें ॥
इलाही कौन समझे मेरी आशुफ्ता मिजाजीको[6]।
कफसमें चैन आता है, न राहत है नशेमनमें ॥

---

[1]सुख-चैन-सुरा, [2]दुखकी कड़वाहटें [3]कुरानमें ऐसी आयत है कि खुदा हर रगे-गर्दनके नजदीक है, [4]अभ्यस्त, [5]कभी-कभी, [6]अस्थिर स्वभावको।

खिलते ही फूल बागमें पजमुर्दा[1] हो चले।
जुम्बिश रगे-बहारमें मौजे-फना की है॥

बुलबुलो-गुलमें जो गुज़री हमको उससे क्या ग़रज़।
हम तो गुलशनमें फकत, रंगेचमन देखा किये॥

जानते हैं वोह अदायें इस दिले-बेताबकी।
उनसे बढकर कौन होगा, नुक्तादाने-इज़्तराब[2]॥

नासहे मुश्फ़िक़[3]! मगर यूँ ही तडपने दे मुझे।
मुझको भी मालूम है, सूदो-ज़ियाने-इज़्तराब[4]॥

तुम बाख़बर हो, चाहनेवालोंके हालसे।
सबकी नज़रका राज़ तुम्हारी नज़रमें है॥
मुझको जलाके गुलशने-हस्ती न फूँक दे।
वोह आग जो दबी हुई मुश्ते-परमें है॥

'असग़र' हरीमेइश्कमें,[5] हस्ती[6] ही जुर्म है।
रखना कभी न पाँव, यहाँ सर लिए हुए॥

मरते-मरते न कभी आक़िलो-फरज़ाना बने।
होश रखता हो जो इन्सान तो दीवाना बने॥
परतवे-रुख़के करिश्मे थे सरे राह गुज़र।
ज़र्रे जो ख़ाकसे उठ्ठे, वोह सनमख़ाना बने॥
कारफरमा है फक़त हुस्नका नैरंगे-कमाल।
चाहे वोह शमअ़ बने, चाहे वोह परवाना बने॥

---

[1]कुम्हलाने लगे; [2]बेचैनीको समझनेवाला; [3]हितैषी उपदेशक महाराज, [4]बेचैनीका हानि-लाभ, [5]प्रेममन्दिरमें; [6]अहमन्यता, अपने व्यक्तित्वका भान।

ऐसा कि बुतकदेका जिसे राज़ हो सुपुर्द ।
अहले-हरममें कोई न आया नज़र मुझे ॥

गो नहीं रहता कभी परदेमें राज़े-आशिकी ।
तुमने छुपकर और भी उसको नुमायाँ कर दिया ॥

सरगर्मे तजल्ली हो, ऐ जलवए-जानाना !
उड़ जाये धुआँ बनकर, काबा हो कि बुतख़ाना ।

अबतक नहीं देखा है, क्या उस रुख़ेख़न्दाँको ।
इकतारे शुआईसे उलझा है जो परवाना ॥
माना कि बहुत कुछ है, यह गर्मिये-हुस्नेशमअ ।
इससे भी जियादा है, सोज़े-ग़मे-परवाना ॥
ज़ाहिदको तआज्जुब है, सूफीको तहय्युर है ।
सद-रश्के-तरीकत है, इक लग़ज़िशे-मस्ताना ॥

राज़की जुस्तजूमें मरता हूँ ।
और मैं ख़ुद हूँ एक परदये-राज़ ॥

वोह शोख़ियोंसे जलवा दिखाकर तो चल दिये ।
उनकी ख़बरको जाऊँ कि अपनी ख़बरको मैं ॥

होता है राज़े-इश्क़ो-मुहब्बत उन्हींसे फ़ाश !
आँखें ज़बाँ नहीं है, मगर बेज़बाँ नहीं ॥

पीरीमें अक्ल आई तो समझे कि ख़ूब थी ।
डूबी हुई निशातमें,[1] ग़फलत शबाबकी[2] ॥

---

[1]सुखचैनमें, [2]यौवनकी ।

बुझ गई कल जो सरेबज़्म वही शमअ न थी।
शमअ तो आज भी सीनेमें है परवानोके॥

जिसपै बुतख़ाना तसद्दुक, जिसपै काबा भी निसार।
एक सूरत ऐसी भी सुनते हैं, बुतख़ानेमें है॥

—सरुदे जिन्दगी

१८ जून १९५३]
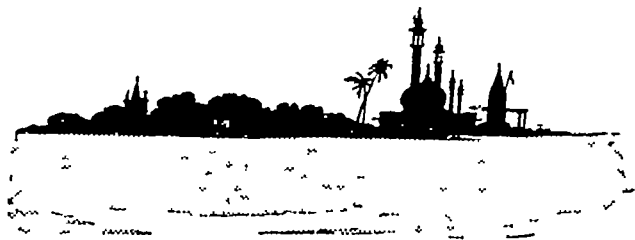
बुतख़ाना ओ-काबा

अलीसिकन्दर 'जिगर' १८९० ई०मे मुरादाबादमें उत्पन्न हुए। आपके पूर्वज मौलवी मुहम्मद समीअ दिल्ली-निवासी थे और शाहजहाँ बादशाहके शिक्षक थे। किसी कारणसे बादशाहके कोप-भाजन बन गये। अत आप दिल्ली छोडकर मुरादाबाद जा बसे थे। 'जिगर'के दादा हाफिज़ मुहम्मदनूर 'नूर' और पिता मौलवी अलीनज़र 'नजर' भी शायर थे।

'जिगर' पहले मिर्ज़ा 'दाग'के शिष्य थे। बादमे 'तसलीम'के शिष्य हुए। इस युगकी शायरीके नमूने 'दागेजिगर'मे पाये जाते हैं। आपकी वर्त्तमान-ढगकी शायरीका दौर 'असगर' गोण्डवीके प्रभावमें आनेसे हुआ। 'असगर'की सगतके कारण आपके जीवनमें बहुत बडा परिवर्तन हुआ। पहले आपके यहाँ हलके और आम कलामकी भरमार थी। अब आपके कलाममे गम्भीरता, उच्चता और स्थायित्व आ गया है। आप गज़लगो शायरोमे बहुत बड़ा मर्त्तबा रखते हैं। नित नये अनुभवोका आप गज़लमे समावेश कर रहे हैं। जिससे गजलमें एक ताज़गी, स्फूर्ति और नवीनता बढती जा रही है। मजाज़ी इश्कके साथ-साथ हकीकी इश्कका पुट देकर तगज्जुल और तसव्वुफका समन्वय करनेमे कमाल करते हैं। आपके पढनेका ढग

इतना दिलकश और मोहक है कि सैकडो शायर उसकी कॉपी करनेका प्रयत्न करते हैं, मगर वोह बात कहाँ ? जिगर, जिगर है।

पहले आप मशहूर रिन्द थे। मुशायरोमें भी पीकर और बेखुद होकर बैठते थे। यहाँतक कि १९२८ ई०में बिजनौर नुमाइशके मुशायरेमे हमने उन्हे मुशायरेमे ही पीते हुए देखा है। मगर अब अर्सेसे तौवा किये हुए है। बहुत-से मुशायरोमें आपका कलाम हमें सुननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

जिगरकी शायरी

इश्कको दिलफेंक छोकरे मनबहलावका एक साधन समझते हैं। जब जी चाहा किया, जब जी न चाहा, छोड दिया। यह इश्क नही, लुचपन है, ऐय्याशी है। इश्ककी परिभाषा 'जिगर'से सुनिये—

यह इश्क नहीं आसाँ, इतना ही समझ लीजे।
इक आगका दरिया है, और डूबके जाना है॥

'जिगर'की प्रेयसी हरजाई या बाजारी नारी नही। वह हयापरवर, सुशीला कुलीन सुकुमारी है। न जाने उसके हृदयमें प्रेमकी चिनगारी कैसे जा लगी है? वह अन्दर-ही-अन्दर सुलगती जा रही है, परन्तु उसका धुआँ बाहर नही निकलने देना चाहती। एक भी आह ओठोंसे बाहर निकली तो जग हँसाई होगी। कुटुम्बी क्या कहेगे? इसी भयसे वह मन-ही-मनमे सुलगती जा रही है। सामाजिक और पारिवारिक बन्धन इतने है कि वह एक पाती भी अपने प्यारेको नही भेज सकती, न किसीके हाथ सन्देशा। जिगर अपनी प्रेयसीकी विवशतासे परिचित हैं। वे अन्य शायरोकी तरह शिकवा-ओ-शिकायत, नाला-ओ-फुगाँ नही करते, यही कहकर दिलको बहलानेका यत्न करते है—

इधरसे भी है सिवा, कुछ उधरकी मजबूरी।
कि हमने आह तो की, उनसे आह भी न हुई॥

ऐसे हयापरवर माशूकका तसव्वुर उर्दूगज़लमें 'जिगर'की जिगर-सोज़ीसे पहले-पहल आया है।

कुछ शायरोका सिद्धान्त है कि—

जो ग़म हुआ उसे ग़मे-जानाँ बना लिया

यानी साँसारिक आपदाये किसी भी कारणसे आयें। वे सब इश्कके कारण आईं, यही समझकर उसका उल्लेख गजलमे करते है। लेकिन आजका शायर गमेदौराँको गमेजानाँ न बनाकर, गमेजानाँको गमेदौराँ बनानेके पक्षमें है।

हमपर अकेले ही यह मुसीबतोका पहाड नही टूट रहा है, अपितु समस्त मानव समाज इसके नीचे पडा हुआ कराह रहा है। उन सबका दुख दूर होनेमे ही अपना कल्याण है। यही भावना 'गमेदौराँ' है।

राष्ट्रपिता बापूपर जो अमानुषिक अत्याचार दक्षिण अफ्रीकामे गोरो द्वारा हुए, बापूने उन्हे व्यक्तिगत न समझकर समस्त अश्वेत जातिका अपमान समझा। इसी समझको 'गमेदौराँ' कहते हैं।

एक अबला भरी जवानीमे विधवा हो जाती है। वह बिलख-बिलख कर रोनेके बजाय, यह समझकर कि यह आपदा केवल उसीपर नही आई है, न जाने कितनी नारियाँ इस दुखसे बिलख रही है, उनके उद्धारके लिए आश्रमो और शिक्षालयोका प्रबन्ध करनेमे जुट जाती है। घर-घर जाकर विधवाओको सान्त्वना देती है। इसी कार्यको 'गमेदौराँ' कहते हैं।

यदि किसी पुत्रवती माँका इकलौता लाल देशहितमें शहीद हो जाता है, और उसकी माँ अपनेको निपूती न समझकर, समूचे देशकी माँ समझ लेती है। उसी समझको 'गमेदौराँ' कहते है। 'जिगर' इसी 'गमेदौराँ'-के कायल है—

मैं वोह साफ ही न कह दूँ, जो है फर्क मुझमें, तुझमें।
तेरा दर्द, दर्दे-तनहा, मेरा ग़म गमे-ज़माना॥

'जिगर'का मानवीय-प्रेम धीरे-धीरे ईश्वरीय-प्रेममे परिवर्तित हो जाता है, और वे सर्वत्र उसका जलवा देखते हैं—

जिस रंगमें देखा उसे, वह परदानशीं है।
और उसपै यह परदा है कि परदा ही नहीं है॥
हर एक मकांमें कोई इस तरह मुकीं है।
पूछो तो कहीं भी नहीं, देखो तो यहीं है॥

बाहरकी आँखें बन्दकर जब उसे हियेकी आँखोसे देखा तो—

मुझीमें रहे मुझसे मस्तूर होकर।
बहुत पास निकले बहुत दूर होकर॥

अपना प्यारा सर्वत्र अपने साथ है, परन्तु अपनी अन्धी आँखे उसे न देख सकें, तो उसका क्या दोष? जिसने जब भी उसे टेरा, अपने समीप पाया—

इस तरह न होगा कोई आशिक़ भी तो पाबन्द।
आवाज़ जहाँ दो उसे वोह शोख़ वहीं है॥

साथ ही नही है, वह रोम-रोममें व्याप्त है—

आँखोमें नूर, जिस्ममें बनकर वोह जाँ रहे।
यानी हमींमें रहके, वोह हमसे निहाँ रहे॥

और जो मुसीबते हमपर आई, वोह हमारे साथ हमारे प्यारेने भी बर्दाश्त की। आये हुए दुःखको जब अपने साथी बाँट लेते है, समवेदना प्रकट करते है, तो दुःखका बोझ बहुत हलका लगने लगता है—

हरचन्द वक्फ़े-कश-म-कशे-दो जहाँ रहे।
तुम भी हमारे साथ रहे, हम जहाँ रहे॥

हमारा प्यारा हररूपमें जलवागर है, हियेकी आँखोसे देखो तो भूखोकी भूख-प्यासमे, सतियोके आँसुओमे, पीडितोकी आहोमे, पक्षियोके चहकनेमे, वही दिखाई देगा—

बहारे-लाला-ओ-गुल, शोख़िये-बर्को-शरर होकर।
वोह आये सामने लेकिन, हिजाबाते-नज़र होकर॥

अपने प्यारेका जलवा कैसे व्यक्त किया जाय? जिन आँखोने उसे देखा है, वे बोलना नही जानती, और जीभ कहे तो क्या कहे? उसने कुछ देखा नही—

क्या हुस्नका अफसाना महदूद हो लफ्ज़ोमें।
आँखें ही कहे उसको, आँखोने जो देखा है॥*

वाहरे मेरे प्यारेका मेरे प्रति अनुराग! न वोह कावेमे रहा, न मन्दिरमे, न धनियोके महलोमे। वह तो मेरे इस उजडे दिलमे ही बना रहा—

जो न काबेमें है महदूद न बुतख़ानेमें।
हाय वोह और एक उजड़े हुए काशानेमें॥

मै तो उसीके हुस्नका आशिक हूँ। मुझे तो सर्वत्र उसीका हुस्न-ही-हुस्न नज़र आ रहा है, और कुछ भी नही—

हुस्न है मेरे सामने, हुस्नके मासिवा नहीं।
इश्कमें मुब्तिला हूँ मै, कुफ्रमें मुब्तिला नहीं॥

परमात्माकी एक झलक देखनेकी साध लिये हुए न जाने कितने साधकोने साधनाएँ की। कुछ और आगे वढे तो परमात्माके चरणोकी समीपता प्राप्त करनेकी अभिलाषामें दुर्धर तप करते रहे। अधिक-से-अधिक ईश्वरमे एकाकार होनेके प्रयत्न किये, परन्तु परमात्मा कोई पृथक

* गिरा अनयन, नयन बिन बानी—तुलसीदास

शक्ति नही। वीतराग होनेपर यह आत्मा ही परमात्मा हो सकता है। कुछ इसी सिद्धान्तसे मिलता-जुलता अभिप्राय जिगर इस तरह व्यक्त करते है—

यहाँतक जज़्ब कर लूँ काश तेरे हुस्ने-कामिलको।
तुझीको सब पुकार उट्ठें निकल जाऊँ जिधर होकर॥

प्रेमी और प्यारा जब एकाकार हो जायें, तब विरह-मिलनके दुःखोका समूल नाश हो जाता है। गुण, गुणी, ज्ञाता, ध्यान, ध्येय, ध्याता, तू, मै, परका तब भेद-भाव नही रहता। मिस्रीसे मिठास जुदा नही, इसी तरह यह आत्मा वीतराग होकर परमात्म-पद प्राप्त कर लेता है, तब उपासक और उपास्यका भेद नही रहता—

वहदते-ख़ास इश्क़में गैरियतका जिक्र क्या?
अपने ही जलवे देखिये अपनी ही बज़्मेनाज़में॥

ईश्वर नामकी कोई वस्तु ससारमें है और उसीने यदि यह सृष्टि की है तो न जाने वह अपने भक्तोको मिटानेपर क्यो तुला हुआ है? इस बेरहमीसे तो बच्चा भी अपने खिलौने नही तोडता। जब भक्त ही न होगे तो भक्त-वत्सलको कौन पूछेगा? सृष्टि ही न रहेगी तो उसे सृष्टि-कर्ता कौन कहेगा?

मुझे ख़ाकमें तो न यूँ मिला, हूँ अगर्चे मै तेरा नक़्शे-पा।
तेरे जलवे-जलवेकी है बक़ा, मेरे शौके-नाम-ब-नामसे[1]॥

---

[1]इसी भावको इकबालने यूँ व्यक्त किया है—

इसी कोकबकी ताबानीसे है तेरा जहाँ रोशन।
ज़वाले-आदमे-ख़ाकी जियाँ तेरा है या मेरा?

(इन्ही मानव-रूपी चमकते नक्षत्रोंसे तेरा ससार जगमग-जगमग हो रहा है। यदि इनको तू नष्ट कर देगा तो नुकसान तेरा होगा या अन्य किसीका?)

'जिगर' रोने-बिसूरनेको शायाने-शान नही समझते—

इश्ककी अजमत न हरगिज जीते जी कम कीजिये ।
जान दे दीजे मगर, आँखें न पुरनम कीजिये ॥

तौहीने-इश्क देख न हो, ऐ 'जिगर' ! न हो ।
हो जाये दिलका खून, मगर आँख तर न हो ॥

और कभी आहो-नाला मुँहसे निकले भी तो—

नाला यूँ कीजे, यह अन्दाजे-शिकेबाई[1] हो ।
जैसे बेसाख्ता[2] होटोपै हँसी आई हो ॥

गमे-इश्कमें ओठोपर मुसकान न आये, तो 'जिगर' ऐसे इश्कको इश्क और ज़िन्दगीको ज़िन्दगी नही समझते—

तेरी खुशीसे अगर गममें भी खुशी न हुई ।
वोह जिन्दगी तो मुहब्बतकी जिन्दगी न हुई ॥

'जिगर' अपने प्यारे द्वारा दिये गये कष्टोको कष्ट नही समझते । बल्कि उसका अहसान समझकर आभारी होते है—

तेरी अमानतेग़मका तो, हक अदा कर लूँ ।
खुदा करे शबे-फुरक़त अभी दराज रहे ॥
तेरे निसार अताकरदा एक लतीफ खलिश ।
तमाम उम्र मुहब्बतको जिसपै नाज रहे ॥

अब जबाँ भी दे अदाये-शुक्रके काबिल मुझे ।
दर्द बख्शा है अगर तूने बजाये-दिल मुझे ॥

---

[1]सन्तोष और सब्रका अन्दाज मालूम दे, [2]अनायास, यकायक ।

मनुष्यकी वह स्थिति कितनी शोचनीय है, जब कि कोई उसे दयनीय समभकर जुल्मो-सितमसे हाथ खीच ले। युद्धमें रत एक योद्धा यह समभकर हथियार फेंक दे कि विपक्षी योद्धा अशक्त हो चला है, प्रतिद्वन्द्वी योद्धाके लिए घोर लज्जाकी वात होगी।

फूंक दे ऐ ग़ैरते-सोज़े-मुहब्बत फूंक दे।
अब समभती है वोह नज़रें, रहमके क़ाबिल मुझे॥

'जिगर'के यहाँ भी रकीबका ज़िक्र आता है, मगर कितनी महानताके साथ?

वोह हज़ार दुश्मने-जाँ सही, मुझे फिर भी गैर अज़ीज़ है।
जिसे ख़ाके-पा तेरी छू गई, वोह बुरा भी हो तो, बुरा नहीं[1]॥

'जिगर' एक ज़मानेमें वहुत वडे रिन्द रहे है। ऐसे कि इमामे-मैख़ाना कहलानेके पूर्ण अधिकारी। अपनी रिन्दीके वारेमें फरमाते है—

रिन्द जो मुझको समझते है उन्हें होश नहीं।
मैकदा-साज़ हूँ मैं मैकदाबरदोश नहीं॥
पाँव रुकते ही नहीं मंज़िले-जानाँके ख़िलाफ।
और अगर होशकी पूछो तो मुझे होश नहीं॥

'जिगर'को दर्से-हकीक़त वहुत न दे वाइज़!
वोह वेख़बर है बज़ाहिर तो वाख़बर पिन्हाँ॥

---

[1]रकीबके सम्बधमें किसी अज्ञात कविका यह शेर 'जिगर' को हमने झूम-झूम कर पढते सुना है और उनकी रायमें उर्दू शायरीमें इससे अच्छा शेर रकीव पर नही लिखा गया।

सामने उसके न कहते मगर अब कहते हैं।
लफ़्ज़ते-इश्क़ गई ग़ैरके मर जानेसे॥

जबतक शबाबेइश्क़, मुकम्मिल शबाब है।
पानी भी है शराब, हवा भी शराब है॥

तूने जिस अश्कपर नजर डाली।
जोश खाकर वही शराब हुआ॥

'जिगर' पतनोन्मुखी कौमको देखिये किस अन्दाज़में ग़ैरत दिलाते है—

जो साज कि ख़ुद नग़मये-हिरमाँ था उसीको।
अन्देशये-मिजराब है मालूम नहीं क्यो ?
उसी किश्तीको नहीं ताबेतलातुम सदहैफ़।
जिसने मुँह फेर दिये थे कभी तूफ़ानोके॥

सुख-दुखका जोडा है। जब सुख भोगते रहे तो दुखसे घबराहट क्यो ?

काँटोका भी कुछ हक है आख़िर।
कौन छुड़ाये अपना दामन॥

अब हम आपके 'शोलयेतूर' दीवानसे और पत्र-पत्रिकाओंसे सभी तरहका कलाम चुनकर दे रहे हैं—

बैठे है बज़्मेदोस्तमें[1] गुमशुदगाने-हुस्ने-दोस्त[2]।
इश्क है और तलब[3] नहीं, नग़मा[4] है और सदा[5] नहीं॥

अरबाबे-चमनसे[6] नहीं, पूछो यह चमनसे।
कहते है किसे निकहते-बरबादका[7] आलम॥

---

[1]प्यारेकी महफिलमें, [2]प्यारेके रूपमें लीन गुम-सुम, [3]इच्छा, [4]गीत लहरी, [5]आवाज़, [6]चमनवालोंसे, [7]बरबादीकी गन्धका।

हरइक सूरत, हरइक तसवीर मुबहिम[1] होती जाती है।
इलाही ! क्या मेरी दीवानगी कम होती जाती है ?

तेरे वग़ैर तो जीना रवा नहीं लेकिन।
मैं क्या करूँ जो तेरा ग़म ही जाँनवाज़[2] रहे॥

इश्क़ ही के हाथोमें कुछ सकत[3] नहीं रहती।
वरना चीज़ ही क्या है गोशये-नकाब उनका॥

आँखोंका था कुसूर न दिलका कुसूर था।
आया जो मेरे सामने मेरा गरूर था॥

किसी सूरत नमूदे-सोज़े-पिनहानी[4] नहीं जाती।
बुझा जाता है दिल, चेहरेकी तावानी[5] नहीं जाती॥

मुहब्बतमें इक ऐसा वक्त भी दिलपर गुज़रता है।
कि आँसू खुश्क हो जाते हैं, तुग़यानी[6] नहीं जाती॥

जिसे रौनक तेरे क़दमोने देकर छीन ली रौनक।
वोह लाख आबाद हो उस घरकी वीरानी नहीं जाती॥
वोह यूँ दिलसे गुज़रते हैं कि आहट तक नहीं होती।
वोह यूँ आवाज़ देते हैं, कि पहचानी नहीं जाती॥

वोह लाख सामने हो मगर इसका क्या इलाज ?
दिल मानता नहीं कि नज़र कामयाब है॥

---

[1]धुंधली, [2]जानके साथ, [3]शक्ति, [4]अन्तरग व्यथाका अस्तित्व, [5]चमक, [6]तूफान।

उन्हींके दिलसे कोई इसकी अज़मतें पूछे।
वोह एक दिल जिसे सब कुछ लुटाके लूट लिया॥

और तो कुछ कमी नही आपके इक्तदारमें[1]।
आप मुझे भुला सकें यह नहीं अख़्तयारमें॥

फ़ित्नये-रोज़गारमें[2] अमन[3] है क्या, करार[4] क्या?
हासिले-ज़ीस्त[5] गम सही, गमका भी ऐतबार क्या?

क्यो आतिशेगुल मेरे नशेमनको जलाये?
तिनकोमें है ख़ुद वर्केचमनजादका आलम॥

उन लबोकी जाँनवाजी देखना।
मुँहसे बोल उठनेको है जामे-शराब॥

दिलको बरबाद करके बैठा हूँ।
कुछ ख़ुशी भी है कुछ मलाल भी है॥

आ कि तुझ बिन इस तरह ऐ दोस्त! घबराता हूँ मैं।
जैसे हर शैमें किसी शैकी कमी पाता हूँ मैं॥
कूए-जानाँ की हवातकसे भी थर्राता हूँ मैं।
क्या करूँ बेअख़्तयाराना चला जाता हूँ मैं॥
मेरी हस्ती शौक़ेपैहम, मेरी फितरत इज़्तराब।
कोई मंज़िल हो मगर गुज़रा चला जाता हूँ मैं॥

उनके बहलाये भी न बहला दिल।
रायगाँ[6] सईए-इल्तफ़ात[7] गई॥

---

[1]अधिकारमे, [2]ससारके झमेलोमे, [3]सुख-शान्ति, [4]चैन; [5]ज़िन्दगीका हासिल, [6]व्यर्थ, [7]कृपा पानेकी युक्ति।

तर्के-उल्फ़त बहुत बजा नासेह !
लेकिन उसतक अगर यह बात गई ?

सीनये-नैयं[1] जो गुज़रती है।
वोह लबे-नै-नवाज़[2] क्या जाने ?

इबरते-बन्दगी-ओ-नाचारी[3]।
कोई बन्दानवाज़[4] क्या जाने ?

इस इश्क़की तलाफ़िये-माफ़ात[5] देखना।
रोनेको हसरतें है, जब आँसू नहीं रहे॥

हम न मरते तेरे तग़ाफ़ुलसे[6]।
पुरसिशे-बे-हिसाबने[7]-मारा॥

हाय यह मजबूरियाँ, महरूमियाँ, नाकामियाँ।
इश्क आख़िर इश्क़ है, तुम क्या करो, हम क्या करें ?

किस तरफ़ जाऊँ, किधर देखूँ, किसे आवाज़ दूँ ?
ऐ हुजूमे-नामुरादी जी बहुत घबराय है॥

हमसे पूछो तो इश्क़की भी निगाह।
सख़्त काफ़िर निगाह होती है॥
वोह भी है इक मुक़ामेइश्क जहाँ।
हर तमन्ना गुनाह होती है॥

---

[1]बाँसुरीके मनपर, [2]स्वर खींचनेवालेके ओठ। [3]उपासना और उसे न कर सकनेकी मजबूरियाँ, [4]ख़ुदा, माशूक़, [5]प्रायश्चितकी मरी हुई भावनायें, [6]उपेक्षासे, [7]अधिक पूछताछने।

इलाही ! तर्केमुहब्बत भी क्या मुहब्बत है।
भुलाते हैं उन्हें वोह याद आये जाते हैं।

मैं तेरा अक्स हूँ कि तू मेरा।
इस सवालो-जवाबने मारा ॥

देखा गया न यह भी सैयादो-बाग़बांसे।
इक शाख़ेगुल थी लिपटी एक शाखे-आशियांसे ॥

ज़मानेके हमदोशो[1] हमराज़[2] कबतक ?
ज़मानेको पीछे हटाता चला आ ॥

सावनकी रैन अँधेरी, तनहाइयोंका आलम।
भूले हुए फसाने सब याद आ रहे हैं॥

शौक़ने बेख़ुदीमें जब दस्तेतलब[3] बढ़ा दिया।
इबरते-इश्क़ने वहीं पहलू-ए-दिल दबा दिया ॥

इश्क़ फ़नाका नाम है इश्क़में ज़िन्दगी न देख।
जलवये-आफताब बन, ज़र्रेमें रोशनी न देख ॥
होके रहेगा हमनवा वोह भी तेरे ही साथ-साथ।
नग्मयेशौक़ गाये जा इश्क़की बरहमी न देख ॥

सोज़े-तमाम चाहिए, रंगे-दवाम चाहिए।
शमअ़ तहेमज़ार हो शमअ़ सरेमज़ार क्या ?

भूल जाऊँ कि मेरा ज़ौक़ेमुहब्बत क्या है ?
इस तरह तो न मेरी हौसला अफ़ज़ाई हो ॥

---

[1]कन्धे-ब-कन्धे, [2]साथ-साथ, [3]इच्छाका हाथ।

उनके जाते ही यह हैरत छा गई ।
जिस तरफ देखा किया, देखा किया ॥

वोह उनकी बेरुख़ी, वोह बेनियाज़ाना हँसी अपनी ।
फिरी महफ़िल थी लेकिन बात बिगड़ी बन गई अपनी ॥

फूल वही, चमन वही, फ़र्क़ नज़र-नज़रका है ।
अहदे बहारमें था क्या ? दौरेख़िज़ाँमें क्या नहीं ॥

रह गया है अब तो बस इतना ही रब्त इक शोख़से ।
सामना जिस वक्त हो जाता है, भर आता है दिल ॥

जब मिली आँख होश खो बैठे ।
कितने हाज़िर जवाब हैं हम लोग ॥

अल्लाह तुझे रक्खे महफ़ूज़[1] हवादससे[2] ।
ऐ कुफ़्र ! तेरे दमतक आराइशे-ईमाँ[3] है ॥

पीता बग़ैर अज़्न[4] यह कब थी मेरी मजाल ।
दर-परदा चश्मेयारकी शह पाके पी गया ॥

किधरसे बर्क़ चमकती है देखें ऐ वाइज़ !
मैं अपना सागर उठाता हूँ, तू किताब उठा ॥

बहार तौबा-शिकन, चश्मे-मस्तेयार मुसिर ।
मैं आज पी जो न लेता वह बदगुमाँ होता ॥

हमसे नज़र फेर ली उस शोख़ने ।
हम भी हैं इन्सान ख़फ़ा हो गये ॥

---

[1]सुरक्षित, [2]आपदाओंसे, [3]ईमानकी शोभा, [4]निमन्त्रण ।

इश्क़ ही तनहा नहीं आशुफ़्ता सर मेरे लिए।
हुस्न भी बेताब है और किस क़दर मेरे लिए॥

अब नज़रको कहीं करार नहीं।
काविशे-इन्तख़ाबने मारा॥

ज़र्रोंसे बातें करते हैं दीवारोदरसे हम।
मायूस किस कदर हैं, तेरी रहगुज़रसे हम॥
कोई हसीं हसीं ही ठहरता नहीं 'जिगर'!
बाज़ आये इस बुलन्दिये-ज़ौक़े-नज़रसे हम॥
इतनी-सी बातपर है बस इक जगेज़रगरी।
पहले उधरसे बढ़ते हैं वोह या इधरसे हम॥

मुमकिन नहीं कि जज़्बयेदिल कारगर न हो।
यह और बात है तुम्हे अबतक ख़बर न हो॥

जिसे मैं भी ख़ुद न बता सकूं, मेरा राज़ेदिल है वोह राज़ेदिल।
जिसे ग़ैर दोस्त समझ सके, मेरे साज़में वोह सदा नहीं॥

अर्ज़े-शौक़पर मेरी पहले कुछ अताब उनका।
ख़ास इक अदाके साथ, उफ वोह फिर हिजाब उनका॥

यह आलम है अब ख़ुश्क आँखोंमें अपनी।
कि तूफ़ां है बरपा रवानी नहीं है॥

हद्दे-कूचये-महबूब है वहींसे शुरू।
जहांसे पडने लगें पांव डगमगाये हुए॥

लेके ख़त उनका किया ज़ब्त बहुत कुछ लेकिन।
थरथराते हुए हाथोंने भरम खोल दिया॥

मिलाके आँख न महरूमे-नाज रहने दे।
तुझे कसम जो मुझे पाकबाज रहने दे॥

खता मुआफ किसी औरका तो जिक्र ही क्या ?
नियाजमन्द तेरे तुझसे बेनियाज रहे॥

मानूसे-ऐतबारे-करम क्यों किया मुझे ?
अब हर खतायेशौक उसीका जवाब है॥

जो मसर्रतोंसे खलिश नहीं, जो अजीयतोंमें मजा नहीं।
तेरे हुस्नका भी कुसूर है, मेरे इश्क ही की खता नहीं॥
मेरा जौक भी, मेरा शौक भी, है बलन्द सतहे-अवामसे।
तेरा हिज्र भी, तेरा वस्ल भी, मेरे दर्देदिलकी दवा नहीं॥

चुप हैं वोह यूँ सुनके मेरी अर्जेशौक।
जैसे कि सचमुच ही खफा हो गये॥

खबर नहीं मुझे, मैं क्या हूँ, आरजू क्या है ?
किसीने जबसे यह समझा दिया कि तू क्या है॥

कूचये-इश्क़में निकल आया।
जिसको खाना-खराब होना था॥

लाखोंमें इन्तखाबके काबिल बना दिया।
जिस दिलको तुमने देख लिया दिल बना दिया॥

माना ग़रूरे-इश्क़ भी इक चीज है मगर।
इतने भी दूर-दूर तेरे आस्तांसे क्या ?

उनकी वोह आमद-आमद अपना यहाँ यह आलम।
इक रंग आ रहा है, इक रंग जा रहा है॥

वोह कबके आये भी और गये भी, नजरमें अबतक समा रहे हैं।
यह चल रहे हैं, वह फिर रहे हैं, यह आ रहे हैं, वह जा रहे हैं॥
वही क़यामत है क़द्देबाला, वही है सूरत, वही सरापा।
लबोंको जुम्बिश, निगहको लरज़िश, खडे हैं और मुसकरा रहे हैं॥

हुस्न आया था खुद मनानेको।
सो तवज्जह ही इश्कने कम की॥

मुझे क्या पडी है तेरे दरसे उट्ठूं।
ठहरने जो दे इज़्तराबे-मुहब्बत॥

यह क्या है कि पहलूमें वोह भी हैं लेकिन—
शबे-माह फिर भी सुहानी नहीं है॥

अजब इन्कलाबे जमाना है, मेरा मुख़्तसर-सा फसाना है।
यही अब जो बार है दोशपर यही सर था जानू-ए-यारपर॥

हश्रके दिन वोह गुनहगार न बख़्शा जाये।
जिसने देखा तेरी आँखोंका पशेमाँ होना॥

दिलको क्या-क्या सकून होता है।
जब कोई आसरा नहीं होता॥

उमीदे-उफ़ूको[1] भी मैंने अब दिलसे मिटा डाला।
यह था इक बदनुमा धब्बा मेरे दामाने-इसयाँका[2]॥

चांदनी है, हवा है, क्या कहिये।
मुफलिसी क्या बला है, क्या कहिये॥

---

[1]हश्रमें अपराध क्षमा किये जानेकी आशाको, [2]पाप-रूपी चादरका।

फिर वह हमसे ख़फा है क्या कहिये ?
ज़िन्दगी बेहया है, क्या कहिये ॥

अपना ज़माना आप बनाते हैं अहले दिल।
हम वोह नहीं कि जिसको ज़माना बना गया ॥

मुझ नातवाने-इश्क़को[1] समझा है तुमने क्या ?
दामन पकड़ लिया तो छुड़ाया न जायगा ॥

हरमो-दैरमें रिन्दोंका ठिकाना ही न था।
वोह तो यह कहिए अमाँ[2] मिल गई मयख़ानेमें ॥

वोह भी निकली इक शुआए-ब्रर्क़-हुस्न[3]।
मैं जिसे अपनी नज़र समझा किया ॥

नवीदे-बख़्शिशे-इसयाँसे[4] शर्मसार न कर।
गुनाहगारको याँ रब ! गुनाहगार न कर ॥

नाज़ करती है ख़ाना वीरानी।
ऐसे ख़ाना ख़राब हैं हम लोग ॥

उससे भी शोख़तर हैं उस शोख़की अदायें।
कर जायें काम अपना लेकिन नज़र न आयें ॥

जुनूने-मुहब्बत यहाँतक तो पहुँचा।
कि तर्क-मुहब्बत किया चाहता हूँ ॥

हुस्नकी सहरकारियाँ[5] इश्कके दिलसे पूछिये।
वस्ल कभी है हिज्र-सा, हिज्र कभी विसाल-सा ॥

---

[1]निर्बल प्रेमीको, [2]शरण, [3]हुस्नरूपी बिजलीकी किरण
[4]अपराधोंको क्षमा किये जानेकी सूचनासे, [5]जादूगरी ।

हुस्नकी शानें थीं जितनी, सब नुमायाँ हो गईं।
जो तेरे रुख़से बचीं रंगे गुलिस्ताँ हो गईं॥

—निगार जनवरी १९४१ ई०

मेरी हैरतकी क़सम आप उठायें तो नक़ाब।
मेरा ज़िम्मा है कि जलवे न परीशाँ होंगे॥

मेरा जो हाल हो-सो-हो बर्क़ेनज़र गिराये जा।
मैं यूँ ही नालाकश रहूँ तू यूँ ही मुसकराये जा॥

लहज़ा-ब-लहज़ा दम-ब-दम जलवा-ब-जलवा आये जा।
तिश्नये-हुस्नेज़ात हूँ, तिश्नालबी बढ़ाये जा॥

लुत्फ़से हो कि महरसे, होगा कभी तो रूबरू।
उसका जहाँ पता चले, शोर वहीं मचाये जा॥

ख़ुशा वोह दर्देमुहब्बत, ज़हे वोह दिल कि जिसे।
ज़रा सुकून हुआ, गुद-गुदा दिया तूने॥

ख़ुशा वोह जान जिसे दी गई अमानते-इश्क़।
ज़हे वोह दिल जिसे अपना बनाके लूट लिया॥
सलाम उसपै कि जिसने उठाके परदये-दिल।
मुझीमें रहके मुझीमें समाके लूट लिया॥

मुझे चाहिए वही साक़िया जो छलक चले, जो बरस चले।
तेरे हुस्ने-शीशा-बदस्तसे, तेरी चश्मे-बादा-बजामसे॥

तुम्हे भी ख़बर है जो तुम कह गये हो?
ख़ुद अपनी अदाओंसे मसहूर होकर॥

सुनता हूँ कि हर हालमें वोह दिलके करीं है ।
जिस हालमें मैं हूँ मुझे अफसोस नहीं है ।।
वाहरे शौक़े-शहादत, कूए-कातिलकी तरफ़ ।
गुनगुनाता, रक्स करता, झूमता जाता हूँ मैं ।।

—अपनी डायरीसे

तेरी ख़ुशीसे अगर ग़ममें भी ख़ुशी न मिली ।
वोह ज़िन्दगी तो मुहब्बतकी ज़िन्दगी न हुई ।।
सबा ! यह उनसे हमारा पयाम कह देना ।
गये हो जबसे यहाँ सुबहोशाम ही न हुई ।।

दिल गया रौनक़े-हयात गई ।
ग़म गया सारी कायनात गई ।।

जबसे तू महरबान है प्यारे ।
और दिल बदगुमान है प्यारे ।।

तू जहाँ नाज़से क़दम रख दे ।
वोह ज़मीन आसमान है प्यारे ।।

शामसे आ गये जो पीनेपर ।
सुबहतक आफ़ताब हैं हम लोग ।।
तू हमारा जवाब है तनहा ।
और तेरा जवाब हैं हम लोग ।।

'आजकल' सितम्बर १९४९ ई०

तेरे जलवोंको देखें और मेरे दिलकी तरफ़ देखें ।
कहाँ हैं इत्तसाले[1]-मौजो-साहिल देखनेवाले ?

---

[1]लहरें और किनारेको मिला हुआ ।

कहीं ऐसा तो नहीं वोह भी कोई हो आज़ार।
तुमको जिस चीज़पै राहतका गुमाँ होता है॥

हाय! वोह सिलसिलये-अश्क कि जो तेरे हुज़ूर।
दिलमें रहता है न आँखोमें रवाँ रहता है॥

वोह अदाये-दिलबरी हो कि नवाए-आशिक़ाना।
जो दिलोको फतह कर ले, वही फातहेज़माना॥
कभी हुस्नकी तबीयत न बदल सका ज़माना।
वही नाज़े-बेनियाज़ी वही शाने-ख़ुसरवाना॥
मैं हूँ उस मुक़ामपर अब कि फिराक़ोवस्ल कैसे?
मेरा इश्क भी कहानी, तेरा हुस्न भी फसाना॥
तेरे इश्क़की करामत यह अगर नहीं तो क्या है?
कभी बेअदब न गुज़रा, मेरे पाससे ज़माना॥
मेरे हमसफीर बुलबुल! मेरा-तेरा साथ ही क्या?
मैं ज़मीरे-दश्तोदरिया तू असीरे-आशियाना॥
तुझे ऐ 'जिगर'! हुआ क्या कि बहुत दिनोसे प्यारे।
न बयाने-इश्को-मस्ती न हदीसे-दिलबराना॥

'आजकल' १५ अगस्त १९४९ ई०

क़दम हटे जो कभी जादयेवफासे कहीं।
हरेक ज़र्रा पुकारा कि देखता हूँ मैं॥

इल्म ही ठहरा इल्मका बागी।
अक्ल ही निकली अक्लकी दुश्मन॥

'माहेनौ' करांची फरवरी १९५१ ई०

अज़मते-काबा मुसल्लिम, लेकिन इसका क्या इलाज?
दिल ही जब कहता हो कि बुतख़ाना फिर बुतख़ाना है॥

रिन्दोंने जो छेड़ा ज़ाहिदको साक़ीने कहा किस तर्ज़से आज—
"औरोंकी वोह अज़मत क्या जानें, कमज़र्फ़ जो इन्सां होते हैं ॥"
यह ख़ून जो है मज़लूमोंका, ज़ाया तो न जायेगा लेकिन—
कितने वोह मुबारक क़तरे हैं जो सर्फ़े-बहारां होते हैं ?

—'शायर' अक्तूबर १९५० ई०

वोह सब्ज़ानगे-चमन है, जो लहलहा न सके।
वोह गुल है ज़ख़्मे-बहारां जो मुसकरा न सके॥
घटे अगर तो बस इक मुश्तेख़ाक है इन्सां।
बढ़े तो वुसअ़ते-कौनैनमें समा न सके॥

कभी शाख़ो-सब्ज़ा-ओ-बर्गपर कभी ग़ुंचओ-गुलो-ख़ारपर।
मैं चमनमें चाहे जहां रहूँ, मेरा हक़ है फ़स्ले-बहारपर॥

२ जून १९५३ ई०]

अली अख़्तर 'अख़्तर'
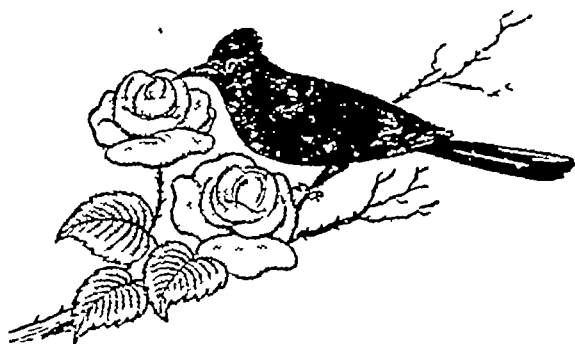
[१८९२ —— ई०]

आप १८९२ ई०मे रामपुरमे उत्पन्न हुए, अलीगढके रहनेवाले है। १९१०-११ ई०से हैदरावादमे नौकरी कर रहे थे, और अव भारत-विभाजनके वाद करांची चले गये है। अरवी-फारसीके अतिरिक्त अग्रेजीमें मैट्रिकुलेट है। घरेलू वातावरण शायरीमय था। अत आप भी वचपनसे शेर कहने लगे।

१४-१५ वर्षकी उम्रमे आप ऐसा कलाम कहने लगे थे—

क़फसमें समझे थे हम कि हालत रहीने-अमनो-अमां रहेगी।
किसे ख़वर थी कि वर्क़ अव भी निगाह्-वर आशियां रहेगी॥

डूबी हुई पाता हूँ नब्ज़े-दिले-दीवाना।
हलकी-सी फिर इक जुम्बिश ऐ जलवये जानाना!

यहाँ आपके चन्द अशआर निगार जनवरी १९४१ से मुन्तख़िव करके दिये जाते है—

कोई और तर्ज़े-सितम सोचिये।
दिल अव ख़ूगरे-इम्तहां[1] हो गया॥

---

[1]परीक्षाका अभ्यस्त।

मेरी मजलूम[1] चुपपर शादमानीका[2] गुमां क्यो हो।
कि नाउम्मीदियोके जख़्मको बहना नहीं आता॥

तुझसे हयातो-मौतका[3] मसअला हल अगर न हो।
जहरे-ग़मे-हयात पी मौतका इन्तजार कर॥

कब हुई आपको तौफीक़े-करम[4]।
आह! जब ताक़ते-फरियाद नहीं॥

जहमते-इल्तफात[5] की, आपने आह! क्या किया?
अब वोह लताफतें कहां हसरते-इन्तजारमें॥

करवटें लेती है फूलोमें शराब।
हमसे इस फस्लमें तौबा होगी?

मेरी बलाको हो, जाती हुई बहारका ग़म।
बहुत लुटाई है ऐसी जवानियां मैंने॥
मुझीको परदये-हस्तीमें दे रहा है फरेब।
वोह हुस्न जिसको किया जलवा आफरीं मैंने॥

नहीं ऐ हमनफस! बेवजह मेरी गिरयासामानी।
नजर अब वाक़िफे-राजे तबस्सुम होती जाती है॥

मेरी बेखुदी है उन आंखोका सदक़ा।
छलकती है जिनसे शराबे-मुहब्बत॥
उलट जायें सब अक़्लोइरफांकी बहसें।
उठा दूं अभी गर नक़ाबे-मुहब्बत॥

१० फरवरी १९५२]

---

[1]अत्याचार-पीडित, [2]प्रसन्नताका, [3]जीवन-मृत्युका, [4]कृपाकरनेकी सामर्थ्य, [5]कृपाकरनेकी तकलीफ उठाई।

ज़फ़र मेहदी 'रज़्म' अवधके एक कस्बे 'रदौली'मे करीब १६०० ई० में उत्पन्न हुए। रदौली लखनऊ फैज़ावादके दरम्यानमे पडता है। रज़्मकी इश्किया शायरीमें सौंदर्यकी कोमल भावनाओके साथ-साथ प्रेमका एक बुलन्द तसव्वुर भी मिलता है। वे इश्कको वेकारोंके जी वहलावकी चीज़ नही समझते, वल्कि उसे जीवनके लिए अत्यत आवश्यक समझते हैं—

बेइश्क दर्दे-ज़ीस्तका दरमाँ न हो सका।
इन्साँ बजाये खुद कभी इन्साँ न हो सका॥

मैं दलीले-ज़िंदगी समझूं कि उम्मीदे-विसाल।
शमअ़ इक बुझती हुई-सी दिलके काशानेमें है॥

झलक यूं यासमें[1] उम्मीदकी मालूम होती है।
कि जैसे दूरसे इक रोशनी मालूम होती है॥

मुबारक ज़िदगीके वास्ते दुनियाको मर मिटना।
हमें तो मौतमें भी ज़िंदगी मालूम होती है॥

यही है सबाकी[2] जो निकहत-फ़रोशी[3]।
क़फ़स लेके अब मैं उडा चाहता हूँ॥

ऐ बादेसबा! छेड न ख़ाकस्तरे दिलको।
हर ज़र्रा कहीं फैलके सहरा न बना दे॥

तेरे शायाने-लुत्फ़े-दिल न सही।
हौसले तो है ग़म उठानेके॥

है मेरी नाचीज़ हस्ती बहरे[4]-नापैदा-कनार[5]।
मौत कहते है जिसे वोह ज़ीस्तका[6] साहिल[7] नहीं॥

हुस्ने-नज़रसे मैंने सँवारी जो कायनात[8]।
वोह कौन ख़ार[9] था कि गुलिस्ताँ न हो सका?

यह हौसला है कि बिजलीकी ज़दपै गुलशनमें।
ब-अहतमाम[10] नशेमन बना रहा है कोई॥

---

[1]निराशामें, [2]हवाकी, [3]सुगन्ध बेचना, [4]नदी, [5]जिसके किनारे नही, [6]जिन्दगीका; [7]किनारा; [8]दुनिया। [9]काँटा, [10]सावधानीपूर्वक, प्रयत्नसे।

तकमीले-इश्क़ क़ैदमें मजबूरियोंकी थी।
कैसी हँसी कि रोनेकी जुरअत न कर सके॥

मेरी मजबूरियोंका नाम रख लो दूसरी दुनिया।
यह कोई फ़ासला है जो क़फ़ससे आशियाँ तक है॥

क़फ़स ही आशियाँ है एक मुद्दतके असीरोंको।
कहाँ सर फोडने जायेंगे यह क़ैदी रिहा होकर॥

हर इक नफ़समें तड़प है हर इक नज़र बेबाक।
किसी ख़तरसे झिझकना शबाब क्या जानें?

रिहाई ऐतमादे-ज़ाती-ओ-तौफ़ीक़से पाई।
किया था क़ैद जिन हाथोंने वोह आज़ाद क्या करते॥

लुत्फ़े-आज़ादी कुजा रुक-रुकके उठते हैं क़दम।
याद है वोह दिन अभी जब पाँवमें ज़ंजीर थी॥

फ़िक्रे-आज़ादीको ता-अहसास इमकाँ कीजिये।
दिलसे दिलतक बर्क़े-ख़ुद्दारीको जौलाँ कीजिये॥

दामने-गुलमें फ़रोज़ा कीजिये आतशकदा।
आगके शोलोंसे तरतीबे-गुलिस्ताँ कीजिये॥

यह सितम हाये मुसलसल, यह जफ़ाए-मुत्तसिल।
लाइये किसकी ज़बाँ जो शुक्रे-अहसाँ कीजिये।

हैरते-ग़म ता-कुजा[1], जब्ने-मुहब्बत ता-बके[2]।
'रज़्म' उठिये अब सकूने-ग़मको तूफ़ाँ कीजिये॥

---

[1]कहाँतक, [2]कबतक।

हम वेखुदी-ओ-होशकी हदसे गुजरके
अन्दाजये-जमाले-हकीक़त न कर सं

—निगार अवहू

हबीब व महबूब
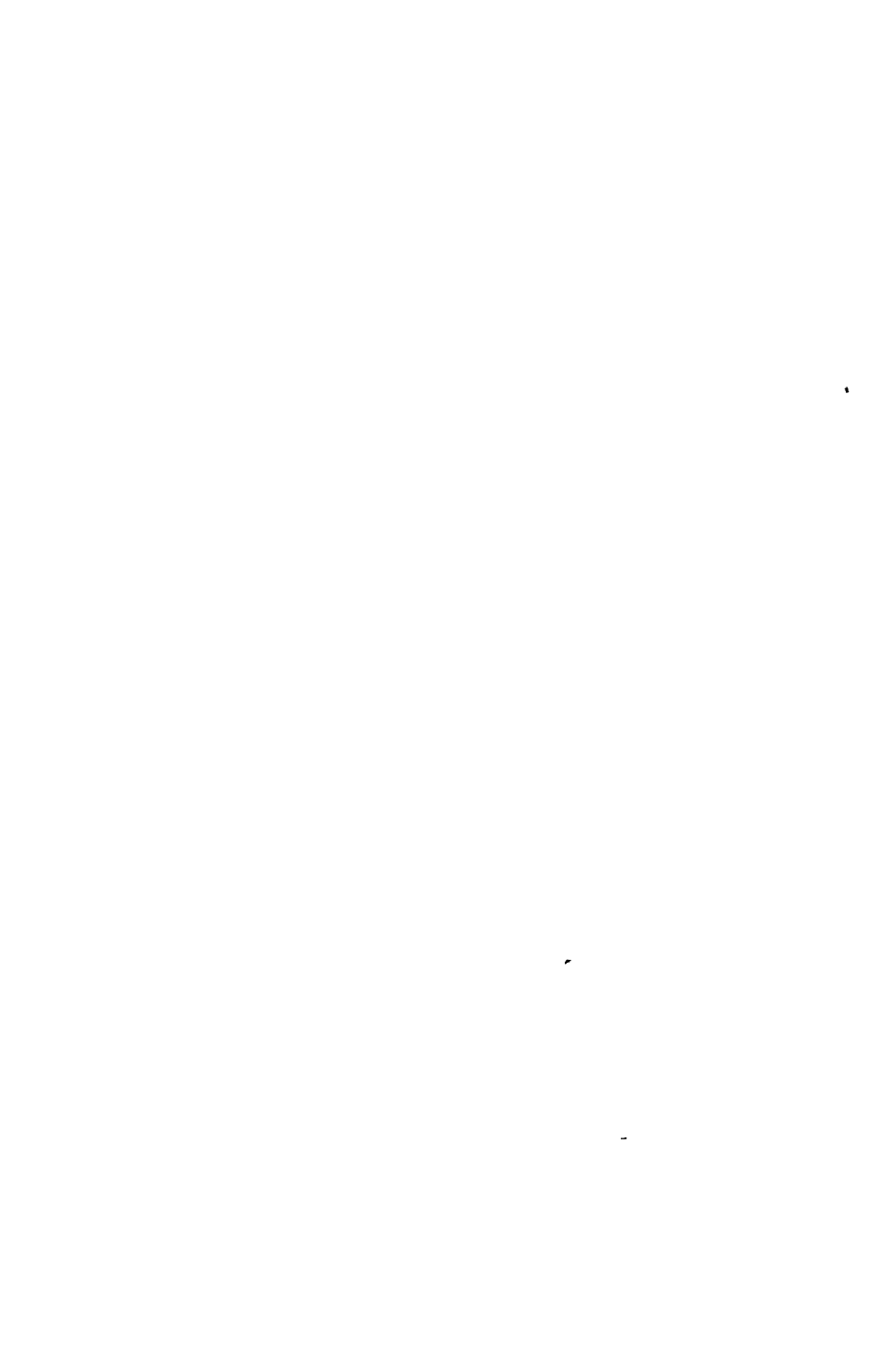
शब्द-कोश

ऐसे शब्द जो अशआरमें बहुधा प्रयुक्त हुए है, उनके अर्थ बार-बार फुटनोटमें देनेसे पुस्तकका आकार अधिक न बढ़े, इसलिए अन्तमे दिये गये है। शब्द इज़ाफत सहित न देकर अलग-अलग दिये गये है। अत उनको एक ही जगह न खोजकर अक्षर क्रमसे यथास्थान खोजना चाहिए। जैसे **वक़्ते-मैनोशीका** अर्थ देखनेके लिए **'मै'** का अर्थ मकार मे **'नोशी'**का अर्थ नकारमे देखना चाहिए। इसी तरह अन्य शब्दोका अर्थ देखना चाहिए। जिस तरह उर्दू उलटी तरफसे लिखी जाती है, उसी तरह इसके इज़ाफती (समासपदी) शब्दोका अर्थ भी उलटे ढगसे होता है। जैसे—हिन्दीमे 'मानव-धर्म'का अर्थ होगा मनुष्यका धर्म। मगर उर्दूके 'मज़हबे-इन्सान'का अर्थ मज़हबका इन्सान न होकर इन्सानका मजहब होगा। यानी जिस शब्दके अतिम अक्षरके ऊपर या सामने 'ए' होगा, वह पहले लिखा जायगा और अपने सामनेके अक्षरके बादमें बोला जायगा। जैसे—

बर्के-खिरमनसोज़	=	खलियानको जलानेवाली बिजली
शबे-गम	=	मुसीबतकी रात
दीदये-पुरनम	=	अश्रुपूर्ण नेत्र
काबिले-रहम	=	रहमके योग्य
सैल-ए-हवादस	=	मुसीबतोकी बाढ
आबल-ए-पा	=	पाँवके छाले
दर्दे-हिज्र	=	विरहका दुख
गुस्ले-मैयत	=	मृतकका स्नान (मृतकको नहलाना)

उक्त शब्दोंसे स्पष्ट हो जाता है कि पहला शब्द जिसके अन्तिम अक्षरपर या उसके आगे 'ए' लगी होती है, उसका अर्थ अपने सामनेके शब्दसे बादमे किया जाता है। यह इजाफती शब्द केवल दो शब्दोंके ही नहीं होते, वरन कई-कई शब्दोके भी होते है। बाज़ दफा तो पूरे मिसरेका-मिसरा (मिसरअ) ही इज़ाफती होता है। जैसे—

मुहरे-मकतूबे-अज़ीज़ाने-गिरामी लिखिये
हिर्ज़े-बाज़ूए-शिगरफाने-खुदआरा कहिये

यह गालिबका शेर है जिसके शब्दोंके अर्थ ये है—

मुहर	=	किसीके नामकी मुहर लगाना
मकतूब	=	लिखा गया, पत्र
अज़ीज़ान	=	मित्रोको
गिरामी	=	श्रीमान्, सर्वश्री
मकतूबे-गिरामी गिरामी नामा	=	(श्रीमानका पत्र, कृपापत्र)
हिर्ज़	=	तावीज़
बाज़ू	=	बाहुपर
शिगरफान	=	सुन्दरियाँ
खुदआरा	=	शृंगारमयी

किन्तु उर्दू-व्याकरणके अनुसार अर्थ करते समय वही इज़ाफती-नियम लागू होगा। यानी पहले (मिसरअ) मिसरेका अर्थ होगा—

'प्रियजनोको लिखे गये पत्रपर लगी हुई मुहर'

दूसरे (मिसरअ) मिसरेका अर्थ होगा—

'शृंगारमयी सुन्दरियोके बाजूपर बँधा हुआ तावीज़'

अक्सर गालिब, मोमिन, बर्क़ आदि ऐसे शायरोंके कलाममे लम्बे-इजाफती शब्द आते है जो उर्दूमे क्लिष्ट कहनेके लिए मशहूर है।

इसी तरह 'और' शब्दका सक्षिप्त उर्दूमे 'ओ' होता है और यह बहुत अधिक उर्दू-शायरीमे प्रयुक्त होता है। जैसे—

गुल-ओ-बुलबुल, विसाल-ओ-हिज्र आदि। इन शब्दोका अर्थ भी भिन्न-भिन्न स्थानोमें देखना चाहिए। यानी गुलका अर्थ गकारमे, बुलबुल-का अर्थ बकारमें, विसालका वकारमे और हिज्रका 'ह'में देखना चाहिए। एक ही स्थानपर देखनेसे अर्थ न मिलकर निराशा ही मिलेगी।

कोश

अ

अंगबीं—शहद।
अगुश्त—उँगुली।
अगुश्तरी—अँगूठी।
अगेज़—भडकानेवाला, भरा हुआ। (यौगिक शब्दोके अन्तमे)
अजाम—परिणाम।
अजुम—तारे।
अजुमन—सभा, मजलिस।
अकदस—श्रेष्ठ, पवित्र।
अकबर—महान।
अक़ीदत—विश्वास, श्रद्धा।
अक़्द—विवाह, इकरार।
अक्ल—भोजन, खाना (रोज़ी)।
अक्ल—वुद्धि।
अक्स—प्रतिविम्व।
अक्सर—प्राय।
अक्सीर—वहुत गुणकारी।
अखगर—आगकी चिनगारी।
अखज़—ग्रहण करना, उद्धृत करना।
अखलाक—आचार, शील।
अख्तर—तारा।
अगरचे—यद्यपि।
अगराज़—गरज, मतलव।
अज़खुद—स्वय।
अजज़ा—अश, भाग।
अज़दहा—अजगर।
अज़दहाम—भीड, झुण्ड।
अजदाद—वाप-दादा।
अज़बस—वहुत।
अज़मत—वडप्पन, महत्ता।
अजल—मृत्यु।
अज़ल—अनादिकाल।
अ़ज़ाब—कष्ट, विपत्ति।
अज़ीज़—प्रिय।
अजीब—अद्भुत, विचित्र।
अ़ज़ीम—विशाल।
अज़ीयत—पीडा।
अ़ज़ो—अग।
अ़ज़्म—दृढ विचार।
अतवार—चाल-चलन, रग-ढग।
अदना—तुच्छ।
अदब—शिष्टाचार।
अदम—परलोक।
अ़दल—न्याय।
अदा—हाव-भाव।
अदीब—साहित्यज्ञ, नम्र।
अदू (उदू)—प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु।
अनवर—चमकीला।
अनादिल—बुलबुलें।
अनीस—मित्र।
अन्दाज़—भाव, चेष्टा, तख़मीना।

अन्दाम—शरीर।
अन्दोह—दु ख।
अफगन—गिरानेवाला।
अफगार—घायल।
अफशा—प्रकट।
अफसाना—किस्सा।
अफसुरदा—मुरझाया हुआ, खिन्न।
अफसूँ—जादू।
अबतर—खराब।
अबस—व्यर्थ।
अ़बा—चोगा।
अब्र—मेघ।
अमन—शान्ति।
अ़मल—आचरण।
अमान—शरण।
अ़मामा—पगडी।
अ़मीक—गम्भीर, गहरा।
अम्बोह—भीड।
अम्र—कार्य, घटना।
अयाँ—जाहिर।
अयादत—बीमार-पुरसी।
अय्याम—समय।
अ़रक़—पसीना।
अरमान—इच्छा।
अर्क़—रस।
अरज—सम्मान, शरीर।
अर्ज़—निवेदन, चौडाई।
अर्ज़—पृथ्वी।
अर्श—आसमान।
अलम—दु ख।
अलामत—चिह्न।
अ़लील—बीमार।

अलताफ—अनुग्रह।
अल्लामा—बहुत बडा विद्वान।
अशद—अत्यन्त।
अश्क—आँसू।
असग़र—बहुत छोटा।
असद—सिंह।
असर—प्रभाव।
असरार—रहस्य।
असा—डडा।
असीर—बन्दी।
असील—सुशील।
अस्तग़फिरुल्लाह—ईश्वर मुझे क्षमा करे।
अ़स्मत—पातिव्रत।
अहक़र—बहुत तुच्छ।
अहद—प्रतिज्ञा।
अहबाब—इष्ट-मित्र।
अहल—योग्य।
अहवाल—विवरण।
अहसन—बहुत नेक।

आ

आईन—नियम।
आक़बत—परलोक।
आगा—बडा भाई, बडा।
आगाज़—प्रारम्भ।
आगाह—जानकार।
आग़ोश—गोद।
आजम—महान।
आजा—शरीरके अग।
आजुर्दह—दु खी, चिन्तित।
आतिश—आग।

आदम—मनुष्य।
आफरीं-आफरीन—शाबाश।
आब—पानी।
आबदीदा—अश्रुपूर्ण।
आब-रवाँ—बहता हुआ पानी।
आबरू—प्रतिष्ठा।
आबला—छाला।
आबशार—जलप्रपात।
आबिद—भक्त।
आबेबका—अमृत।
आम—साधारण।
आमद—आगमन।
आमादा—तत्पर।
आमाल—चरित्र, काम।
आर—लज्जा झिझक।
आरज़ू—इच्छा, विनय।
आराइश—सजावट।
आरिज़—कपोल।
आलम—प्रसार, दशा।
आलिम—विद्वान।
आलूदगी—उत्पथ होना।
आशना—प्रेमी, मित्र।
आशिक—प्रेमी, अनुरक्त।
आशियाना—पक्षीका घोसला।
आशुफ्तगी—विकल, घबराया हुआ।
आश्कार—प्रत्यक्ष, स्पष्ट।
आसाइश—सुख, आनन्द।
आसी—पापी, अपराधी।
आसूदा—सुखी, वेफिक्र।
आस्तान—डयोढी-प्रवेशद्वार।
आहग—विचार, इरादा।
आह—कष्टसूचक नि श्वास।
आहन—लोहा।
आहू—हिरन।

इ

इकबाल—भाग्य, स्वीकार।
इकरार—वादा।
इक्तफा—यथेष्ट, काफी।
इख़लास—मित्रता।
इख़्तलाफ—मतभेद, अनबन।
इख़्तयार—अधिकार।
इख़्फ़ा—अप्रकट।
इगलाम—लौंडेबाजी।
इग़वा—बहकाना।
इजतनाब—सयम, बचना।
इजतमाअ—जमा होना, इकट्ठा होना।
इज़तराब—विकलता।
इज़दहाम—जन-समूह।
इज़हार—बयान।
इजाबत—स्वीकृति, मलत्याग।
इज़ार—पाजामा।
इताब—कोप।
इत्तहाद—एकता।
इदबार—दुर्भाग्य।
इदराक—समझ।
इनहसार—निर्भर।
इन्कलाब—क्रान्ति।
इन्कसार—नम्रता, दीनता।
इन्तकाम—प्रतिशोध।
इन्तकाल—मृत्यु।
इन्तखाब—चुनाव।
इन्तहा—चरमसीमा।

इन्शाअल्लाह्-ताला—यदि ईश्वरने चाहा तो।
इन्शापरदाज़ी—लेखन-कला।
इफरात—अधिकता।
इफलास—दरिद्रता।
इफाक़ा—रोग आदिमें कमी होना।
इबरत—नसीहत।
इबलीस—शैतान।
इबादत—उपासना।
इब्तदा—प्रारम्भ।
इमकान—सम्भावना।
इमाम—धार्मिक नेता जिसके पीछे लोग नमाज़ पढ़ें।
इम्तियाज़—बुरे भलेकी परख।
इरम—स्वर्ग।
इरशाद—हुक्म।
इलहाम—देववाणी।
इलाही—ईश्वर।
इल्तजा—निवेदन।
इल्तमास—प्रार्थना।
इल्लत—बुरी आदत, कारण।
इशरत—सुख-भोग।
इशवा—चोचला-अदा।
इशाअत—प्रकाशन।
इश्क़—प्रेम, चाह।
इश्तिआल—भडकाना।
इश्तियाक—अनुराग।
इसरार—आग्रह।
इसियाँ—अपराध।
इस्तक़बाल—स्वागत।
इस्तकलाल—दृढता।
इस्म—नाम।
इस्लाम—सशोधन, एक मज़हम।

ई

ईज़ा—कष्ट, पीडा।
ईजाद—आविष्कार।
ईमा—सकेत, इशारा।

उ ऊ

उकबा—परलोक।
उक़ाब—गिद्धपक्षी।
उक्दा—कठिन समस्या।
उजरत—एवज़, मज़दूरी।
उजलत—जल्दी।
उज़लत—एकान्त।
उज्र—बाधा, विरोध।
उदू—प्रतिद्वन्द्वी।
उन्का—एक कल्पित पक्षी, नायाब।
उन्स—प्यार।
उफ—कष्ट-सूचक।
उफक़—आस्मान, क्षितिज।
उफतादा—गिरा-पडा।
उरियाँ—नग्न।
उरूज—विकास।
उरूस—वधू।
उश्शाक—प्रेमियो।
उस्तख्वाँ—हड्डी।

ए

एतक़ाद—विश्वास, श्रद्धा।
एतनाई—लापरवाही।
एतबार—विश्वास।
एतमाद—भरोसा।

एतराफ–इकरार करना।
एहतमाम–व्यवस्था, देखरेख।
एहतराज–बचना।
एहतराम–सम्मान।
एहतियाज–आवश्यकता होना।
एहतियात–परहेज़ करना, बचना।
एहसान–कृतज्ञता, उपकार।
एहसान-फरामोश–कृतघ्न।
एहसास–अनुभव करना।

ऐ

ऐजाज़–करामात, मोअजिज़ा।
ऐजाज़–सम्मान-आदर।
ऐन–उपयुक्त-ठीक।
ऐबजोई–दूसरोका दोष ढूंढना।
ऐयार–धूर्त।
ऐयाश–कामुक।
ऐश–भोग-विलास।

ओ औ

औकात–हैसियत।
औज–ऊँचाई, ऊंचापद।
औसाफ–गुण।

क

कज–टेढापन।
कज़ा–मौत।
कजिया–झगडा।
कज़्ज़ाक–लुटेरा।
कतील–कत्ल किया हुआ।
कत्ताल–वधिक।
कत्लगाह–वध स्थल।
कद–मकान, प्रारम्भ।
कद–ऊँचाई।
क़द्र–इज्ज़त, सत्कार।
कदह–प्याला।
कदामत–प्राचीनता।
कदीर–शक्तिशाली।
कदूरत–मन-मुटाव।
कनाअत–सन्तोष।
कनीज़–दासी।
कफस–पिंजरा।
कफ्फारा–प्रायश्चित्त।
कबा–लम्बा ढीला पहनावा।
कबाहत–दिक्कत।
कब्क–चकोरपक्षी।
कम-ज़र्फ–कमीना, ओछा।
कमर–शरीरका मध्म भाग।
क़मर–चन्द्रमा।
कमसिन–अल्पवयस्क।
कयाफा–सूरत, शक्ल।
कयामत–प्रलय।
कयास–अनुमान।
करम–कृपा।
क़रार–प्रतिज्ञा, धीरज।
करश्मा–अद्भुत कार्य।
करीना–सलीका।
करीम–दयालु।
करीह–घृणित।
कर्ज–गुर्जिस्तानी कौम।
कर्ज़–ऋण।
कलमा–इस्लाम धर्मका मूलमन्त्र।
कलाम–वाक्य।

कलीम—हज़रत मूसा।
क़लील—थोड़ा।
कलीसा—गिरजा घर।
क़ल्ब—हृदय।
क़वी—बलवान।
कश—आकर्षक, खींचनेवाला। जैसे दिलकश।
कसीर—बहुत अधिक।
क़स्द—इरादा।
क़स्दन—इच्छापूर्वक।
कह-कशाँ—आकाश-गंगा।
कहत—दुर्भिक्ष।
कहर—आफत, विपत्ति।
काकुल—जुल्फें।
क़ाज़ी—न्यायाधीश।
कातिल—वधिक।
काफिर—नास्तिक।
क़ाफिला—यात्री-समूह।
काबा—मुस्लिम-तीर्थ।
क़ामत—कद।
कामराँ—सफल।
कामिल—योग्य।
कायनात—विश्व, मूल्य।
कार—काम।
कारवाँ—यात्री-दल।
कारी—प्रभावशाली।
क़ारी—पढ़नेवाला।
काहूँ—कजूस धनी।
काल—शेखी, बहश।
कालिब—शरीर।
काविश—खोज, वैर।
काश—ईश्वर करे ऐसा हो जाय।
क़ाश—फाँक।
काशाना—मकान।
कासा—प्याला।
कासिद—पत्र-वाहक।
क़ासिर—असमर्थ।
काह—सूखी घास।
काहिल—आलसी।
कनाया—संकेत।
किबला—मक्का तीर्थ, पूज्य।
किश्ती—नौका।
क़िस्त—कई वार करके ऋण चुकाने-का ढंग।
कीना—शत्रुता।
कुंज—कोना।
कुजा—कहाँ।
कुफ्र—नास्तिकता।
कुफ़्ल—ताला।
कुमक—सहायता।
क़ुमरी—एक चिड़िया।
कुरबान—न्योछावर।
कुर्ब—सामीप्य।
कुर्रम—वेश्याओंका दलाल।
कुलफत—चिन्ता।
कुल्लियात—कृतियोंका संग्रह।
कूए—गली-कूचा।
कूज़ा—कुल्हड़।
कोताह—छोटा।
कोफ्त—पीड़ा।
कोह—पर्वत।
कोहकन—पहाड़ काटनेवाला, फरहाद।
कोहराम—रोना-पीटना।
कौकब—बड़ा और चमकीला तारा।

कौनैन—इहलोक, परलोक।
कौल—प्रण, वादा।
कौसर—जन्नतमे शराबकी नहर।

ख

खता—अपराध।
खत्म—समाप्त।
खदंग—तीर।
खदशा—आशंका।
खन्दा—हास्य।
खन्दाँ—हँसमुख।
खफ़क़ान—पागलपन।
खफीफ—थोडा, कम।
ख़बीस—दुष्ट, कजूस।
ख़म—टेढापन।
खमियाजा—परिणाम।
खमीदा—झुका हुआ।
खर—गधा।
खरख़शा—झंझट, आशंका।
खराबात—मधुशाला, ससार।
खराश—खरोंच।
खरास—चक्की।
खरीता—बडा लिफाफा।
खरोश—आवेश, उत्साह।
खलफ—लडका।
खलल—पागलपन, खराबी।
खला—खाली स्थान।
खलिश—कसक, पीडा।
खलीक—सुशील-मिलनसार।
खलीता—थैली, जेब।
खलील—सच्चा मित्र।
खल्क—मानव जाति।
ख़सीस—कृपण।
ख़ाकसार—सेवक।
ख़ातून—भद्र महिला।
ख़ादिम—सेवक।
ख़ानए-ख़ुदा—मस्जिद।
ख़ानकाह—फकीरोका मठ।
ख़ानगी—घरेलू।
ख़ाम-ख़याली—व्यर्थके विचार।
ख़ायफ—भयभीत।
ख़ार—काँटा।
ख़ाल—मुखका तिल।
ख़ालिक—ईश्वर।
ख़ालिस—शुद्ध।
ख़िज़ाँ—पतझड, ह्रास।
ख़िज्र—मार्ग-दर्शक।
ख़िरद—बुद्धि।
ख़िराम—मस्तानी चाल।
ख़िलवत—एकान्त।
ख़िल्कत—जनसमूह।
ख़िश्त—ईंट।
ख़ुद-कुशी—आत्महत्या।
ख़ुदबीं—घमण्डी।
ख़ुदा-हाफिज़—ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।
ख़ुदी—अहभाव।
ख़ुम—मद्य रखनेका पात्र, घडा।
ख़ुम-कदा—मधुशाला।
ख़ुम-ख़ाना—मद्यालय।
ख़ुमार—मस्ती, शरीरका टूटना।
ख़ुमार-आलूदा—खुमारसे भरी हुई।
ख़ुरशीद—सूर्य्य।
ख़ुर्रम—ख़ुश।

खुलूस–सरलता, निष्ठा, स्नेह ।
खुल्द–स्वर्ग ।
खुसरवाना–राजकीय ।
खू–स्वभाव ।
खूगार–अभ्यस्त ।
खूबाँ–सुन्दरियाँ ।
ख्वाब–स्वप्न ।
ख्वार–खानेवाला, खराब ।
ख्वाह–इच्छुक, चाहे, या, तो ।

ग

गज–कोश ।
गदा–भिक्षुक ।
गनी–बहुत बड़ा धनी ।
गनीम–शत्रु ।
गम–दु ख, शोक ।
गमकदा–शोकसन्तप्त घर ।
गमगीं–उदास ।
गमगुसार–दूसरोका दु ख दूर करनेवाला ।
गमजदा–दु खी ।
गमजा–हाव-भाव ।
गम्माज–निन्दक ।
गय्यूर–ईर्ष्यालु, आन रखनेवाला ।
गरक़ाब–डूबा हुआ ।
गरज–मतलब, स्वार्थ ।
गराँ–भारी, महँगा ।
गरीबनवाज–दीन-पालक ।
गरीबपरवर–दीन दुखियोका सहायक ।
गरूर–घमण्ड ।
गरेबान–कुरतेका गला ।
गर्क–डूबा हुआ ।
गर्द–धूल ।
गर्दिश–विपत्ति ।
गर्रा–घमण्ड, शेखी ।
गलबा–प्रमुखता, प्रभावका आधिक्य ।
गवारा–अनुकूल ।
गश–बेहोशी ।
गहवारा–हिंडोला ।
गाजा–पाउडर ।
गाफिल–बेसुध, असावधान ।
गार–करनेवाला, कर्त्ता, जैसे—सितमगार, गुनाहगार ।
गालिब–बलवान, विजयी ।
गाह–जगह ।
गाह-गाह–कभी-कभी ।
गिरदाब–पानीका भँवर ।
गिरिया–रोना-धोना ।
गिला–शिकायत ।
गीर–पकडने या रखनेवाला जैसे—जहाँगीर, आलमगीर ।
गुजर–पहुँच, कालक्षेप ।
गुजश्ता–बीता हुआ, गत ।
गुजारिश–निवेदन ।
गुनाह–पाप ।
गुनहगार–अपराधी, पापी ।
गुफ़्तार–बातचीत ।
गुम–खोया हुआ ।
गुमराह–भूला-भटका ।
गुरबत–मुसाफिरी ।
गुरबा–गरीब ।
गुरबा–बिल्ली ।
गुरूब–अस्त होना ।

गुरेज़—दूर रहना, बचना।
गुर्ग—भेडिया।
गुल—फूल।
गुल—शोर, हल्ला।
गुलख़न—भट्टी, अगीठी।
गुल-गश्त—बागमे सैर करना।
गुलगूँ—गुलाबी।
गुलचीं—फूल चुननेवाला।
गुलज़ार—बाग।
गुलदुम—बुलबुल।
गुलफाम—फूल-जैसा सुन्दर।
गुलरू—बहुत सुन्दर।
गुलशन—बाग।
गुलिस्ताँ—वाटिका।
गुलू—गला।
गुसार—दूर करनेवाला, गम खानेवाला, सहन करनेवाला जैसे—गम-गुसार।
गुस्ल—स्नान।
गुहर—मोती।
गेती—ससार।
गेसू—बालोकी लट।
गैब—परोक्ष।
गैर—अन्य।
गैरत—लज्जा।
गोर—कब्र।
गोरिस्तान—कब्रिस्तान।
गोशा—कोना।
गोहर—मोती।

च

चख़—लडाई, शोर।
चनार—एक पेड।
चमन—फुलवारी।
चर्ख़—आकाश।
चश्म—नेत्र।
चाक—फटा हुआ।
चाह—कुआँ।
चाहे-ज़नख़दाँ—ठोडीका गड्ढा।
चिक—तीलियोंसे बना परदा।
चिलमन—परदा, चिक।
चीं—चेहरेकी शिकन।
चुगद—उल्लू।

ज

जंग—लडाई।
जंग—लोहेपर लगनेवाला मैल।
ज़ईफ—वृद्ध।
ज़क़न—ठुड्डी।
ज़कात--दान।
जज़ा—बदला।
जद—दादा।
ज़द—लक्ष्य
जदीद—नवीन।
ज़न—औरत।
जनाज़ा—शव, अर्थी।
जनून—उन्माद।
जन्नत—स्वर्ग।
जफर—यत्रकला।
ज़फर—विजय।
जफा—अत्याचार।
जफा-कश—सहिष्णु।
जफाशिआर—अत्याचारी।
ज़बर—बलवान।
ज़बह—गला काटकर मारना।

जबान—जीभ।
जबीं—मस्तक।
जब्र—बल-प्रयोग।
जम-जम—काबेका पवित्र कुआँ।
जमाल—सौन्दर्य।
जमील—सुन्दर।
जर—धन-दौलत।
जरर—चोट।
जराफत—परिहास।
जरीफ—मसखरा, चतुर।
जरी—वीर।
जरी—सोनेके तारका काम।
जर्द—पीला।
जर्फ—पात्र, समाई।
जर्रा—अणु।
जलाल—तेज।
जलील—बहुत प्रतिष्ठित।
जलील—अपमानित, तुच्छ।
जलवा—शोभा, रोशनी।
जवाल—पतन।
जश्न—उत्सव।
जसारत—साहस।
जहन्नुम—नरक।
जहमत—बखेडा, आफत।
जहाँ—ससार।
जहान—ससार।
जहूर—प्रकट होना।
जहे-क़िस्मत—धन्यभाग्य।
जाँनवाज—दयालु, कृपालु।
जाँ-ब-लब—मरणोन्मुख।
जाँबाज—जानपर खेलनेवाला।
जा—स्थान।
जाम—प्याला।
जारी—प्रवाहित।
जारी—रुदन।
जाविदाँ—हमेशा।
जाहिद—सब दुष्कर्मोंसे बचकर ईश्वरका उपासक।
जाहिल—मूर्ख, अज्ञान।
जिना—व्यभिचार।
जिन्दाँ—बन्दीगृह।
जियाँ—हानि, टोटा।
जियारत—तीर्थ-दर्शन।
जिरह—हुज्जत, बहस।
जिरह—कवच।
जिला—चमक।
जिलेदार—जिलेका अफसर।
जिस्म—शरीर।
जीनत—शोभा।
जिनहार—कदापि।
जीना—सीढी।
जीना—जीवित रहना।
जीस्त—जीवन।
जुज—खड, टुकडा, अतिरिक्त।
जुन्नार—जनेऊ।
जुरअत—साहस।
जुर्म—अपराध।
जुल्म—अत्याचार।
जुल्मत—अँधेरा।
जुल्म-रसीदा—अत्याचार-पीडित।
जुस्तजू—तलाश।
जुहद—परहेजगारी।
जू—जलाशय।
जू—चमक, प्रकाश।

जूए—दरिया, नहर।
जूक़—भीड।
जूद—जल्दी।
जेब—पाकेट।
जेब—उपयुक्त, शोभायमान।
ज़ेर—नीचे।
जेहल—नादानी।
जेहाद—धर्म-युद्ध।
जेहालत—मूर्खता।
जोफ—अवकाश, गड्ढा।
जोफ—दुर्बलता, मूर्च्छा।
जोया—खोजी।
जोर—बल।
जौक़—प्रसन्नता, शौक।
जौर—अत्याचार।

त

तञ्ज—तअना (ताना)।
तअस्सुब—पक्षपात।
तक़दीर—भाग्य।
तकब्बुर—अभिमान।
तकमील—पूर्णता।
तकलीद—अनुकरण।
तकवा—परहेजगारी।
तकी—धर्मनिष्ठ, ईश्वरसे डरनेवाला।
तखलिया—एकान्त।
तखल्लुस—उपनाम।
तखैयुल—विचार।
तगय्युर—बहुत बडा परिवर्त्तन।
तग़ाफुल—उपेक्षा।
तजदीद—नवीनता।
तजल्ली—चमक-दमक।
तजस्सुस—तलाश।
तजाहुल—जानबूझकर अनजान बनना।
तनज्जुल—ह्रास, ज़वाल।
तनफ्फुर—नफरत।
तनहा—एकाकी।
तन्नाज—नाज़-नखरा करनेवाला।
तपिश—गरमी।
तबस्सुम—मन्दहास।
तबीब—वैद्य।
तमकनत—शान-शौकत, घमंड।
तमद्दुन—सभ्यता, संस्कृति।
तमन्ना—कामना।
तमसील—उपमा।
तमहीद—भूमिका।
तमा (तमअ)—चाह, इच्छा।
तम्बीह—नसीहत।
तरगीब—उत्तेजन।
तरजीह—प्रधानता देना।
तरदीद—प्रत्युत्तर।
तरब—प्रसन्नता।
तरमीम—संशोधन।
तलातुम—समुद्रकी बडी तरंगे।
तल्ख—कडवा।
तवंगर—सम्पन्न।
तवक्कुफ—विलम्ब।
तवाफ—प्रदक्षिणा।
तवारीख—इतिहास।
तवालत—बखेडा।
तशखीस—रोगका निदान।
तशफ्फी—सन्तोष।
तशबीह—उपमा।
तशरीह—टीका, भाष्य, व्याख्या।

तशवीश—परेशानी।
तसद्दुक—न्योछावर करना।
तसरीह—व्याख्या।
तसव्वुफ—सूफियोंका धर्म।
तसव्वुर—ध्यान।
तस्बीह—माला, सुमरन।
तस्लीम—स्वीकार करना।
तहक़ीर—अपमान।
तहज़ीब—भलमनसाहत।
तहम्मुल—सहनशीलता।
तहरीक—आन्दोलन।
तहसीन—सराहना।
तहैयुर—अचरज।
तहो-बाला—उल्टा-पलटा, विनिष्ट।
ताअत—सेवा, इबादत।
ताख़ीर—विलम्ब।
ताम्मुल—असमंजस।
तायर—पक्षी।
तारी—प्रकट होना।
तारीक—अन्धकार।
तालिब—चाहनेवाला।
तावान—दण्ड।
तासीर—असर।
ताहिर—पवित्र।
तिफ्ल—बालक।
तिश्ना—प्यास।
तीरगी—अन्धकार।
तुग़यानी—नदीकी बाढ़।
तुन्द—उग्र, कड़वा।
तुपक—तोप।
तुफंग—बन्दूक।
तुरबत—कब्र।
तूती—एक चिड़िया।
तूर—शाम देशका एक पर्वत। कहते हैं इसी पर्वतपर हज़रत मूसाको दिव्य प्रकाश दिखाई दिया था।
तूलानी—लम्बा।
तेग़—तलवार।
तेज़—तीव्र, महँगा, फुर्तीला।
तेशा—बसूला नामक औज़ार।
तैश—आवेश।
तौबा—प्रतिज्ञा।
तोहफा—उपहार।
तोहमत—झूठा कलंक।
तौक़ीर—प्रतिष्ठा।
तौफीक़—सामर्थ्य।

द

दकीक—कठिन, मुश्किल।
दन्दाँ—दाँत।
दफ्न—गाड़ना।
दबिस्ताँ—पाठशाला।
दमामा—नगाड़ा।
दयानत—ईमान।
दयार—प्रदेश।
दर—द्वार।
दरख़शाँ—चमकीला।
दरबान—द्वारपाल।
दरमाँ—इलाज।
दरवेश—फकीर।
दराज़—लम्बा।
दरिन्दा—फाड़ खानेवाला जानवर।
दरेग़—दुःख, कमी, पश्चाताप।
दरोग़—झूठ।

दर्ज—लिखित।
दर्ज़—दरार।
दवाम—सदैव।
दश्त-नवर्दी—जगलोमे मारे-मारे फिरना।
दस्त—हाथ, पतला पायखाना।
दस्तार—पगडी।
दहन—मुख।
दहर—ज़माना, समय।
दहलीज़—देहली।
दहशत—भय।
दाद—इन्साफ, प्रशसा।
दाम-जाल।
दामन—कुरते आदिके नीचेका हिस्सा।
दार—सूली, रखनेवाला जैसे ईमान-दार, वफादार।
दावर—न्यायकर्त्ता।
दिल-आज़ार—अत्याचारी।
दिल-कश—लुभावना।
दिल-ख़राश—दिलको चोट पहुँचाने-वाला।
दिल-गीर—उदास, दु खी।
दीद—देखा-देखी।
दीदार—दर्शन।
दीवान—गज़लोका सग्रह।
दुख़्तर—पुत्री।
दुख़्तरे-रज़—शराब।
दुर—मोती।
दुश्नाम—दुर्वचन।
दूद—धुआं।
दैर—मन्दिर।
दोज़ख़—नरक।
दोश—कन्धा।
दोशीज़ा—कुँवारी।

न

नग—लज्जा, कलक।
न—नही।
नईम—स्वर्ग, दुलार।
नकहत—सुगन्धि।
नकाहत—निर्बलता।
नकीब—चारण।
नक़्श—अकित।
नख़चीर—शिकार।
नख़वत—घमड, शेखी।
नख़्ल—वृक्ष।
नग्मा—मधुर-स्वर।
नज़अ्—मृत्यु-समय साँस तोडना।
नजात—छुटकारा।
नजाबत—सज्जनता।
नज्म—सितारा।
नज़्म—कविता।
नदामत—शरमिन्दगी।
नदीम—साथी।
नफ़ासत—उम्दगी।
नफ़स—आत्म, कामवासना।
नबर्द—युद्ध।
नबी—ईश्वरीय दूत।
नम—गीला, तर।
नवा—सगीत, स्वर।
नवाज़—दया करनेवाला जैसे—ग़रीब नवाज़, बन्दा-नवाज़।
नवाज़िश—कृपा।

नशिस्तगाह—बैठनेका स्थान ।
नशेमन—घोसला, घर ।
नसीम—सुगन्वित वायु ।
ना-अहल—अयोग्य ।
नाकिस—अपूर्ण,बुरा ।
नाकूस—शख ।
नाखुदा—नाविक ।
नागहाँ—अचानक ।
नाचार—मजबूर ।
नाज़—नखरा, गर्व ।
नाजनीं—सुन्दरी ।
नाज व नियाज़—चोचला, नाज़-नखरा ।
नाजाँ—अभिमानी, गर्वीला ।
नाज़िल—गिरनेवाला ।
नाजिश—अभिमान
नाजुक-अन्दाम—नाजुक बदनवाला ।
ना-तमाम—अधूरा ।
ना-तवाँ—दुर्बल ।
नातिक—बोलनेवाला ।
नातिका—वाक्-शक्ति ।
नादान—मूर्ख ।
नादार—दरिद्र ।
नादिम—लज्जित ।
नादिर—अनोखा, दुष्प्राप्य ।
ना-दहिन्द—ऋण न चुकानेवाला ।
नाने-जवीं—जौकी रोटी ।
नाफ—नाभि ।
ना-फहम—नासमझ ।
नाफिज—जारी होनेवाला ।
ना-ब-कार—अयोग्य, कुकर्मी ।
नाबूद—नष्ट होनेवाला ।
नामा—पत्र, पुस्तक ।
नामावर—पत्र-वाहक ।
नामुराद—बदकिस्मत ।
नामूस—प्रतिष्ठा, लज्जा ।
नामूसी—बदनामी ।
नायाब—बहुत बढिया ।
नार—आग ।
ना-रवा—अनुचित ।
नालाँ—रोनेवाला, रोकर फरियाद करनेवाला ।
नाला—रोना-धोना वा तैला ।
नाश—लाश ।
ना शाइस्ता—असभ्य, अनुचित ।
ना-शाद—अप्रसन्न, दु खी ।
ना-शिकेब—अधीर, विकल ।
ना-सबूर—बेचैन ।
नासाज—अस्वस्थ, विरोधी ।
नासिख—लेखक, मिटानेवाला ।
नासेह—उपदेशक,नसीहत देनेवाला ।
नाहजार—दुश्चरित्र, पाजी ।
निगहबान—देख-रेख रखनेवाला ।
निगार—लिखने या बेल-बूटे बनानेवाला । जैसे नामा-निगार ।
निगूँ—नत, झुका हुआ । जैसे—सर-निगूँ ।
निजाम—व्यवस्था ।
निफाक—विरोध ।
नियाज—नम्रता ।
नियामत—दुर्लभ ।
निशात—सुख-भोग ।
निसवाँ—महिलाएँ ।
निसार—निछावर ।

निसियाँ—भूलना, याद न रखना।
निस्फ—आधा
निहंग—घड़ियाल, मगर।
निहाँ—छिपा हुआ।
निहानी—छिपा हुआ।
नीज़—और भी।
नीम—अर्द्ध।
नीमजाँ—अधमरा।
नुक्ताचीं—छिद्रान्वेषी।
नुक़्स—दोष, त्रुटि।
नुत्क—वाक्-शक्ति।
नुत्फा—वीर्य, सन्तान।
नुदरत—अनोखापन।
नुमा—दिखाई पडनेवाला, जैसे बद-नुमा, खुश-नुमा, दिखलानेवाला, जैसे रह-नुमा। सदृश, जैसे गुम्बद-नुमा।
नुमायाँ—प्रकट।
नूर—प्रकाश।
नूरानी—प्रकाशमान।
नूरेचश्म—नेत्रोंका प्रकाश, पुत्र।
नूह—एक पैगम्बर।
नेस्त-नाबूद—नष्ट-भ्रष्ट।
नैयर—चमकदार सितारा।
नैरंग—धोखा, इन्द्रजाल।
नोश—पीनेवाला, जैसे मैनोश—शराब पीनेवाला, पियो।
नौ—नया।
नौअ—प्रकार, किस्म।
नौ-खेज़—नवयुवक।
नौ-निहाल—नया पौधा, नौजवान।
नौबत—दशा, मंगलसूचक वाद्य।
नौ-ब-नौ—बिलकुल नया।
नौहा—रुदन।
नौहागर—शोक मनानेवाला।

प

पंज—पाँच।
पज़मुरदा—मुरझाया हुआ।
पज़ीर—माननेवाला, पालनकरने-वाला। जैसे—इताअत पज़ीर।
पनाह—रक्षा, आश्रय।
पयाम—सन्देश।
पयाम-बर—सन्देश-वाहक।
परख़ाश—लडाई-झगडा।
परचम—झण्डा।
परतौ—किरण, अक्स।
परवर—पालन करनेवाला, जैसे—बन्दा-परवर, मनुष्योंकी परवरिश करनेवाला।
परवाज़—उडना।
परवाना—पतंगा, आज्ञा-पत्र।
परस्त—पूजा करनेवाला, जैसे—आतिश-परस्त, हुस्न-परस्त।
परस्तिश—उपासना।
परिस्तान—परियोंका निवासस्थान।
परी-पैकर—परीके समान देह वाला।
परी-रू—परीके समान मुख-वाला।
परीवश—परीके समान, सुन्दर।
पलीद—अशुद्ध, दुष्ट।
पशेमान—शरमिन्दा।
पस—पीछे।

पस-पा—पीछे हटनेवाला।
पस्त—हारा हुआ, नीचा।
पहलू-तही—ध्यान न देना।
पाक—पवित्र।
पामाल—कुचला हुआ।
पारसा—सदाचारी।
पाश—टुकडा, खड।
पास—लिहाज़, नज़दीक।
पासबान—पहरेदार, रक्षक।
पिनहाँ—छिपा हुआ।
पिन्दार—बुद्धि, घमण्ड।
पिसर—पुत्र।
पिस्ताँ—स्तन (पिस्तान)।
पीर—वृद्ध, सिद्ध।
पुर—पूर्ण भरा हुआ।
पुरसाँ—पूछनेवाला।
पुरसिश—पूछना।
पुर्स—पूछनेवाला।
पुश्त—पीठ।
पेचाँ—पेचीदा, घुमावदार।
पेश-कब्ज—कटार।
पेशानी—मस्तक।
पैकर—चेहरा, देह।
पैकान—तीर (पैकाँ)।
पैग़ाम—सन्देश।
पैमान—वादा।
पैमाना—मापनेका यन्त्र, मधुपात्र।
पैरहन—लिबास।
पैहम—लगातार।
पोशीदा—छिपा हुआ।
पोशिश—पोशाक।
प्यादा—हरकारा।

फ

फक्क—भय आदिके कारण चेहरा म्लान हो जाना।
फक़त—केवल।
फक्र—दीनता, साधुता।
फख्र—अभिमान, गर्व।
फजर—सवेरा।
फज़ा—खुला हुआ क्षेत्र, शोभा।
फजीलत—बडप्पन, श्रेष्ठता।
फ़जीह—बदनाम करनेवाला।
फजीहत—बदनामी, दुर्दशा।
फजूल—व्यर्थ।
फज्ल—कृपा, जैसे—फज्ले-इलाही, ईश्वरकी कृपा।
फतवा—मौलवी आदि किसी कर्म आदिके सम्बन्धमें जो व्यवस्था देते है।
फतह—विजय।
फतूर—विकार, उपद्रव।
फन—गुण, खबी, करतब।
फना—नाश, बरबादी।
फन्द—छल-कपट।
फर—चमक-दमक, शोभा जैसे—कर्र-ओ-फर, शान-शौकत।
फरक—भेद, अलगाव।
फरदा—आनेवाला दिन।
फरबा—स्थूल शरीरवाला।
फरमाबरदार—आज्ञाकारी।
फरमाइश—अनुरोध, आज्ञा।
फरमान—आज्ञा-पत्र।
फरमाना—कहना।

फरसूदा—बहुत पुराना, शिथिल, दुर्दशा-ग्रस्त।
फरहत—प्रसन्नता।
फरहत बख्श—सुखद।
फरहाद—फारसका एक प्रसिद्ध प्रेमी।
फराख—विशाल, बडा।
फराग—फुरसत, बे फिकरी।
फरागत—छुटकारा, बेफिकरी।
फराज—उच्च।
नशेबो-फराज—ऊँच-नीच।
फरामोश—विस्मृत, जैसे—अहसान-फरामोश।
फरायज—कर्तव्य।
फरार—भागा हुआ।
फराहम—इकटठा।
फरियाद—प्रार्थना, पुकार।
फरियाद-रस—फरियाद सुनकर दुःख दूर करनेवाला।
फरिश्ता—देवता।
फरेफ्ता—आसक्त,धोखा खानेवाला।
फरेब—छल-कपट।
फरेब-दिही—धोखा देना।
फरोख्त—बिक्री।
फरोश—बेचनेवाला, जैसे—मेवा-फरोश—मेवा बेचनेवाला।
फर्जा—दरार, भग।
फर्ज—फरायज, कर्तव्य-कर्म विल-फर्ज़-मान लो कि।
फलक—आकाश।
फसाना—किस्सा, विवरण।
फसाहत—सुन्दर ढगसे बोलनेकी शक्ति।
फसील—परकोटा।
फसीह—सुवक्ता।
फसूं—जादू-टोना।
फसूंगर—मुग्ध करनेवाला, जादूगर।
फस्लेबहार—बसत-ऋतु।
फहम—समझ, जैसे—सुखनहफम-कलामको समझनेवाला।
फहश—फूहड, अश्लील।
फहीम—समझदार।
फाका—निराहार रहना।
फाख्ता—एक चिडियाका नाम।
फाजिल—ज्यादा, बुद्धिमान।
फातिहा—प्रार्थना, कब्रपर फातिहा पढना।
फानी—नश्वर।
फाम—रग, जैसे सियह फाम—काला-रग।
फायक—श्रेष्ट, उच्च।
फायज—विजयी, प्राप्त करनेवाला।
फाश—स्पष्ट, प्रकट,
फाहिश—निर्लज्ज, बेईमान, दुश्च-रित्र।
फाहिशा—दुश्चरित्रा।
फिगार—घायल।
फिजा—मैदान, शोभा, वातावरण।
फितना—लडाई-झगडा, मानसका विशेषण।
फितरत—स्वभाव चालाकी।
फिदवी—स्वामीभक्त।
फिरऔन—अन्यायी, मिस्रका राज अत्याचारी राजा।
फिरका—सम्प्रदाय।

फिरदौस—स्वर्ग।
फिराक़—विछोह, वियोग।
फिराग़—बरतन, चौड़ा, बोझको बोरी।
फिल-फौर—तुरन्त।
फिल-बदीह—तत्काल।
फिशाँ—बरसाने या झाड़नेवाला, आतिश-फिशाँ—आग बरसानेवाला।
फ़ीरोज़—सुखी, विजयी।
फील—हाथी।
फ़ुग़ाँ—रोना, चिल्लाना।
फ़ुज़ूँ—बढ़ा हुआ।
फ़ुरक़त—जुदाई, वियोग।
फ़ैज़—उपकार, बड़ा लाभ।
फ़ैज़ेआम—लोकोपकार।
फ़ैयाज़ी—उदारता।
फ़ौक़ियत—उत्तमता, उच्चता।
फ़ौत—मौत।

ब

ब—एक उपसर्ग जो शब्दोंके पहले लगकर 'के साथ' 'से' 'पर' आदि अर्थ देता है, जैसे—ब-शौक-शौकसे।
बक़ा—अमरता, शाश्वत।
ब-क़ौल—किसीके कथनानुसार।
बख़्त—भाग्य।
बख़्श—प्रदान।
बख़्शिश—पुरस्कार, इनाम।
बजा—ठीक, दुरुस्त।
बजाय—किसीके बदलेमें।
ब-जुज़—सिवा, अतिरिक्त।
बज़्म—सभा, रंगस्थल।
बत्न—गर्भ, पेट।
बद—बुरा, जैसे बद-चलन बद-मआश।
बद-ख़्वाह—अशुभ चाहनेवाला।
बद-तर—अधिक बुरा।
बद-बख़्त—अभागा।
बन्दा—सेवक।
बन्दा-नवाज़—दीनदयालु।
बन्दा-परवर—दीनबन्धु।
बन्दी—क़ैदी।
बन्दी-ख़ाना—कारागार।
बयाबान—उजाड़, जंगल।
बर—ऊपर, जैसे—बरवक़्त—समय पर, ले जानेवाला, जैसे—नामा-बर, पत्रवाहक, लेनेवाली, जैसे—दिलबर-मोह लेनेवाली।
बर-गश्ता—फिरा हुआ, विरोधी।
बर-मला—सबके सामने, खुल्लम-खुल्ला।
बरहना—नंगा।
बर हम—क्रुद्ध।
बर्क़—बिजली।
बर्ग—वृक्षके पत्ते।
बलन्द—श्रेष्ठ, ऊँचा।
बला—आफ़त।
बलाग़त—अच्छी तरह बोलना, ज़बानी।
बशर—मनुष्य।
बशीर—खुशख़बरी देनेवाला सुन्दर मनुष्य।
बसर—दृष्टि, ज्ञान।

बहर—वास्ते । बहरे-खुदा=खुदाके वास्ते । बहरावर=उत्तीर्ण ।
बहर—महासागर, कविताका माप ।
बहा—मूल्य, बे-बहा=बहुमूल्य ।
बहार—वसन्त-ऋतु, आनन्द ।
बहिश्त—स्वर्ग ।
बाँग—आवाज़, शब्द जैसे—बाँगे-दरा=घण्टेकी आवाज़ ।
बाइस—सबब ।
बाग़—उपवन ।
बागबान—माली ।
बाज—महसूल ।
बाज़—एक पक्षी, कोई-कोई ।
बातिन—भीतरी भाग, मन ।
बातिल—व्यर्थ ।
बाद—पवन ।
बाद-कश—पखा, धौकनी ।
बादा—शराब ।
बादा-कश—शराबी ।
बादा-परस्त—मद्यप, शराबका पुजारी ।
बादे-सबा—पुरवा हवा ।
बान—रखवाली करनेवाला, जैसे—दरबान, निगहबान, रखनेवाला, हाँकनेवाला, जैसे—फीलबान, गाडीबान ।
बाम—घरकी छत, अटारी ।
बार—भार, परिणाम ।
बार-याबी—हाजिर होना ।
बार-हा—कई बार ।
बारां—वर्षा ।
बारी—ईश्वर ।
बाला—ऊपर ।
बाला-ख़ाना—ऊपरका कमरा ।
बावर—विश्वास ।
बा-वस्फ—गुणी ।
बाहम—परस्पर ।
बिल्-उमूम—आमतौरपर ।
बिल्-जब्र—बलपूर्वक ।
बिसात—समर्थ, शतरजका बोर्ड ।
बिस्मिल—घायल ।
बीं—दर्शक, जैसे बारीकबी=सूक्ष्म-दर्शी ।
बी—महिला ।
बीना—जिसे दिखाई देता हो, सुझाखा ।
बीनाई—दृष्टि ।
बीबी—पत्नी, कुलवधू ।
बीम—भय ।
बुख्ल—कृपणता ।
बुग़्ज़—भीतरी दुश्मनी ।
बुत—मूर्ति, प्रेयसी, चुप्पा ।
बुत-कदा—मन्दिर, प्रेयसीका स्थान ।
बुत-परस्त—मूर्तिपूजक ।
बुत-शिकन—मूर्ति-तोडक ।
बुल-हवस—लोभी, कामुक ।
बूदो-बाश—निवास ।
बूम—उल्लू पक्षी ।
बे-ख़ुद—बेहोश, ज्ञानशून्य ।
बेगानगी—परायापन ।
बेगाना—पराया, गैर ।
बेजा—अनुचित ।
बेताब—बेचैन ।
बेदार—जागता हुआ ।

बे-नज़ीर—अनुपम।
बे-नवा—दरिद्र, फकीर।
बे-नियाज़—लापरवाह, स्वच्छन्द, इच्छा रहित।
बे-बहा—बहुमूल्य।
बे-बाक—निर्भय।
बे-बाक़—चुकता किया हुआ।
बेश—श्रेष्ठ, ज्यादा।
बेहिस—बेहोश, मूर्च्छा।
बैअ—बेचनेकी क्रिया, जैसे मकान बै किया=बेचा।
बोसा—चुम्बन।
बोसीदा—सडा-गला, पुराना।
बोस्ताँ—वाटिका।
बोहतान—झूठा इलज़ाम।

म

मआरिज़—विरोध करनेवाला।
मआल—अन्त, परिणाम।
मआशरत—सामाजिक जीवन।
मकतब—विद्यालय।
मकतल—वधस्थान, प्रेमिकाका क्रीडा-क्षेत्र।
मकतूल—वध किया हुआ, प्रेमी।
मक़बरा—कब्र।
मकरूह—घृणित, गन्दा।
मक़सद—अभिप्राय।
मक्का—मुस्लिम तीर्थस्थान।
मखज़न—खज़ाना।
मख़दूम—मालिक, स्वामी।
मख़मूर—नशेमे चूर।
मख़लूक—सृष्टिके जीव।
मख़फ़ी—गुप्त, छिपा हुआ।
मख़सूस—विशिष्ट।
मग़फिरत—माफी।
मग़मूम—रंजीदा।
मगरिब—पश्चिम।
मग़रूर—गर्वीला।
मज़कूर—जिसका ज़िक्र हुआ हो।
मजनूं—प्रेममे उन्मत्त, क्षीण-शरीर।
मजमअ—(मजमा) भीड।
मजरूह—घायल।
मजलिस—सभा, जलसा।
मज़लूम—अत्याचार-पीडित।
मज़हका—उपहास।
मजाज़—नियमानुसार मिला हुआ अधिकार।
मजाज़ी—सासारिक।
मजाज़ी इश्क़—सासारिक-प्रेम।
मज़ार—कब्र।
मजीद—पवित्र, पूज्य, बडा।
मज़ीद—अधिकता, बढाया हुआ।
मतब—दवाखाना।
मतरूक—परित्यक्त, छोडा हुआ।
मतानत—दृढता।
मदफन—कब्र।
मदफ़ून—गाडा हुआ, छिपाकर रखा हुआ।
मदह—प्रशसा।
मद-होश—नशेमें चूर।
मदार—आधार, जैसे दारो-मदार।
मनज़र—दृश्य।
मनसब—ओहदा, अधिकार।

मनहूस—अशुभ।
मफहूम—समझा हुआ।
मफ्तून—अनुरक्त (मफ्तूं)।
मफ्तूह—विजित।
ममनून—कृतज्ञ।
मरकज़—केन्द्र।
मरकद—कब्र।
मरदूद—त्यक्त, एक गाली।
मरसिया—रोना-पीटना।
मरहबा—शाबाश।
मरहमत—दया, अनुग्रह।
मरहला—मंज़िल।
मरहून—जो बन्धक रखा गया।
मरहूम—मृतक।
मर्ग—मौत।
मलक-उल-मौत—यमराज।
मलज़ूम—जो ज़रूरी हो।
मलबूस—पोशाक।
मलामत—बुरा-भला कहना।
मलाल—रंज, अफसोस।
मलाहत—लावण्य, सौन्दर्य।
मलूल—चिन्तित।
मशगला—दिलबहलाव।
मशरिक—पूरब।
मश्क—सक्केकी मशक।
मश्क—अभ्यास।
मश्कूक—संदिग्ध।
मश्कूर—कृतज्ञ।
मसनूई—बनावटी।
मसरूर—प्रसन्न।
मसाइब—विपत्तियाँ।
मस्कन—घर।
मस्तूर—परदेमें छिपा हुआ, मस्तूरात=परदेमें रहनेवाली स्त्रियाँ।
मह—चन्द्रमा।
महज़र—घोषणापत्र।
महताब—चाँद।
महदूद—सीमित।
महफूज़—सुरक्षित।
महबूब—प्रेम-पात्र।
महमिल—ऊँटपर कसनेका कजावा जिसमें परदा डालकर स्त्रियाँ बैठती है।
महरम—हृदयकी बात जाननेवाला। अन्तरंग मित्र।
महरूम—वंचित, बदनसीब।
महलसरा—ज़नाना महल।
महवियत—आकर्षण,अनुरक्त होनेका भाव।
महशर—वह दिन जिसमें खुदा सबका न्याय करेगा।
माज़ी—भूतपूर्व, गत-कालका।
माज़ूर—असमर्थ।
मात—पराजय।
मातबर—विश्वसनीय।
मातम—शोक।
मातम-कदा—शोक-गृह।
मातमज़दा—शोकाक्रान्त।
मादूम—नष्ट, अस्तित्व रहित।
मानूस—हिला-मिला।
मान्दगी—रुग्णता।
मामूर—नियुक्त किया हुआ।
मायल—प्रवृत्त, रुजू।
मायूब—निन्दनीय।

मायूस—निराश।
मारूफ—प्रसिद्ध।
माशूक़—प्रेम-पात्र।
मा-सिवा—इसके सिवा।
मासूम—निरपराध।
माह—चन्द्रमा।
माह-जबीं—चन्द्रमुखी।
माहताव—चाँदनी।
माहरू—चाँदके समान।
माह-लका—चाँदके समान।
माहवश—चाँदके समान।
माहिर—अच्छा जानकर।
मिअयार—कसौटी।
मिजगाँ—पलकोके वाल।
मिज़राव—सितार वजानेवाला छल्ला।
मिज़ाज—स्वभाव।
मिनकार—चोंच।
मिम्बर—मस्जिदका वह चबूतरा जिसपर भाषण दिया जाय।
मियाँ—स्वामी, महाशय।
मिल्लत—मेल-मिलाप।
मिसवाक—दाँतौन।
मिस्कीन—दीन-दुखी।
मिस्मार—ढाया हुआ।
मिस्ल—तुल्य।
मीना—मद्य रखनेका पात्र।
मीआद—अवधि।
मीर—अमीरका संक्षिप्त रूप, सरदार, नेता।
मीरज़ा—अमीरज़ादेका संक्षिप्त रूप।
मीरास—उत्तराधिकारमें प्राप्त होनेवाली सम्पत्ति।
मुअज़्ज़म—परम प्रतिष्ठित।
मुअज़्ज़िन—मस्जिदमे अज़ान देनेवाला।
मुअतर—इत्रमे वसा हुआ।
मुअद्दिव—विनम्र।
मुअन्निस—स्त्रीलिंग, मादा।
मुअम्बर—अम्बरकी सुगन्धवाला।
मुअम्मर—वृद्ध।
मुअम्मा—पहेली, विचारणीय विषय समस्या।
मुअर्रा—नग्न, सरल।
मुअर्रिख—इतिहास-लेखक।
मुअल्ला—मान्य, प्रतिष्ठित।
मुअल्लिम—शिक्षक, उस्ताद।
मुअस्सिर—प्रभावशाली।
मुआलिजा—चिकित्सा।
मुआविन—सहायक।
मुआहिदा—करार, दृढ निश्चय।
मुआहिद—वायदा करनेवाला।
मुअय्यन—नियत, मुकर्रर किया हुआ।
मुकद्दर—गन्दा, क्षुब्ध।
मुक़द्दर—भाग्य।
मुक़द्दस—पवित्र।
मुकम्मल—पूर्ण।
मुकर्रव—घनिष्ठ-मित्र, मुसाहव।
मुकर्रम—प्रतिष्ठित।
मुकर्रर—दोबारा, फिरसे।
मुक़र्रर—निश्चित, नियुक्त।
मुकल्लिद—अनुयायी।
मुकाफात—पापोका फल।
मुक़िर—इकरार करनेवाला।
मुक़ीम—ठहरा हुआ।

मुक़ैयद–क़ैद किया हुआ।
मुक्क़ैश–जिसपर सोने चाँदीका तार चढा हो।
मुक्तदा–धार्मिक-आचार्य।
मुख़न्नस–नपुसक।
मुख़फ्फ़फ़–सक्षिप्त।
मुख़बिर–भेदिया, जासूस।
मुख़म्मस–पाॅच-पाँच चरणोकी कविता।
मुख़लिस–सच्चा, अविवाहित।
मुखालिफ–विरोधी, विपरीत।
मुख़िल–बाधक।
मुख़्तलिफ–भिन्न-भिन्न।
मुख़्तसर–सक्षिप्त।
मुग़न्नी–गायक।
मुग़ीलाँ–बबूल, खारे-मुगीलाँ= कीकरके काँटे।
मुज़क्कर–पुंलिग, नर।
मुज़तर–बेचैन, विकल।
मुजतरिब–बेचैन।
मुज़दा–शुभ-समाचार।
मुज़फ्फर–विजयी।
मुज़महिल–शिथिल-दुर्बल।
मुजरिम–अपराधी।
मुजर्रद–अविवाहित, एकाकी।
मुजर्रब–परीक्षित।
मुजस्सम–स-शरीर।
मुजाहिद–धार्मिक, योद्धा।
मुज़िर–हानिकारक।
मुतअ़ल्लिक–सम्बन्धित।
मुतअस्सिब–कट्टर, धर्मान्ध।
मुतआख़रीन–आधुनिक कालके।
मुतनफ़्फ़िर–घृणित।
मुतफन्नी–धूर्त, चालाक।
मुतबर्रक–पवित्र, शुभ।
मुतमइन–सन्तुष्ट।
मुतरिब–गायक।
मुतलाशी–ढूंडनेवाला।
मुतशाबह–मिलता-जुलता।
मुतीअ–आज्ञाकारी।
मुदाम–सदा, लगातार।
मुद्दआ–अभिप्राय।
मुनइम–दाता।
मुनकिर–नास्तिक।
मुनव्वर–प्रकाशमान।
मुनहसर–निर्भर, आश्रित।
मुनादी–ढिढोरा, घोपणा।
मुन्तख़ब–निर्वाचित।
मुन्तज़िर–प्रतीक्षा करनेवाला।
मुन्तशिर–विखरा हुआ।
मुफ़लिस–निर्धन।
मुफ़स्सल–ब्योरेवार।
मुबर्रा–निरपराध, साफ, अशुद्ध वस्तुओंसे अलग।
मुबहम–अस्पष्ट, सदिग्ध।
मुबादा–कही ऐसा न हो।
मुबारक–मगलप्रद, शुभ।
मुबालगा–अत्युक्ति, भ्रामक धारणा।
मुबाशरत–सम्भोग, मैथुन।
मुब्तला–फँसा हुआ, ग्रस्त।
मुमताज़–माननीय, प्रतिष्ठित।
मुमानअ़त–मनाही, वर्जन।
मुरत्तब–क्रमबद्ध।
मुरत्तिब–क्रमबद्ध करनेवाला।

मुरदन—मरना, मौत ।
मुरव्वत—भलमनसी ।
मुराद—मनोरथ ।
मुलज़िम—अभियुक्त ।
मुलहिद—अधर्मी ।
मुलूल—दु खी, रजीदा ।
मुल्तजी—प्रार्थी ।
मुल्तवी—स्थगित ।
मुवर्रिख़—इतिहास-लेखक ।
मुवहिद—एक ईश्वरवादी ।
मुशफ़िक़—प्रिय मित्र ।
मुशर्रफ़—प्रतिष्ठित ।
मुशाबह—समान आकारवाला, तुल्य ।
मुशायरा—कवि-सम्मेलन ।
मुशाहरा—वेतन ।
मुशाहिद—देखनेवाला ।
मुशीर—परामर्श देनेवाला ।
मुश्क—कस्तूरी ।
मुश्कें—भुजाएँ ।
मुश्त—हाथकी मुट्ठी ।
मुश्तइल—भडकानेवाला ।
मुश्तवह—जिसमें शक़ हो ।
मुश्तमिल—मिला हुआ ।
मुश्तरक—सम्मिलित ।
मुश्तरिक—हिस्सेदार ।
मुश्ताक़—वहुत अधिक इच्छा या कामना रखनेवाला ।
मुसद्दस—छ चरणकी कविता ।
मुसन्नफा—रचित, ग्रन्थ ।
मुसन्निफ—ग्रन्थकार, लेखक ।
मुसर्रत—प्रसन्नता, खुशी ।
मुसलसल—क्रमसे लगा हुआ ।
मुसल्लम—माना हुआ, पूरा ।
मुसल्लह—हथियारवन्द ।
मुसल्ला—नमाज़ पढनेकी चटाई या दरी ।
मुसव्विर—चित्रकार ।
मुसहफ—पृष्ठ, कुरान ।
मुस्तकिल—स्थायी, दृढ ।
मुस्तनद—जो सनद या प्रमाणके रूपमें माँगा जाय, प्रमाणित ।
मुस्तहक—पात्र, अधिकारी ।
मुहज्जव—सभ्य, शिष्ट ।
मुहतरम—मान्य, पूज्य ।
मुहतसिव—लोगोके आचरणोका परीक्षक ।
मुहताज—दरिद्र, निराश्रित ।
मुहावा—मुरव्वत, मदद ।
मुहाल—असम्भव ।
मुहिब्ब—मित्र, प्रेमी ।
मुहिम—युद्ध ।
मुहैया—मौजूद ।
मू—वाल, रोम ।
मू-ब-मू—वाल-वाल, ज्यो-का-त्यो ।
मूजिद—आविष्कारक ।
मूजिब—कारण ।
मूज़ी—पीडक, दुष्ट ।
मूनिस—मित्र, सहायक ।
मूसीक़ी—सगीत-शास्त्र ।
मेअराज—सीढी, श्रेणी, ऊँचा स्थान ।
मेजवान—आतिथ्य करनेवाला ।
मेहमान—अतिथि ।
मेह्र—(मेहर) दया, मेहरवानी ।

मै—मदिरा।
मै-कदा—मदिरालय।
मै-कशी—मदिरा-पान।
मै-खाना—मधुशाला।
मै-ख्वार—मद्यप।
मै-ख्वारी—पद्य-पान।
मै-नोशी—मद्य-पान।
मै-परस्त—मद्यप।
मै-फरोश—मद्य वेचनेवाला।
मैयत—मृतशरीर, शव।
मोजजा—करामात।
मोतक़िद—विश्वासी, श्रद्धालु।
मोमिन—धर्मनिष्ठ मुसलमान।
मोहतमिम—प्रवन्धकर्त्ता।
मोहमिल—निरर्थक, वे-अर्थ।
मोहलिक—घातक।
मोहसिन—उपकारी।
मौकूफ—वरखास्त, रोका हुआ।
मौज—पानीकी लहर, जोश।
मौजूँ—ठीक, उचित।
मौहूम—कल्पित।

य

यक—एक।
यकता—अनुपम।
यक-न-शुद दो-शुद—एक न हो दो हो, एक तो था ही, एक और भी हो गया।
यक-व-यक—एक वारगी, सहसा।
यक्का—वेजोड-अनुपम।
यगाना—वेमिसाल।
यजदाँ—ईश्वरका नाम।
यजीद—एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो खलीफा बनना चाहता था और जिसने करवलामे हज़रत इमाम हुसेनकी हत्या कराई थी।
यज्द—ईरानका एक नगर, ईश्वर।
यतीम—अनाथ।
यम—दरिया।
याद-आवरी—याद-आना।
यारा—सामर्थ्य।
यावरी—सहायता।
यास—निराशा।
यूसुफ—हज़रत याकूवके पुत्र, जो परम सुन्दर थे और जो भाइयोकी वदौलत मिस्रके वाज़ारमे वेचे गये थे। इन्हीपर मिश्रकी मलका 'जुलेखा' आसक्त हो गई थी।
यौम—दिवस।

र

रगा-रग—रग-विरग।
रज—दु ख, शोक।
रंजिश—मन-मुटाव।
रजीदा—दु खित।
रअना—दो रुखा, वनाव-शृगार करके रहनेवाला।
रअनाई—सुन्दरता।
रऊनत—अभिमान।
रकअत—वक्रता।
रकावत—प्रतिद्वन्द्विता।
रकीक—तुच्छ-दुर्वल।
रकीक—कोमल-दयालु।
रकीव—प्रेमिकाका दूसरा प्रेमी।

रक्कास–नर्तक।
रक़्स–नृत्य।
रख़ना–सूराख, छिद्रान्वेषण।
रगवत–अनुराग, चाह।
रज़–अगूरका वृक्ष।
रजअत पसन्द–उन्नतिका बाधक। स्थिति-पालक।
रज़ा–इच्छा, स्वीकृति।
रज़ील–कमीना।
रज़्ज़ाक़–रिज्क देनेलावा, ईश्वर।
रज़्म–युद्ध।
रज़्मिया–युद्ध सम्बन्धी।
रदीफ–गज़ल आदिमें वह शब्द, जो काफियेके बाद बार-बार आता है।
रफअरफा–निवृत्त-शान्त।
रफाकत–मेल-जोल, निष्ठा।
रफीक–मददगार, साथी।
रफ़्–फटे हुए कपडेके छेदमे तागे भरकर उसे बराबर करना।
रब–पालन-पोषण करनेवाला ईश्वर।
रबाब–सारगीकी तरहका एक बाजा।
रब्त–अभ्यास, सम्बन्ध।
रवाँ–जारी।
रवा–वाजिब।
रविश–चाल-ढाल।
रवैया–तौर-तरीका।
रशीद–शिक्षित, सभ्य।
रश्क–ईर्ष्या।
रश्के-परी–जिसका रूप देखकर परी भी ईर्ष्या करे।
रसा (रसाँ)–पहुँचानेवाला।
रस्म–रिवाज, लाग।
रह–राहका सक्षिप्त रूप।
रहनुमा–मार्ग-दर्शक।
रहबर–पथ-प्रदर्शक।
रहम–दया।
रहाइश–रहनेका स्थान।
रहीम–दयालू।
राकिम–लेखक।
रागिब–प्रवृत्ति रखनेवाला।
राज़–रहस्य, भेद।
राज़दार–भेदी, साथी।
रान–जाँघ।
राम–सेवक, आज्ञाकारी।
रायगाँ–व्यर्थ।
रायज–प्रचलित।
राशिद–धामिक, सच्चाई पानेवाला।
रासिख़–दृढ।
रास्त–उचित।
रास्त-गो–उचित बात कहनेवाला।
राह-गुज़र–मार्ग।
राह-ज़न–लुटेरा।
राहत–सुख-चैन।
रिज़वाँ–स्वर्गका दरबान।
रिज़ाला–पाजी, तुच्छ।
रिन्द–शराबी, स्वच्छन्द, धार्मिक बन्धनोको न माननेवाला।
रिया–धोखा-कपट।
रियाकार–धोखा देनेवाला।
रियाज़–वाटिकाएँ, अभ्यास।
रिहलत–कूच, मौत।

रीश—दाढी।
रुख़—मुंह, चेष्टा।
रुख़सार—कपोल
रुतबा—ओहदा।
रुबाई—चार चरणोका पद्य
रुसवा—बदनाम।
रुस्तम—फारसका एक पहलवान।
रू—मुख, कारण।
रू-दाद—वृतान्त, दशा।
रू-पोश—छिपा हुआ।
रू-वरू—सम्मुख।
रू-बाह—लोमडी।
रू-बाह-बाज़ी—धूर्त्तता।
रू-सियाह—काले मुँहवाला, अपराधी।
रू-शनास—परिचित।
रूह—आत्मा।
रूह-अफज़ा—आत्माको प्रसन्न करनेवाला।
रेख़्ता—गिरा या टपका हुआ, उर्दू-भाषाका पहला नाम।
रेख़्ती—ज़नानी कविता।
रेग—रेत।
रेज़—सूक्ष्म, खड।
रोज़—दिन।
रोज़-अफज़ं—नित्य वढनेवाला।
रोज़े-जज़ा—कयामतका दिन।
रोज़े-रोशन—प्रात काल, दिन।
रोब—वडप्पन।
रोशन—प्रकाशित।
रोशन-ज़मीर—समझदार।
रौ—चलनेवाला, जैसे पेश रौ= आगे चलनेवाला, लहर।
रौज़न—झरोखा, सूराख़।
रौज़ा—वाटिका, वडे लोगोकी कब्र जिसके चारो ओर पक्की दीवार हो।
रौनक-अफरोज़—रौनक या शोभा वढानेवाला।

ल

लंग—लँगडा।
लकब—उपनाम, उपाधि।
लकलक़ा—सारसकी वोली, प्रभाव।
लका—चेहरा, आकृति, माहेलका= चन्द्रमाके समान मुखवाली।
लक़्क-दक़्क—वजर भूमि, उजाड।
लख़्त—टुकडा, जैसे—लख़्ते-जिगर—जिगरका टुकडा।
लग़ज़िश—हाथ-पाँवका काँपना, भूल, लडखडाहट।
लग़ायत—सहित, पर्यन्त, वहाँतक।
लग़ो—व्यर्थकी वात।
लजाजत—मिन्नत, खुशामद।
लज़ीज़—स्वादिष्ट।
लज़्ज़त—स्वाद, आनन्द।
लताफत—(लतीफका भाव) कोमलता, वढियापन।
लतीफ—मजेदार, अच्छा, पाक।
लतीफा—चुटकला।
लन्तरानी—शेख़ी, डींग।
लफगा—दुश्चरित्र, लुच्चा।
लफ्ज़—शब्द।

लफ्फाज–बढ-बढकर बाते करने-वाला।
लफ्फाजी–डीग हाँकना।
लब–ओष्ठ, थूक, किनारा।
लबरेज–लबालब।
लब-ओ-लहजा–बोलनेका ढग।
लबादा–एक प्रकारका वस्त्र।
लमहा–क्षण, पल।
लरजना–कॉपना।
लवाजिम–साथमे रहनेवाली आवश्यक सामग्री।
लवाहक़–भाई-बन्द। रिश्तेदार, नौकर।
लश्कर–सेना, फौज।
लस्सान–अच्छा वक्ता।
लहजा–बोलनेमे स्वरोका उतार-चढाव।
लहज़ा–क्षण, पल।
लहद–कब्र।
ला–एक अव्यय जो शब्दोके प्रारभमे लगकर निषेध या अभाव सूचित करता है, जैसे—लाचार, ला-जवाब, लाइलाज, लाइल्म, ला-ज़वाल।
लाख़–स्थान, जगह, जैसे सग-लाख़।
लाग़र–दुबला-पतला।
लाजिम–आवश्यक।
लानत–धिक्कार।
लाफ–शेखी बघारना।
लाल–रत्न।
लाल-फाम–रक्तवर्णका।
लाला-रुख़–एक फूल, बहुत सुन्दर।
ला-सानी–अनुपम।
लाहक–निर्भर।
ला-हौल–लाहौल वला कूवत इल्ला बिल्लाहका सक्षिप्त रूप, जिसका अर्थ है—ईश्वरके सिवा और कोई शक्ति नही है। इसका प्रयोग घृणा-सूचक बातोमे किया जाता है।
लिबास–वेष, वस्त्र।
लुकनत–हकलापन।
लुग़त–शब्द-कोश।
लुत्फ–मज़ा, आनन्द।
लुर–मूर्ख, मक्कार।

व

व-इल्ला–नही तो, वरना।
वईद–बुराभला कहना, धमकी।
वकअत–शक्ति, साख।
वक़ार–वैभव, शान-शौकत।
वकाहत–निर्लज्जता, बेहयाई।
वकूअ– घटना स्थल, स्थिति।
वकूआ–घटित होना।
वक़ूफ–अक्ल, शऊर, जैसे—बेव-कूफ-निर्बुद्धि, मूर्ख।
वक्त–समय।
वक्फा–ठहराव, स्थिरता।
वगर-ना–नही तो।
वजअ–सज-धज, प्रणाली।
वजअदार–तरहदार, सिद्धान्तोका पालन करनेवाला।
वजाहत–स्पष्टता, सुन्दरता।
वज्द–तन्मयता, बेखुदी।
वतीर–रग-ढग।

वन्द–एक प्रत्यय जो शब्दोके अन्तमे लगकर—'वाला' या 'स्वामी' आदिका अर्थ देता है।
वफा–पूरा करना, भलाई, मुरौवत, सुशीलता।
वफात–मृत्यु।
वफादार–वचन या कर्तव्यका पालन करनेवाला।
वफा-परस्त–वफादार।
वफूर–अधिकता।
ववा–फैलनेवाला रोग।
ववाल–वोझ, भार।
वर–एक प्रत्यय जो शब्दोके अन्तमे लगकर वाला अर्थ देता है। जैसे—हुनरवर, ताजवर, ताकत-वर, नाम वर।
वरक़–पत्र-पृष्ठ।
वरग़लाना–वहकाना, उकसाना।
वरना–नही तो।
वलवला–आवेश, उमग।
वली–सरक्षक, साधु।
वले–लेकिन, मगर।
वल्द–वेटा।
वल्लाह–ईश्वरकी सौगन्ध।
वल्लाह-आलम–ईश्वर जाने मै नही जानता।
वश–एक प्रत्यय जो शब्दोके अन्तमे लगकर समान या तुल्यका अर्थ देता है। जैसे—परीवश-परीके समान, माहेवश-चन्द्रमाके समान।
वसीला–आश्रय, ज़रिया।
वस्फ–विशेषता, ख़ूवी।
वस्ल–मिलन, सयोग।
वहदत–एकत्व।
वहशत–पागलपन, भीषणता।
वा–खुला, या फैला हुआ।
वाइज़–धर्मोपदेशक।
वाज़–उपदेश, शिक्षा।
वादा–इकरार, प्रतिज्ञा।
वा-मांदगी–शिथिलता।
वा-मांदा–वाकी वचा हुआ, शिथिल।
वामिक–मित्र, आशिक।
वाय–दु ख, चिन्ता और कष्ट आदि-का सूचक, अव्यय जैसे—वाय किस्मत=हायरे भाग्य।
वार–समान, तुल्य, जैसे मजनूंना-वार=मजनूंकी तरह, दीवाना-वार=पागलोके समान, रखने-वाला, जैसे—उम्मेदवार, एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमे लगकर 'के अनुसार'का अर्थ देता है, जैसे माहवार।
वा-रफ्तगी–तल्लीनता, भटकना, आपेसे वाहर होनेकी अवस्था।
वारिद–मेहमान, आनेवाला।
वावैला–शोर-गुल, विलाप।
वाहिद–एक, अकेला।
विसाल–मिलाप सयोग।
वीराना–उजाड, जगल।

श

शआर–आदत, तौर-तरीका जैसे—वफ शआर—वफाकी आदत वाला।

शक-शका ।
शकर–एक प्रकारका प्रसिद्ध कद ।
शकर-रजी–मन-मुटाव ।
शकर-लब–मिष्टभाषी ।
शकील–अच्छी शक्लवाला ।
शक्क–बीचमे फटा हुआ ।
शक्कर–कच्ची चीनी ।
शक्की–वहमी ।
शगल–काम-धन्धा, मनोविनोद ।
शगाल–गीदड ।
शगुफ्तगी–प्रफुल्लता ।
शगुफ्ता–प्रफुल्ल, विकसित ।
शगूफा–कली, विलक्षण घटना ।
शजर–वृक्ष ।
शदीद–दृढ, कठिन ।
शनाख़्त–पहचान ।
शनास–पहचाननेवाला, जैसे मर्दुम-शनास—मनुष्योको पहचानने-वाला ।
शफक़–प्रात काल और सन्ध्याके समय आकाशकी लाली ।
शफक़त–कृपा, दया ।
शफा–आरोग्य ।
शफी–बीचमे पडकर अपराध क्षमा करानेवाला ।
शफीक–दयालु ।
शफ्फाफ–स्वच्छ ।
शब–रात्रि ।
शब आहग–रातको आवाज़ करने वाला, बुलबुल ।
शब-ख़्वाबी–शयनवस्त्र ।
शबगीर–पिछली रातको इबादत करनेवाला, प्रभात ।
शब-गूं–रातकी तरह काला ।
शबनम–ओस ।
शबनमी–मसहरी ।
शब-बेदार–रातभर जागनेवाला ।
शबाब–युवावस्था, आरम्भ ।
शबाहत–आकृति ।
शबिस्तॉ–शयन-कक्ष ।
शबीह–तसवीर ।
शबे-ज़फाफ–सुहागरात ।
शबेतारीक–अँधेरी रात ।
शबे-माह–चाँदनीरात ।
शबे-माहताब–चाँदनीरात ।
शब्बीर–भला, नेक ।
शमशाद–एक प्रकारका वृक्ष, जिससे प्रेयसीके कदकी उपमा दी जाती है ।
शमा–मोमबत्ती ।
शमअ़–मोमबत्ती ।
शमादान–जिसपर मोमबत्ती रखी हो ।
शमा-रु–शमाकी तरह प्रकाशमान ।
शमीम–सुगन्ध ।
शम्मा–तनिक, हलकी सुगन्ध ।
शम्स–सूर्य ।
शर—शरारत ।
शरअ–कुरानमें दी हुई आज्ञा ।
शरफ–बडप्पन, महत्व ।
शरम–लज्जा ।
शरमगाह–योनि ।
शरमसार–लज्जित ।
शरमीला–लज्जालु ।

शरर–आगकी चिनगारी।
शरह्–टीका, व्यवस्था, भाव।
शराफत–भलमनसाहत।
शराबे-तहूर–बहिश्तकी शराब।
शराबोर–लथ-पथ।
शरार–अग्नि-कण।
शरीर–नटखट, पाजी।
शर्क़–सूर्य्योदय, पूरब।
शश-दर–हक्का-बक्का।
शहबाज–बडा बाज़ पक्षी।
शहरे-खमोशाँ–कब्रिस्तान।
शह्वत–काम-वासना।
शह्वत-परस्त–कामुक।
शहादत–देश या धर्मपर प्राण न्योछावर करना, गवाही, प्रमाण।
शहीद–देश-धर्मपर प्राण देनेवाला।
शाइस्तगी–सभ्यता।
शाइस्ता–सभ्य।
शाकिर–उपकार माननेवाला।
शाकी–शिकायत करनेवाला।
शाख–डाल, टहनी।
शाखे-गजाल–हिरनका सींग, कमान, दूजका चाँद।
'शाज–एकाकी, अनुपम, कभी-कभी।
शाज-ओ-नादिर–कभी-कभी।
शाद–प्रसन्न।
शाद-बाश–प्रसन्न रहो।
शादमाँ–प्रसन्न।
शादाब–हरा-भरा।
शादियाना–मगल-वाद्य।
शान–तडक-भडक, ठसक।
शानदार–शानवाला।
शान-ओ-शौकत–सजावट।
शाना–कघी, कघा, कधा।
शायक–शौकीन, प्रेमी।
शायाँ–उपयुक्त।
शाया–प्रकाशित।
शाहबाज–बडा बाज़ पक्षी।
शाहिद–साक्षी।
शाहिदबाज–सौन्दर्यप्रेमी।
शिकन–सिलवट, तोडनेवाला, जैसे—अहद-शिकन=प्रतिज्ञा तोडनेवाला, बुत-शिकन=मूर्ति तोडनेवाला।
शिकम–पेट।
शिकम-परवर–पेटू।
शिकरा–एक पक्षी।
शिकवा–शिकायत।
शिकवा-गुजार–शिकायत करनेवाला।
शिकस्त–पराजय।
शिकस्तगी–टूटनेकी क्रियाका भाव।
शिकस्ता–दुर्दशा-ग्रस्त, घसीट लिखावट।
शिकेब–धैर्य।
शिकेबा–सहनशीलता।
शिकोह्–महत्व, बडप्पन।
शिगाफ–चीरा, दरार।
शिताब–जल्दी।
शिद्दत–तेजी-सख्ती, बल-प्रयोग।
शिनास–पहचाननेवाला जैसे—हक-शनास।
शिनासाई–परिचय।
शिरकत–साभा, सहयोग।

शीर—दूध।
शीरीं—मधुर, प्रिय।
शीशा—दर्पण, काँच।
शुआअ—सूर्यकी किरण।
शुक्र—कृतज्ञता।
शुक्रगुज़ार—कृतज्ञ।
शुजाअ—बहादुर।
शुजाअत—वीरता।
शुतुर—ऊँट।
शुदनी—होनहार।
शुफ़आ—पड़ोस, पड़ोसका हक़।
शुबहा—धोखा।
शुस्ता—स्वच्छ, शुद्ध।
शूम—मनहूस।
शेख़—इस्लाम-धर्मका आचार्य।
शेफ़्ता—आसक्त।
शेवन—रोना, चिल्लाना।
शेवा—प्रथा, दस्तूर।
शै—वस्तु, भूत-प्रेत।
शैदा—आशिक़।
शैदाई—प्रेमी, दीवाना।
शोख़—चंचल, नटखट।
शोख़-चश्म—निर्लज्ज।
शोख़ी—ढिठाई।
शोबदा—जादू, धोखा।
शोबदाबाज़—जादूगर।
शोबदागर—जादूगर।
शोर—नमक, कोलाहल।
शोर-बख़्त—अभागा।
शोरा-पुश्त—उद्दंड।
शोरिश—हुल्लड, फसाद।
शोला—आगकी लपट।
शोला-ख़ू—उग्रस्वभावी।
शोला-रू—बहुत ही सुन्दर।
शोहदा—गुंडा, लम्पट।
शौकत—ताकत, रोब, शान।
शौहर—पति।

स

संग—पत्थर, भार।
संग-जाँ—निर्दय, जिसकी जान कठिनतासे निकले।
संग-दिल—कठोर-हृदय।
संगलाख़—कठोर।
संग-सार—पत्थर मारकर प्राण लेना।
संगे-असवद—काबेमें रखा हुआ वह काला पत्थर, जिसे हज-यात्री चूमते हैं।
संगे-आस्ताँ—दहलीज़का पत्थर।
संगे-मज़ार—क़ब्रका वह पत्थर जिसपर मृतकका नाम आदि लिखा होता है।
संज—समझने या जाननेवाला, जैसे—नग़मा-संज=गवैया, सुख़न-संज=समझदार या कवि।
संजीदा—गम्भीर।
सआदतमन्द—भाग्यवान, आज्ञाकारी।
सई—परिश्रम, दौड़-धूप।
सईद—मुबारक, शुभ।
सक़ील—भारी, गरीष्ठ।
सकून—मनकी शान्ति, ठहराव।
सख़ावत—दान-शीलता।
सख़ी—दानी।

सख़्तजान—जिसके प्राण बहुत कठिनतासे निकले (सज्ञा-सख्तजानी)।
सग—कुत्ता।
सदका—निछावर, खैरात।
सदफ़—सीप।
सदमा—धक्का, चोट।
सदहा—सैकडो।
सदा—प्रतिध्वनि, आवाज़।
सदाकत—सचाई।
सदी—शताब्दी।
सनअत—कारीगरी।
सनद—बडा तकिया, प्रमाण-पत्र।
सनम—मूर्ति, माशूक।
सनमकदा—मन्दिर, प्रेमिकाका निवास-स्थान।
सनमख़ाना—मन्दिर, प्रेयसीका वास-स्थान।
सनोवर—चीडका वृक्ष।
सन्दल—चन्दन।
सपेद—सफेद।
सफ—पवित, कतार।
सफा—साफ, स्वच्छ।
सफी—शुद्ध, पवित्र।
सफीना—किश्ती, नाव।
सफे-मातम—वह फर्श, जिसपर मातम करनेवाले बैठे।
सफ्फाक—खूनी, निर्दय।
सबक—पाठ, उपदेश।
सबा—प्रात कालीन पूर्वी हवा।
सबाहत—गोराई, सौन्दर्य।
सबील—प्याऊ।
सबीह—सुन्दर।
सबू—घडा।
सबूही—सवेरेके समय शराव पीना।
सब्र—सन्तोष।
सम—विष।
समअ—कान।
समअ-ख़राशी—दिमाग चाटना।
समद—ईश्वर।
समर—फल, वदला।
समा—आकाश।
समअ—सुनना।
समाअत—सुनवाई।
समाजत—लज्जा, विनय, लल्लो-चप्पो।
सम्बुल—एक सुगन्धित वनस्पति, इसकी उपमा वालो या लटोंसे दी जाती है।
सर—सिर।
सर-अजाम—कार्यकी समाप्ति, सामग्री, नतीजा।
सर-आमद—समाप्त करनेवाला, पूर्ण।
सर-कश—विद्रोही, उद्दड।
सरका—चोरी।
सर-कोबी—सिर कुचलना।
सर-खुश—सुखी।
सर-ख़ैल—प्रधान, नेता।
सर-गरदाँ—घबराया हुआ।
सर-गुज़श्त—सरपर बीती हुई बात, जीवन-चरित्र।
सर-गोशी—चुगली।
सर-ज़द—प्रकट, गृन।
सर-ता-पा—सिरसे पैरतक।

सर-नविश्त–भाग्य-लेख।
सर-निगूं–सिर झुकाये हुए, लज्जित।
सर-ब-सर–सरासर।
सर-बस्ता–छिपा हुआ, बँधा हुआ।
सरमद–सदैव, हमेशा।
सर-मस्त–मतवाला।
सरमा–शीतकाल।
सरमाया–सम्पत्ति ।
सरश्क–आंसू, बूंद।
सर-शार–मदमत्त, लबालब।
सरापा–सिरसे पैर तक।
सराब–मृगतृष्णा, छल।
सरीहन्–स्पष्ट रूपसे।
सरेदस्त–इस समय, तुरन्त।
सरे-नौ–नये सिरेसे।
सरेशाम–सन्ध्या होते ही।
सरो–एक सीधा पेड जो बागीचोंकी शोभाके लिए लगाया जाता है।
सरोकद–जिसका कद सरो वृक्षके समान हो (प्रेयसीके लिए प्रयुक्त)।
सरोकामत–जिसका कद सरो वृक्षके समान हो (प्रेयसीके लिए प्रयुक्त)।
सरोद–गीत, एक वाद्य।
सर्द–ठंडा, सुस्त।
सर्फ–व्यय।
सलफ–गुजरा हुआ।
सलासत–कोमलता, सुगमता।
सलासिल–बेडियाँ।
सलाहियत–समझदारी, अच्छापन।
सलीक़ा–शऊर, तमीज़।
सलीम–सहनशील, गम्भीर।
सलीस–सुगम, मुहावरेदार।
सलूक–व्यवहार।
सवानह उमरी–जीवनी।
सवाब–सत्यता, पुण्य।
सहबा–अंगूरी शराब।
सहर–प्रात काल।
सहर-खेज़–तडके उठनेवाला।
सहरा–जंगल, वन।
सहल–सरल।
सहाब–बादल
सहाबा–मित्र।
साइक़ा–बिजली।
साइत–पल, मुहूर्त।
साकित–गति रहित, मौन।
साक़ित–गिरा हुआ, निरर्थक।
साकिन–निवासी।
साकिन–वह दुश्चरित्र स्त्री जो भंग, हुक्का आदि पिलाकर जीविका उपार्जन करे।
साक़िब–प्रकाशमान।
साक़ी–शराब पिलानेवाला, प्रेयसीके लिए प्रयुक्त।
साख्त–बनावट।
साग़र–प्याला, मधु-पात्र।
साज़–उपकरण सामग्री। मेल-जोल।
साद–ठीक या स्वीकृत होनेका चिह्न।
सादा-लौह–सीधा-सादा।
सादिक़–सत्यनिष्ठ।
सानी–मुकाबिलेका।
साबिक–पहलेका।
साबिर–धैर्यवाला।

सायर—पूरा, बाकी, सैर करने-वाला।
सायल—माँगनेवाला, आकांक्षी।
साया—छाया।
सार—ऊँट, एक प्रत्यय जो शब्दोंके अन्तमें लगकर वाला, समान, पूर्ण और स्थान आदिका अर्थ देता है जैसे—शर्म-सार, खाक-सार, शाखसार, कोहसार।
सालगिरह—वर्ष-गाँठ।
सालिक—बटोही, नीतिपूर्वक आच-रण करनेवाला।
साहिर—जादूगर।
साहिल—किनारा।
सिजदा—दंडवत।
सितम—अनर्थ, जुल्म।
सितमज़दा—अत्याचार-पीडित।
सितम-ज़रीफ—हँसी-हँसीमें अत्या-चार करनेवाला।
सितमगर—अत्याचारी।
सितमगार—अन्यायी।
सितम-शआर—बराबर सितम करनेवाला।
सितम-रसीदा—अत्याचार-पीडित।
सितारा—तारा, भाग्य।
सिद्क़—सत्यता।
सिद्दीक—परम सत्यनिष्ठ।
सिन—अवस्था, वयस।
सिन-रसीदा—वृद्ध।
सिपर—ढाल, आड।
सिपह—सेना।
सिपहर—आकाश, गोला।
सिपास—धन्यवाद।
सिफत—विशेषता।
सिफला—कमीना, पाजी।
सियह—काला, अशुभ।
सियाहकार—दुष्कर्म करनेवाला।
सियाह-बख़्त—अभागा।
सिराज—सूर्य, दीपक।
सिरात—एक पुल जिसे पार करनेपर वहिश्तमें पहुँचना होता है।
सिला—इनाम, असर।
सीख़—तीली, पतली छड।
सीना-कावी—बहुत कठोर परिश्रम।
सीना-कोबी—छाती पीटकर मातम करना।
सीनाज़ोर—अत्याचारी।
सीना-सिपर—मुकाबलेमें।
सीम—चाँदी, दौलत।
सीम-तन—गौरवर्ण।
प्रेयसीके लिए प्रयुक्त।
सीमाब—पारा।
सुकून—मनकी शान्ति।
सुख़न—कथन, कविता, बात-चीत।
सुरमगीं—जिसमें सुरमा लगा हो।
सुराग़—तलाश, पता।
सुराही—जल रखनेका पात्र, झज्जर।
सुरूर—हल्का नशा, आनन्द।
सू—फायदा दिशा, तरह।
सूफियाना—सूफियों-का-सा।
सूफी—उदार विचारोंके मुसल्-मानोंका सम्प्रदाय।
सूर—नरसिंहा बाजा।
सेहर—जादू।

सेहर-वयाँ—जिसके वयानमें जादूका-सा असर हो।
सैद—शिकार, आखेट।
सैयद—नेता, सरदार।
सैयाद—अहेरी।
सैल—प्रवाह।
सैलाब—जलकी वाढ।
सोख़्त—जलन, टपकन।
सोख़्तगी—कष्ट, जलन।
सोख़्ता—जला हुआ, वहुत दुखी।
सोग—शोक, रंज।
सोज़—जलन, तपिश।
सोराब—हरा-भरा।
सौदा—उन्माद, स्याह, लेन-देन।
सौदाई—पागल, वावला।

ह

हंगामा—भीड-भाड।
.हक—खुरचना, दूर करना।
.हक़—स्वत्व, कर्तव्य, न्याय।
हकारत—अप्रतिष्ठा।
हकीकत—सचाई।
हकीर—हीन, घृणित।
.हज—कावेकी यात्रा।
.हज़—सौभाग्य, मज़ा।
.हजर—पत्थर।
.हज़र—परहेज़।
हज़ल—भद्दा परिहास।
.हज़ीं—दुखी, चिन्तित।
.हजो—निन्दा, वुराई।
.हज़्म—मोटाई।
हज़्म—पचा हुआ।
हतक—अपमान।
हत्ता—यहाँ तक कि।
.हत्तुल-इमकान—जहाँ तक हो सके।
हदफ—निशाना, चोट।
हनोज़—अभी तक।
.हवीव—मित्र, माशक।
हम—भी, आपसमें। एक प्रत्यय जो शब्दोके साथ लगकर साथी या शरीकका अर्थ देता है। जैसे—हम-दर्द=दर्द या विपत्तिमें साथ देनेवाला।
हम-असर—समकालीन।
हम-आगोश—गलेसे लगा हुआ।
हम-आवुर्द—प्रतिपक्षी।
हम-उम्र—समवयस्क।
हम-कनार—हम-आगोश, मिलना।
हम-कदम—साथी।
हम-कलाम—साथमें वातें करनेवाला।
हम-कासा—हम-प्याला, साथी।
हम-ज़ुल्फ—सालीका पति।
हम-दम—प्राण रहते तक साथ देने-वाला।
हम-दर्द—सहानुभूति रखनेवाला।
हम-दस्त—साथी।
हम-दिगर—परस्पर।
हम-दीवार—पड़ोसी।
हम-दोश—कन्धे-से-कन्धा मिलाकर काम करनेवाला, सहयोगी।
हम-नफ्स—साथी।
हम-नस्ल—एक ही कुटुम्वका।
हम-नाम—समान नामवाला।
हम-पेशा—सहव्यवसायी।

हम-बिस्तर—एक ही बिस्तरपर साथमे सोनेवाला, सम्भोग करनेवाला।
हम-मकतब—सहपाठी।
हम-राज़—घनिष्ट मित्र।
हम-राह—सह-यात्री।
.हमला—आक्रमण।
हमशीरा—वहन।
हम-साया—पडौसी।
हम-सिन—समवयस्क।
हमा-तन—सिरसे पैर तक।
हमा-शुमा—हमारे तुम्हारे जैसे सामान्य लोग।
.हमीदा—प्रशसनीय।
.हमीयत—प्रतिष्ठा लज्जा।
.हम्माम—स्नानागार।
.हया—लज्जा।
.हयात—जीवन।
.हया-दार—शर्मीला।
हर—प्रत्येक।
हरकारा—डाकिया।
हर-गाह—जब कि, चूंकि।
हर-गिज़—कदापि।
हरचन्द—यद्यपि।
हरज़ा—निरर्थक, वाहियात।
हरजाई—दुश्चरित्र (जो कभी किसीके पास और कभी किसीके यहाँ रहे)।
हर-दिल-अज़ीज़—सर्वप्रिय।
.हरफ (हर्फ़)—दोष, कलक, अक्षर।
.हरम—कावेकी चारदीवारी, अन्त-पुर, रखैली स्त्री।
.हरम-ज़दगी—पाजीपन, शरारत।
हरम-सरा—अन्त पुर।
.हराम—निषिद्ध, अनुचित।
.हरीफ़—समव्यवसायी, प्रतिद्वन्द्वी।
.हरीस—शत्रु, लालची, ईर्ष्यालु।
हर्ज—बखेडा, उपद्रव।
हर्फ़-गीर—दोष-दर्शी।
.हर्फ़-ब हर्फ़—अक्षरश।
.हर्राफ़—धूर्त्त, चालाक।
.हल—निराकरण।
.हलक़—कठ।
.हलक़ा—परिधि, दल।
हलक़ान—थका हुआ, हैरान।
.हलक़ा-ब-गोश—दास।
हलफ़—शपथ।
हलाक—मत, शिथिल।
.हलाल—जो मुसलमानी धर्मपुस्तकके अनुकूल हो, पवित्र।
हलावत—मधुरता, चैन।
हलाहल—विष।
हलीम—सहनशील।
हवस—कामवासना।
हवस-नाक—लालची, कामुक।
.हवाला—उदाहरण।
हवास—होश, ज्ञान।
हवास-बाख़्ता—हक्का-बक्का।
.हव्वा—हज़रत आदमकी पत्नीका नाम, जो मनुष्य जातिकी माता मानी जाती है। हौआ।
हशमत—शान-शौकत, नौकर-चाकर।
हश्त—आठ।
.हश्र—कयामत, जब कि सब मुर्दे उठकर खडे होगे और उनके

शुभ तथा अशुभ कामोका हिसाव होगा, परिणाम।
.हश्र वरपा करना—कयामत ढाना।
हश्शास—वहुत ही प्रसन्न और हँसता हुआ।
हश्शास-बश्शास—परम प्रसन्न।
.हसद—ईर्ष्या, डाह।
.हसन—भला, उत्तम।
हसव—कुटुम्व, नस्ल।
.हसव-नसव—नाना-दादाका वंश।
.हसरत—किसी वस्तुके न मिलनेपर होनेवाला दुःख, कामना।
हसीन—सुन्दर।
हस्ती—जीवन, अस्तित्व।
.हस्व—अनुसार, जैसे।
हस्वख़्वाह—इच्छानुसार।
.हस्वे-इत्तिफ़ाक़—संयोगसे।
.हस्वे-तौफ़ीक़—सामर्थ्यके अनुसार।
.हस्वे-हाल—समयके अनुसार।
.हाजत—इच्छा। हाजत रफ़ा करना=इच्छा पूरी करना। मल त्याग करना।
.हाजतमन्द—ख़्वाहिशमन्द।
हाजी—निन्दक, नक्काल, भाँड।
.हाजी—हज करके लौटा हुआ। हज करनेवाला।
.हातिम—एक प्रसिद्ध दानी।
.हादसा—दुर्घटना।
हादी—मार्ग-दर्शक।
.हाफ़िज़—जिसे कुरान कंठस्थ हो, रक्षक।
.हालते-नज़ा—मरनेके समय दम तोडनेकी अवस्था।
हाला—कुंडल।
.हासिद—ईर्ष्यालु।
हिकायत—कहानी।
हिक़ारत—घृणा।
हिजराँ—वियोग, जुदाई।
हिजराँ-नसीब—जिसके भाग्यमे वियोग हो।
हिजाव—परदा, लज्जा।
हिज्र—विछोह, जुदाई।
हिदायत—मार्ग-दर्शन।
हिना—मेंहदी।
हिफ़ाज़त—रक्षा।
हिरास—निराशा।
हिरासत—कैद।
हिरासाँ—निराश, भयभीत।
हिर्स—तृष्णा, लोभ।
हिलाल—दूजका चन्द्रमा, इसकी उपमा माशूककी भवो और नाख़ूनोंसे दी जाती है।
हिस—गति।
.हीला—वहाना।
हीलागर—वहाना करनेवाला।
हीलाबाज़—वहाना करनेवाला।
हीलासाज़—वहाना करनेवाला।
हुबाब—पानीका वुलबुला।
हुब्व—प्रेम।
.हुब्व-उल-वतन—देश-प्रेम।
हुमा—एक कल्पित पक्षी, जिसके सरपर बैठ जाय, वह वादशाह वन जाता है, ऐसी धारणा है।
.हुरमत—प्रतिष्ठित, आवरू।

हुवैदा–स्पष्ट ।
हुस्न–सौन्दर्य ।
हूर–सुन्दरी, देवांगना ।
हेच–तुच्छ, हीन ।
हैजान–आवेश ।
हैफ–अफसोस ।
हैबत–आतंक ।
हैबतजदा–आतंकित ।
हैबत-नाक–डरावना ।
हैरत–आश्चर्य ।
हैवान–पशु, मूर्ख ।
हैवान-नातिक़–बोलनेवाला पशु ।
अर्थात् मनुष्य ।
हैवान-मुतलक–निरामूर्ख ।
हैवानियत–जानवरपन ।
हैवानी–पशुओ जैसा ।
हौआ–देखो 'हव्वा' ।
हौल–घबराहट ।
हौलजदा–डरा हुआ ।
हौल-दिल–कलेजेकी धडकन ।
हौलदिला–कायर ।
हौल-नाक–भीषण डरावना ।

पारिभाषिक शब्द

आदम—मुसलमानी धर्मके प्रथम पैगम्बर, जो मनुष्य-मात्रके आदि पुरुष माने जाते हैं। खुदाने आदमको माता-पिताके सयोग-बिना मिट्टी, पानी और आगके सम्मिश्रणसे एक पुतला बनाकर उसमें आत्मा डालकर पैदा किया था।

हव्वा—आदमकी पत्नी जो मनुष्यमात्रकी माता मानी जाती है। मुसलमानी धर्मके अनुसार खुदाने इनको आदमकी बाईं पसलीसे पैदा किया था। निर्विकार होनेके कारण ये दोनो जन्नतमें नग्न रहते थे और फल-फूल खाते थे। खुदाने गेहूँ खानेका इन्हे निषेध किया था, परन्तु ये शैतानके बहकावेमें आकर भूल कर बैठे। गेहूँ खाते ही इन्हे वासना सम्बन्धी ज्ञान हो गया, तब इन्होने तत्काल अपने गुप्त अग पत्तोसे ढक लिये। इन हरकतोंके कारण खुदाने इन्हें जन्नतसे निकालकर पृथ्वीपर डाल दिया। फिर इन दोनोंके सयोगसे मनुष्यकी सृष्टि हुई।

शैतान—मनुष्योको बहकाकर कुमार्ग-रत और ईश्वर-विमुख करता रहता है। यह पहले खुदाका बहुत बडा उपासक था, इसे खुदाने आगसे बनाया था। इसका नाम अजाज़ील था। सारे फरिश्तोको पढाया करता था, इसलिए इसे मुअल्लिमुल-मलकूतकी उपाधि प्राप्त थी। जब खुदाने आदमको बनाया तो, सब फरिश्तोको सजदा करनेका हुक्म दिया। अन्य फरिश्तोने तो हुक्मकी तामील की, मगर इसने यह कहकर इन्कार कर दिया कि—"जब मैं लाखो बरससे खुदाको सजदा करता आ रहा हूँ, तो एक मिट्टीसे बने मामूली पुतलेको मैं सजदा नही कर सकता।" खुदाने अपने आदेशकी अवहेलना करनेके कारण इसे शैतान कहकर जन्नतसे बाहर कर दिया। तबसे यह हज़रत प्रतिहिंसाकी भावनाको लिये सारे

संसारमे घूम-घूमकर मनुष्योको कुमार्ग-रत और ईश्वर-विमुख करते फिरते हैं।

ख़िज्र—एक प्रसिद्ध पैगम्बर, जो जल और स्थल-मार्गमे भूले-भटकोको राह बतलाते रहते हैं।

ईसा—ईसाई धर्मके प्रवर्त्तक माने जाते हैं। ये वडे दयालु और दीन-बन्धु थे। लोगोका विश्वास है कि यह रोगियोको स्वास्थ्य और मृतकोको जीवनदान करते थे। इनका उपनाम मसीह है। इनकी माताका नाम मरियम है।

मूसा—एक मशहूर पैगम्बर। जिनकी साधना और अभिलाषाके परिणामस्वरूप ख़ुदाने 'तूर' पर्वतपर अपना दिव्य रूप दिखाया, किन्तु वे उसे निहारनेकी सामर्थ्य न रख सके और बेहोश हो गये। साथ ही तूर पर्वत जलकर ख़ाक हो गया।

मन्सूर—ईरानमे एक मशहूर वली हुए हैं। उनका विश्वास था कि आत्मासे परमात्मा भिन्न नही है। साधनाओ एव तपश्चर्य्याओके परिणामस्वरूप यह आत्मा ही परमात्मा हो जाता है। उन्हे स्वय मे यह अनुभूति होने लगी थी। अत उन्होने 'अनलहक' (सोह—मैं ही परमात्मा हूँ) की सदा बुलन्द की। लेकिन मुसलमानोको उनका यह कार्य अधार्मिक मालूम दिया और उन्हे सूलीपर चढा दिया।

लैला-मजनूं—मजनूंका वास्तविक नाम कैस था। यह अरबके नज्द नामक प्रान्तका रहनेवाला और लैला नामक एक अरब युवतीपर आसक्त था। इसकी आसक्तिका यह हाल था, कि एक रोज कैसके पिता इसे लैलाके पिताके पास इस ख़यालसे ले गये कि इसकी हालतपर तरस खाकर शायद वह इससे लैलाका विवाह कर दे। क़ैस सजीला और रूपवान युवक था। लैलाका पिता स्वीकृति देना ही चाहता था कि सामने ही लैलाका कुत्ता वहाँ आ निकला। कैसको जब यह मालूम हुआ कि यह लैलाका कुत्ता है तो वह बेअख्तियार उससे लिपटकर प्यार करने लगा।

कैसके उस भावावेशको उन्माद समझकर लैलाके पिताने उसे घरसे निकाल दिया। लैलाके मिलनका जब कोई उपाय नही रहा, तब प्रेमोन्मत्त कैस जगलोमें निकल गया और वहाँ जीवन-पर्यन्त भटकता फिरा। उसने इतने कष्ट उठाये कि उसके प्रेमकी चर्चा समूचे अरबमे फैल गई। उसके प्रेमाकर्षणसे खिचकर लैला भी इसे खोजनेपर मजबूर हो गई। वह अपनी ऊँटनीपर सवार होकर कैसको जगल-जगल खोजती फिरी, परन्तु मिलन न हो सका। कैसका फूल-सा शरीर विरह-तापसे सूखकर काँटा हो गया, लेकिन वह अविराम गतिसे प्रेम-मार्गमें चलता ही रहा।

जुलेखा और यूसुफ—यूसुफ हज़रत याकूव पैगम्बरके पुत्र और मुसलमानोके एक पैगम्बर थे। मुसलमानी धर्मके अनुसार ससारका तीन चौथाई सौन्दर्य खुदाने इनको दिया था। इनके भाइयोने ईर्ष्या-वश इन्हे मिस्रके सौदागरके हाथ वेच डाला था। मिस्रके राज्यपालकी रूपवती मलका जुलेखा इनपर आसक्त हो गई थी। इन दोनोको अपने जीवनमें काफी कष्ट झेलने पडे थे। अन्तमें बहुत दिनोके बाद मिलन हुआ था।

शीरीं फरहाद—फरहाद एक चीनी शिल्पकार था, जो ईरानकी रूप-लावण्यवती शीरीपर आसक्त था। शीरी भी फरहादको हृदयसे चाहती थी। ईरानका बादशाह खुसरो भी शीरीको चाहता था। अत वह शीरीको बलात् अपने महलमें ले गया। खुसरो शीरीके तनपर तो कब्ज़ा कर सका, पर मनपर अधिकार न जमा सका। शीरीके मनमें तो फरहाद समाया हुआ था, वह कैसे औरको उसमें आने देती? अन्तमें खीझकर बादशाहने शीरीसे कहा कि—"यदि प्रेम-परीक्षामे फरहाद उत्तीर्ण निकले तो मैं तुझे उसके सुपुर्द कर सकता हूँ।" बादशाहकी अभिलाषानुसार परीक्षास्वरूप फरहादने पहाडोको काटकर महल तक नहर निकाल दी, परन्तु छली बादशाहने शीरी लौटानेके बजाय शीरीकी मृत्युकी झूठी खबर फरहादके पास पहुँचवा दी। खबर सुनते ही बेचारे फरहादने अपने हाथका तेशा पत्थरमें मारनेके बजाय अपने सरमें मार

लिया और खुदकी निकाली हुई नहरमें गिरकर दम दे दिया। शीरीको फरहादकी मृत्युकी खबर मिली तो उसने भी जान दे दी।

आसमान—शायरोकी परम्परानुसार प्रेमियोको सतानेवाला। नित नये जुल्मो-सितम ढानेवाला।

उर्दू-शायरीमें बार-बार प्रयुक्त होनेवाले—इश्क, आशिक, माशूक, हबीब, महबूब, रकीब, उदू, कासिद, दरबान, मैखाना, पीरे-मुगाँ, रिन्द, साकी, जाहिद, नासेह, शेख, बरहमन, गुलो-बुलबुल, सैयाद, गुलची, बागबाँ, कफस, आशियाना, आदि पारिभाषिक शब्दोकी व्याख्या विस्तारके साथ शेरो-शायरी पृ० ७७-१४१मे दी जा चुकी है। यहाँ पुन उसके देनेकी आवश्यकता नही समझी गई।
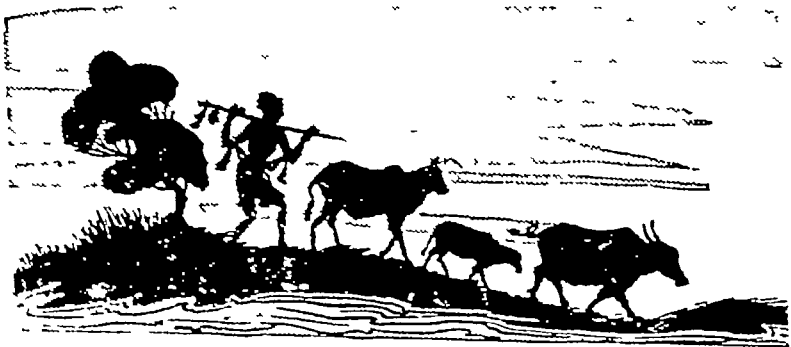
शेर-ओ-सुख़न

चौथा भाग

[वर्त्तमान युगीन १५१ शायर-शायराओंका चुना हुआ कलाम]

१९५४ ई० तककी गजलका इतिहास

प्राचीन और नवीन गजलगोई पर तुलनात्मक अध्ययन
हरजाई, बेवफा, ज़ालिम माशूकके एवज़
नेक और पाक हबीबका तसव्वुर, रोने-बिसूरनेकी
प्रथा बन्द, रंजोगमका मुसकानभरा स्वागत
निराशावादका अन्त

भाग्यसे अधिक पुरुषार्थपर विश्वास

भारत-विभाजन, स्वराज्य-प्राप्ति,
राष्ट्रपिताकी शहादत आदि
प्रेरणात्मक, लोकोपयोगी
सामयिक भावोका समावेश
मुशायरोंका रोचक वर्णन

मूल्य तीन रुपया